Sanskrit Journalism

1. संस्कृत पत्रकारिता के विविध आयाम एवं उसका परिवर्तित स्वरूप

डॉ सुप्रिया झा,
सहायक प्राध्यापिका, संस्कृत, एमिटी विश्व विद्यालय, हरियाणा

पत्रकारिता का संबंध सूचनाओं को संकलित और संपादित करके आम पाठकों तक पहुँचाने से है। लेकिन हर सूचना समाचार नहीं है। पत्रकार कुछ ही घटनाओं, समस्याओं और विचारों को समाचार के रूप में प्रस्तुत करते हैं। किसी घटना के समाचार बनने के लिए उसमें नवीनता, जनरुचि, निकटता, प्रभाव जैसे तत्वों का होना जरूरी है।

देश - विदेश की प्रायः सभी भाषाओं में पत्रिकारता की जाती है। किसी भी महत्वपूर्ण घटना को जन - जन तक पहुंचने में भाषा कभी भी बाधा के रूप में नहीं रहा है। भारत देश में पत्रिकारिता प्रायः सभी भाषाओँ में की जाती है, चाहे वो राष्ट्र भाषा हिंदी हो या अंग्रेजी अथवा भाषाओँ की जननी संस्कृत हो या प्रत्येक क्षेत्र की लोक भाषा, पत्रकार जन - जन तक समाचार के मर्म बिंदुओं को पहुँचाने में सर्वथा सफल होता है।

पत्रकारिता (journalism) आधुनिक सभ्यता का एक प्रमुख व्यवसाय है जिसमें समाचारों का एकत्रीकरण, लिखना, रिपोर्ट करना, सम्पादित करना और सम्यक प्रस्तुतीकरण आदि सम्मिलित हैं। आज के युग में पत्रकारिता के भी अनेक माध्यम हो गये हैं; जैसे - अखबार, पत्रिकायें, रेडियो, दूरदर्शन, वेब-पत्रकारिता आदि।भारत में पत्रकारिता का इतिहास यूरोपीय लोगों के भारत में प्रवेश के साथ ही प्रारम्भ होता है। सर्वप्रथम भारत में प्रिंटिग प्रेस लाने का श्रेय पुर्तग़ालियों को दिया जाता है।

प्रथम हिन्दी का पत्र " उदन्त - मार्तण्ड "सन १८२६ ई. में मुद्रित हुआ था, जिसके संपादक पं. जुगलकिशोर - शुकुल थे, एवं संस्कृत -पत्र सर्वप्रथम सन १८६६ में कशी से प्रकाशित हुआ, जिसका नाम रखा गया - "काशीविद्यासुधानिधिः " , संस्कृत - पत्रकारिता की इस प्रथम पत्रिका का दूसरा नाम था - "पण्डित - पत्रिका"

इन सूचनाओं के आधार पर हम यह कह सकतें है कि संस्कृत - पत्रकारिता का इतिहास भी लगभग १५० वर्ष प्राचीन है। समय परिवर्तन के साथ साथ संस्कृत पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अनेक परिवर्तन हुए और वर्तमान में संस्कृत पत्रकारिता भी संस्कृत के प्रेमियों के लिए एक आकर्षण का केंद्र बन गया है।

---

2. Future of Modern Sanskrit Journalism

Gavish Dwivedi

It is always challenging to draw the chronology of abstract (apratyakśa) topics. When did any particular tradition begin? How did it begin? These

questions are always interesting in the sense that they are open ended and always leave scope for new possibilities. Journalism is a modern field of Sanskrit. The fourth pillar of Loktantra which began with the legendary sage Nārada. According to sources, in the modern times, various forms of journalism have had their presence for almost one fifty years. Print media and electronic media have so far had a strong presence and spread journalism, but currently a new emerging trend is social media, through which a new form of journalism has emerged. In this article, there will be discussion about the emergence of Sanskrit journalism through print media, electronic media and social media. The article will extensively discuss various tit-bits of Sanskrit journalism such as: When was the first news read in All India Radio? When was the first news read in Doordarshan? At present, at which other places, the centers of Sanskrit journalism are functioning? Is teaching related to Sanskrit journalism?

This article will also document the experiences of Sanskrit journalists and through them try to sketch the presence and future scope of modern Sanskrit journalism. Thus, while discussing the history and present scenario of Sanskrit Journalism will also try to set the direction of future Sanskrit Journalism.

---

3. ''संस्कृत पत्रिकाओं में निहित हास्य–व्यंग्य रचनाओं की समीक्षा''

डॉ. तारेश कुमार शर्मा,
वरिष्ठ–संस्कृताध्यापक, रा.व.मा.वि. लिबासपुर, दिल्ली–110042

संस्कृत काव्य एवं काव्यशास्त्र के क्षेत्र में आज भी विद्वानों द्वारा अनेक मौलिक कृतियों की रचना की जा रही है। जिनमें प्रतिष्ठित विचार एवं सिद्धान्त प्राचीनों से किसी भी दृष्टि से कम करके नहीं आँके जा सकते। आधुनिक संस्कृत कविता के अध्ययन से स्पष्ट है कि न केवल राष्ट्रीय अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर घटित होने वाले घटनाक्रमों को संस्कृत कवियों ने निरन्तर अपनी कविता का विषय बनाया। संस्कृति कवि सम्पूर्ण सामाजिक चेतना का प्रतिनिधित्व करते हुए वर्तमान समाज पर दूरगामी प्रभाव डालने वाले प्रत्येक घटनाक्रम का सूक्ष्मातिसूक्ष्म पर्यालोचन करता हुआ दिखाई देता है– अपने रचना चातुर्य में। आधुनिक संस्कृत कविता वर्तमान सामाजिक परिदृश्य का सच्चा इतिहास है।

आधुनिक काल में हास्य–व्यंग्य की परम्परा विशदरूप से हमारे समक्ष आयी है इसका प्रमुख कारण है संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन। स्वातन्त्र्योत्तर काल में हास्य–व्यंग्य लेखन का व्यापक फलक मौजूद है। समाज की स्वार्थलिप्सा, अवसरवादिता, आडम्बरों और कुरुतियों के आलम्बन कवियों को मिले। राजनैतिक क्षेत्र में नेताओं व मंत्रियों के चरित्र उनकी कविताओं के विषय बने। साहित्यिक प्रसङ्गों में उनको काव्य के वर्ण्य–विषय प्राप्त हुए। इस प्रकार जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उत्तरोत्तर समस्याएँ और जटिलताओं की वृद्धि होती गई। फलस्वरूप कवियों को नये–नये आलम्बन सुलभ होते गये।

सम्प्रति संस्कृत काव्य पर दृष्टि डालते हैं तो हमें हास्य की अपेक्षा तीखा व्यंग्य अधिक

दिखाई देता है। सामाजिक विषयों में जहाँ शिक्षा, कलिकाल का प्रभाव, रिश्ते–नाते, मानवेतर जीवों, जीवेतरपदार्थों, चलचित्र आदि विषयों पर हास्य–व्यंग्य कविताओं के केन्द्रबिन्दु बने वहीं साहित्यिक व धार्मिक कृतियों पर आधारित प्रसंग काव्य सृजन के स्रोत बने। देश की राजनैतिक स्थितियों में भी ऐसा परिवर्तन हुआ कि कोई व्यक्ति संतुष्ट नजर नहीं आया, इसलिए रचनाकारों ने राजनीति, निर्वाचन, प्रशासन और राष्ट्रपरक समस्याओं पर रचनाओं का सृजन किया।

इस दिशा में अनेक संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं की ओर ध्यान जाता है जिनमें हास्य–व्यंग्य विषयक कविता, निबन्ध, लेख आदि प्रकाशित किये जाते रहे हैं तथापि एकमात्र हास्य रस को प्रकाशित करने वाला श्रीमाधव प्रसाद मिश्र गौड़ के सम्पादकत्व में सन् 1940 में वाराणसी से प्रकाशित **'उच्छृंखलम्'** प्रथम पत्र था।

प्रत्युत 'हसन्तुतराम्', 'एहि हसाम्', 'मा हस', 'विनोद–स्तम्भः', 'हास्यकणिका', 'परिहासः' और **'विनोदकणिका'** आदि शीर्षकों से भी हास्य–व्यंग्य सम्वलित काव्यों अथवा ग्रन्थों की रचना की गई है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वाणी की सार्थकता व्यंग्य के सान्निध्य में श्रेष्ठ हो सकती है, इसके बिना वह आधारहीन सी जान पड़ती है–

''न विवेकं विना ज्ञानं ध्यानं नात्र रसं विना।
श्रद्धया न विना दानं न वचः व्यङ्ग्यं विना।''

अतः संस्कृत साहित्य में हास्य–व्यंग्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस हास्य–व्यंग्य से मानव समाज के अनेकों दोष दूर होते हैं। हास्य–व्यंग्य से जीवन में नूतन शक्ति का संचार होता है। उसके बिना मानव जीवन निरर्थक प्रतीत होता है। यथोक्तम्–

''यानि कानि च पापानि इह जन्म कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्तु व्यंग्यस्तुत्या पदे पदे।।''

---

4. संस्कृतपत्रकारितायां संस्कृत पत्रिका सम्भाषण संदेशस्य सम्प्रति स्थानम्

सुश्री पल्लवी कुमारी
शिक्षाचार्य द्वितीय वर्ष, राष्ट्रिय संस्कृतविद्यापीठम् तिरुपति, आं. प्र.

संस्कृतभाषायां याः याः पत्रिकाः प्रकाशिताः भवन्ति तासु पत्रिकासु संस्कृतसम्भाषणसंदेशः इति पत्रिका श्रेष्ठस्थानं भजते। एषा पत्रिका नवीनताम् उद्घोषयति। पत्रिकायाः कलेवरं नवीनं मनोरमञ्चास्ति। अस्याः पत्रिकायाः श्रीजनार्दन हेगडे महोदयाः सम्पादकः सन्ति। प्रकाशकः के. नारायणः, प्रबन्धकः वे. न. गोपालरावमहोदयः आसीत् ।पत्रिकायाः प्रकाशनस्थलं तु संस्कृतभारती, अक्षरम्-५,उपमार्गः रघटः, गिरिनगरम्, वेङ्गलूरु - ५६००८५ भवति। संस्कृतभारत्याः मासिकपत्रिकात्वेन प्रकाशनं भवति।

सम्भाषणसंदेशपत्रिकायाः विशेषता-

1.सरलसंस्कभाषाधारिता एषा पत्रिका।

2.शुद्धटङ्कणेनदिव्यति एषा पत्रिका।

3.लोकप्रिया एषा आधुनिक-युगे।

4.अल्पशुल्कः अस्ति।

5.भेदभावरहिता एषा पत्रिका।

6.मनोरञ्जनस्य सुधानमस्ति। इत्यादयः।

अतएव एतस्यां पत्रिकायां विशेषतः एते विषयाः सम्मानिताः - साक्षात्कार - बालमोदिनी- धारावाहिनी- स्थिरशीर्षका -गल्प-समाचार-विज्ञापनादिषु विषयेषु लेखाः प्रकाशिताः भवन्ति। सरल-संस्कृतभाषया आकर्षक-सज्जया, विविधवर्ण-वर्णितया च पत्रिकैषा अधुनातनप्रविधिद्वारा प्रकाश्यते इति कृत्वा नूनमियं पाठकानां संस्कृतानुरागिणां चेतांसि आवर्जयति। संस्कृतस्य प्रचारार्थं हितसाधनार्थं चात्र विशिष्टाः लेखाः प्रकाश्यन्ते। युगपदेव संस्कृतं प्रति जनानामभिरूचिं विवर्धयितुं, बालानां च संस्कृतानुरागिणां संस्कृतप्रवृत्तिं प्रोत्साहयितुम् अस्याः कथा - आख्यायिका-व्यङ्ग्यलेख-प्रहेलिकादयः अपि प्रकाश्यन्ते। संस्कृतभाषयाः प्रचाराय - प्रसाराय च कृतभूरिश्रमायाः देशे-विदेशेषु चायोजितानां संस्कृतकार्यक्रमाणां शिविर-वृत्तानां च विवरण-विस्तरमपि अत्र प्रकाश्यते।

---

5. संस्कृत पत्रकारिता के संदर्भ में संस्कृत ई-शिक्षा (ई-लर्निंग) का योगदान

हेमंत जोशी

पत्रकारिता शब्द अंग्रेज़ी के "जर्नलिज़्म" का हिंदी रूपांतर है। पत्रकारिता लोकतंत्र का अविभाज्य अंग है। प्रतिपल परिवर्तित होने वाले जीवन और जगत का दर्शन पत्रकारिता द्वारा ही संभंव है। परिस्थितियों के अध्ययन, चिंतन-मनन और आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति और दूसरों का कल्याण अर्थात् लोकमंगल की भावना ने ही पत्रकारिता को जन्म दिया। संस्कृत भारत की सांस्कृतिक धरोहर है। इस राष्ट्र की पहचान और अस्मिता है। स्वतन्त्र-भारत की भाषाई नीति के चक्रव्यूह में न पड़कर आज संस्कृत पत्रकारिता के क्षेत्र में नित-नूतन हो रहे प्रयोगों की पड़ताल करें तो लगता है कि विश्व की अधिकाधिक भाषाएँ, इस वैज्ञानिक और गणितात्मक वाणी विज्ञान से लाभान्वित हो रही हैं। कम्प्यूटर भाषा विज्ञान को परिपोषित और सम्वर्धित करने में संस्कृत के शब्दानुशासन से अधिकाधिक मदद ली जा रही है। ऐसे परिदृश्य में किन्हीं कारणों से धीमी गति से चलने वाली संस्कृत पत्रकारिता अब आधुनिक संचार माध्यमों के सर्वविध क्षेत्रों में और सामाजिक संचार माध्यमों में अपनी उपयोगिता और प्रभाव को स्थापित कर रही है।

संस्कृत ई-शिक्षा अनिवार्य रूप से कौशल एवं ज्ञान का कंप्यूटर एवं नेटवर्क समर्थित अंतरण है। ई-शिक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुप्रयोगों और सीखने की प्रक्रियाओं के उपयोग को संदर्भित करता है। संस्कृत ई-शिक्षा के अनुप्रयोगों और प्रक्रियाओं में वेब-आधारित शिक्षा, कंप्यूटर-आधारित शिक्षा, आभासी कक्षाएं और डिजीटल सहयोग शामिल है। पाठ्य-सामग्रियों का वितरण इंटरनेट, इंट्रानेट/एक्स्ट्रानेट, ऑडियो या वीडियो टेप, उपग्रह टीवी और सीडी-रोम के माध्यम से किया जाता है।

---

6. Sanskrit Journalism and AIOC: National Forum of Orientalists

Ravindra Godbole

As a student of sanskrit, I am used to listen News in Sanskrit long back, since Mr Baldevanand Sagar was giving news on AIR. I would like to attend his lecture in particular. along with other sessions for entire three days. I am eager to attend this conference. As this is 100th year of beginning of this great academic event. All India Oriental conference which has served as the National forum of scholars interested in Orientology, gives fortune to all students and learners to get acquainted with this great language. Also, we will come across big exhibition of sanskrit books., which are rarely available in India. We happen to visit various sections such as Religion, philosophy, epics and puranas. Vedic and classical sanskrit.

---

7. संस्कृतपत्रकारितासन्दर्भे संस्कृतभाषाप्रयोगसामर्थ्यविकासाय भर्तृहरिनीतिशतकस्य महत्त्वम्

विश्वजित् प्रामाणिकः

शोधच्छात्रः, शिक्षासंकायः, राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरुपतिः

संस्कृतसाहित्ये विद्यमानग्रन्थेषु प्रत्येकस्मिन् अपि ग्रन्थे मानकशब्दाः प्रयुक्ताः सन्ति। संस्कृतभाषायाः परमविद्वान् कविः वैयाकरणश्चासीत् भर्तृहरिः। भर्तृहरिणा 'वाक्यपदीयम्', 'वाक्यपदीयटीका', 'सुभाषितत्रिशती', 'महाभाष्यदीपिकाटीका', 'मीमांसाभाष्यम्', 'वेदान्तसूत्रवृत्तिः', 'शब्दधातुसमीक्षा' इत्येमे ग्रन्थाः विरचिताः। एतेषु भर्तृहरेः मौलिकरचनाद्वयम् अत्यन्तं सुप्रसिद्धं वर्तते, प्रथमं वाक्यपदीयम्, द्वितीयं च सुभाषितत्रिशती इति।

सुभाषितत्रिशती इति ग्रन्थे शतकत्रयं वर्तते- 'नीतिशतकम्', 'शृङ्गारशतकम्', 'वैराग्यशतकञ्च'। भर्तृहरिः कुटुम्बे स्थित्वा यथार्थम् अनुभवं प्राप्नोत्। पुनश्च तस्य अनुभवस्य मार्मिकपक्षाणां ग्रहणे सः सर्वदा कृतकार्यः आसीत्। यः कुटुम्बे स्थित्वा अपि स्वानुभवबलेन तस्य हृदयवाणीम् अवगत्य श्लोकरूपेण पूर्णतां प्रदातुं शक्नोति सः एव सत्यः लोकप्रियः कविः भवति। अनया दृष्ट्या भर्तृहरिः सत्यमेव जनताकविः आसीत्। यस्य सूक्ष्मदृष्टिः संसारस्य लघुलघुविषयान् परिशील्य तस्मात् उदात्तशिक्षाप्रदानाय सामर्थ्यं प्राप्नोत्।

संस्कृतपत्रकारितासन्दर्भे संस्कृतभाषाप्रयोगसामर्थ्यविकासाय लोकप्रियेण कविना विरचिते शतकत्रये प्रयुक्तानां संस्कृतमानकशब्दानां परिशीलनम् अत्र करिष्यते। सुभाषितत्रशतीगता शैली सुलभा, मञ्जुला, अर्थगौरवयुक्ता, आकर्षिका च वर्तते । संस्कृतस्य सामान्यज्ञानवन्तः अपि इदं पठित्वा अवगन्तुं शक्नुवन्ति । अत्र उपयुक्तं वृत्तं सुलभं लघु च विद्यते । अत्रत्याः उपमानोपमेयादयः स्वाभाविकाः इत्यतः पठितृषु

नूतनभावोत्पादकाः सन्ति । इह लोकप्रियकविना भर्तृहरिणा विरचितसुभाषितत्रिशतीतः काश्चन सूक्तयः प्रस्तूयन्ते, यत्र स्थूलाक्षरैः लिखिताः शब्दाः भाषासौष्ठवं दर्शयन्ति- भर्तृहरिणा विरचितायां सुभाषितत्रिशत्याम् एकैकं शतकमादाय सविवरणं मानकशब्दसूची प्रस्तूयते। ये खलु शब्दाः संस्कृतपत्रकारितायां भाषाप्रयोगसन्दर्भे निश्चप्रचम् उपकुर्युः।

---

8. सामाजिक संचार माध्यम और संस्कृत पत्रकारिता

जगदीश डाभी

आज के टेक्नोलॉजी के युग में सामाजिक संचार माध्यम एक ऐसा माध्यम है जो प्रत्येक व्यक्ति २४ घण्टे मोबाईल, टेलीविजन, फेसबुक, ट्विटर इत्यादि माध्यमों से जुड़ा रहता है। किसी प्रकार की कोई भी सूचना हो या कोई खबर हो, वो कुछ ही क्षणों में सैकड़ों लोग तक हम पहुँचा सकते हैं। आज सामाजिक संचार माध्यम - जैसे कि दूरदर्शन प्रतिदिन संस्कृत समाचार प्रसारित करता है, आकाशवाणी [रेडियो] पर पिछले ४५ वर्षों से प्रतिदिन दो बार संस्कृत समाचार प्रसारित किये जाते हैं, फेसबुक-ट्विटर के जरिये संस्कृत-समाचारों को प्रसारित किया जाता है। पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है। भारत में यह फलता-फूलता उद्योग है, जो युवाओं के लिए न केवल रोजगार के अवसर उपलब्ध करता है, अपितु चुनौतीपूर्ण कार्यों के माध्यम से यश और प्रतिष्ठा भी प्रदान करता है। संस्कृत पत्रकारिता का क्षेत्र यद्यपि बहुत व्यापक नहीं रहा है, ऐसा कहना आज उचित नहीं है क्योंकि आज संस्कृत पत्रकारिता के क्षेत्र में पर्याप्त सामाग्री विद्यमान है, जो संस्कृत पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण करने वाले लोगों का मार्गदर्शन करने में समर्थ है। जब भी संस्कृत पत्रकारिता की चर्चा होती है तब संस्कृत पत्रकारिता के इतिहास में ई.स. १८६६ में पहली जून काशी से प्रकाशित काशीविद्या-सुधानिधि: की चर्चा अवश्य होती है। उस दौर के बाद संस्कृत पत्रकारिता के क्षेत्रमें बहुत बडा परिवर्तन आया है, जैसे कि बहुत सारे समाचारपत्रों, पत्रिकाएं, ई-पेपर, दूरदर्शन समाचार, आकाशवाणी समाचार इत्यादि के द्वारा संस्कृत- पत्रकारिता को एक नया आयाम मिला।

---

9. संस्कृत पत्रकारिता में आधुनिकता

डॉ. सुषमा कुमारी

संस्कृत भारत की संस्कृति और सांस्कृतिक धरोहर है। संस्कृत पत्रकारिता में अहर्निश हो रहे प्रयोगों को छाने तो ज्ञात होता है कि विश्व की अधिकाधिक भाषाएं गणितात्मक एवं वैज्ञानिक हैं। तो इनके सम्पोषण में संस्कृत का योगदान भी रहा है। भारत में पत्रकारिता का क्षेत्र अतिविस्तृत है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अनेक पत्र–पत्रिकाएँ जन–संम्पर्क सहयोग के लिए संस्कृत प्रेमियों के अथक परिश्रम से दृष्टिपथ में आईं। देश–विदेश में हो रहे घटनाक्रमों एवं संस्कृत–भाषा में रूच्युत्पादनार्थ पिछले ४४ वर्षों से आकाशवाणी और गत २२ वर्षों से दूरदर्शन वार्ता सेवा प्रभाग लोगों को अपनी सेवाएं देते आ रहे हैं। संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं की समीक्षा करके हम यह कह

सकते हैं कि संस्कृत भाषा वैविध्य समावेशिनी होने के साथ–साथ बुद्धिमान, संस्कृत–प्रेमानुरागियों के हृदय को अनायास आकर्षित कर रहे हैं।

---

10. Sanskrit - The language of highest levels of civilization

Prakash Pant

It was about time it was adopted by modern day journalism with all its elements - Due to prolonged effects of colonialism this divine language could not be adopted in Television journalism till 1994 - but once adopted it progressed leaps and bounds. Then in 2015 began Vaartavali- First and only newsmagazine in Sanskrit. It was to the credit of the national broadcaster DD News, to have taken this initiative - And from its very inception it broke all the stereotypes to become the most popular programme of the National Channel with a dedicated viewership in India and abroad. Vaartavali has all the elements - a modern News Programme has - News - Special Interviews- Special Stories- Ground Reports - Entertainment- Art-Cinema. It's unique segment on bringing sanskrit versions of popular Hindi film songs is a rage amongs youth, attracting participation from India and abroad. The programme has helped attract youth in large number and played an important part in establishing the fact that Sanskrit is the language which can very easily become the language of communication in modern age if anything can be achieved in any modern language Sanskrit can do it even better- Vaartavali is a shining example.

---

11. अमरवाण्याः प्रचारप्रसारे संस्कृतपत्रकारितायाः योगदानम्

Dr. STP Kanakavalli

Post-Doctoral Research Fellow (UGC), Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha, Tpty

साम्प्रतिकयुगोऽयं सञ्चारमाध्यमानां युगः । यूनः अधिकतया एतस्य उपयोगं कुर्वन्ति । सञ्चारमाध्यमानि न केवलं मनोरञ्जनाय अपि तु ज्ञानविज्ञानबोधनाय, अध्ययनाऽध्यापनाय, नूतनविषयज्ञानाय, सन्देहनिवारणाय च । सञ्चारमाध्यमेषु आकाशवाणी, समाचारपत्रं, संस्कृतपत्रिकाः, विविधवाहिन्यः, मुखपुस्तकम्, What's App, You Tube, Twitter, विविधतन्त्रांशाः(Apps), अन्तर्जालानि इत्यादयः अन्तर्भवन्ति । अमरवाण्यां¬¬ रुचिमुत्पादयितुं संस्कृतपत्रकारितायाः योगदानम् अद्वितीयं वर्तते।

---

12. संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास

बजरंग लाल अत्रि

सूचनाओं के एकत्रीकरण, सम्पादन और प्रस्तुतिकरण को पत्रकारिता कहा जाता है। प्राचीनकाल में सूचनाओं के आदान-प्रदान, मौखिक कथाओं, ग्रन्थरचना, मेलों, शास्त्रार्थों, तीर्थयात्राओं, सन्देशवाहकों के द्वारा होता था आजकल पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, दूरदर्शन, वेबसाइट आदि माध्यमों के द्वारा किया जा रहा है

पुराणों में आदिमानव से लेकर सभ्य समाज के निर्माण तक की घटनाओं, कार्यकलापों, अन्वेषणों आदि अनेक विषयों की सूचनाएं संकलित की गई हैं और नारद मुनि को विभिन्न सूचनाओं के आदान-प्रदान का माध्यम कहा गया है। महाभारत में संजय-धृतराष्ट्र संवाद श्रव्य और दृश्य पत्रकारिता का उदाहरण है। महाकाव्यों, नाटकों आदि में भी संवादों के माध्यम से सुचनाओं के प्रसारण के उदाहरण मिल जाते हैं। शिलालेखों, स्तम्भलेखों, ताम्रपत्रों आदि के माध्यम से सूचनाएं प्रसारित की जाती थी जिनसे तत्कालिक समाज के मानदण्डों, चिन्तन, सैनिक और सामाजिक गतिविधियों का पता चलता है।

आधुनिक काल में 1866 ईस्वी में काशी विद्या सुधानिधि अथवा पण्डित पत्रिका के प्रकाशन से संस्कृत पत्रकारिता आरम्भ हुई। इसके बाद क्रमनन्दिनी, विद्योदय, विद्यार्थी, धर्मनीतितत्त्वम्, विज्ञान-चिन्ताम, संस्कृत-संजीवनम, आदि पत्रिकाएं प्रकाशित हुई। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में कई पत्रिकाएं प्रकाशित हुई जिनमें संस्कृत-चन्द्रिका, सहृदया, भारतधर्म, श्रीकाशीपत्रिका, शारदा, संस्कृत-रत्नाकरः, संस्कृत-भवितव्यम्, विश्व-संस्कृतम्, गाण्डीवम्, सुप्रभातम्, संस्कृत-श्रीः, प्रभातम्, व्रजगन्धा, श्यामला आदि शामिल हैं।

सन् 1974 ई. से आकाशवाणी पर संस्कृत समाचार और 1994 ई. से दूरदर्शन संस्कृत समाचार आरम्भ हुए। वर्तमान में भी संस्कृति, विज्ञान और टैक्नालाजी आदि अनेक विषयों पर संस्कृत पत्र-पत्रिकाएं निरंतर छप रही हैं जिनकी संख्या सौ से अधिक है। प्राची प्रज्ञा, संस्कृत-सर्जना, सम्प्रति वार्ताः आदि ई-पत्रिकाएं, संस्कृत लघु-चलचित्र तथा आनलाइन संस्कृत रेडियो भी चल रहे हैं। इस प्रकार संस्कृत पत्रकारिता मानव सभ्यता के आदिकाल से वर्तमान काल तक प्रकाशनों, दृश्य और श्रव्य माध्यमों से सतत प्रगतिशील है।

---

13. आंतरजालीय नियतकालिके

अनिरुद्ध अजित किल्लेदार

श्रिया सुधीर गाडगीळ

युरोपीय संस्कृतीच्या संपर्कामुळे व यंत्रयुगाच्या प्रभावामुळे १९व्या शतकाच्या उत्तरार्धात भारतीय साहित्यामध्ये वाङ्मयाच्या विविध प्रकारांना प्रारंभ झाला. १९व्या शतकाच्या उत्तरार्धात इंग्रजी

नियतकालिकांचा प्रभाव व समाजजागृतीच्या कामी त्यांचा उपयोग पाहून भारतातील विविधप्रांतामध्ये, विविध भाषांमध्ये वृत्तपत्रे, मासिके सुरु झालेली आढळतात. या काळातील संस्कृत पंडितसुद्धा या स्पर्धेत मागे नव्हते. 'विद्योदय' हे संस्कृतातील भारतीय संपादक असलेले पहिले नियतकालिक होय. पंजाबमध्ये वास्तव्य करणाऱ्या हृषीकेश भट्टाचार्य नामक बंगाली पंडिताने हे मासिक पंजाबमध्ये सुरु केले. काही काळाने मात्र आर्थिक अडचणीमुळे ते बंद करावे लागले. काळाच्या ओघात नियतकालिकांचे स्वरूप व त्यांचा चेहेरामोहरा देखील बदलत गेला.नियतकालिक या सहजसोप्या माध्यमामुळे संस्कृत भाषेला एक नवी वाट मिळाली.२१व्या शतकामध्ये संस्कृतवर होणाऱ्या आरोपांचे खंडन करण्यासाठी 'नियतकालिक' हेउपयुक्त माध्यम ठरत आहे. तसेच काही उत्साही तरुण मंडळीनी ही नियतकालिके इंटरनेट म्हणजेच आंतरजालावर उपलब्ध करून दिल्याने संस्कृतभाषा जगाच्या कानाकोपऱ्यात सहजपणे पोहोचणे शक्य झाले आहे.अशाच काही आंतरजालीय नियतकालिकांचा अभ्यास प्रस्तुत शोधनिबंधांमध्ये केला आहे.

---

14. ''संस्कृत पत्रकारिता और समकालिक संस्कृत पद्यसाहित्य''

अतीत कुमार त्रिपाठी,

शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, कला संकाय,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।

पत्रकारिता के माध्यम से ही लोग एक अन्यत्र स्थान से दूसरे स्थान की सूचना प्राप्त करते हैं यह सूचना अथवा जानकारी विभिन्न क्षेत्रों से होती है। उनमें से एक क्षेत्र संस्कृत जगत भी है। पत्रकारिता का क्षेत्र आज के समय में बहुत व्यापक हो चुका है। आज के समय में पत्रकारिता मुद्रण माध्यम के साथ–साथ (Electronic/ वैद्युतआणविक) माध्यम में भी काफी प्रसारित हो चुकी है। प्रसन्नता की बात तो यह है कि पत्रकारिता के इन सभी माध्यमों का संस्कृत पत्रकारिता में भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग हो रहा है।

संस्कृत भाषा से सम्बन्धित विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ विभिन्न विधाओं में प्रकाशित हो रही है। मेरा यह शोध–पत्र **''संस्कृत पत्रकारिता और समकालिक संस्कृत पद्य साहित्य''** पर है, इसलिए मैं यहाँ पर संस्कृत पद्य साहित्य से सम्बन्धित पत्रिकाओं पर ही बात करूँगा।

संस्कृत साहित्य की पत्रिकाओं में संस्कृत पद्य साहित्य विभिन्न विधाओं में प्रकाशित हो रहा है। इन विधाओं में प्रकाशित होने वाला साहित्य महाकाव्य, लघुकाव्य (गीतिकाव्य), स्फुटकाव्य, बालकाव्य, मुक्तकाव्य, वैदिशिक छन्दोबद्ध काव्य, मुक्तकछन्दकाव्य हैं।

संस्कृत पद्य साहित्य की पत्रिका पद्यबन्धा (संस्कृत कविता–पत्रिका) प्रो0 बनमाली बिश्वाल जी के प्रधान संपादकत्व में, वीणापाणिसंस्कृतसमिति भोपाल से प्रकाशित होती है। इस पत्रिका में संस्कृत पद्य विधाओं से संबन्धित विभिन्न कविताएँ प्रकाशित होती हैं। पद्यबन्धा के द्वादश स्पन्द में कवि बनमाली बिस्वाल जी की कविता 'श्री वदरीशतकम' शीर्षक से प्रकाशित हुयी। इस कविता में कवि बिस्वाल जी ने उत्तराखण्ड की प्राकृतिक सुन्दरता का एवं वहाँ की नदियों का महत्व बहुत ही सुन्दर ढंग से चित्रण किया है।

---

15. सञ्चारमाध्यमेषु अन्तर्जालसंस्कृतपत्रिकाणां स्थितिः, समस्याः, विकासोपायाश्च

डॉ. सुज्ञानकुमारमाहान्तिः

आधुनिकसन्दर्भे पत्रकरिताया उद्देश्यं सूचना (Information), ज्ञानं (knowledge) तथा मनोरञ्जनम् (Entertainment) इति। एवं समाजे कुत्र कुत्र किं किं भवति तासां वार्तानां संकलनं कृत्वा गृहे गृहे, जने जने प्रापणं पत्रकारिताया एकं प्रमुखमुद्देश्यं भवति। आधुनिकसन्दर्भ सर्वेषु सञ्चारमाध्यमेषु अन्तर्जालमाध्यम (Internet) सर्वव्यापि, सुलभं, सुकरं, सहजं च भवति यन्माध्यमेन दृश्य-श्रव्यसामग्रीणां सञ्चारः विश्वस्य प्रतिकोणं स्थितस्य मानवस्य करामलकवत् सुखासाद्यः स्यात्।

Mark Briggs महोदयेनोक्तं यत् “A smooth Sea never made a skilled sailor" अयमर्थो यत् शान्तः समुद्रः उत्तमं तरणं नैव शिक्षयति। यदि समस्याः न सन्ति तदा मार्गाणामन्वेषणस्यापेक्षा एव न भवति। प्रगतिः भवतु वाऽनिश्चिता, परिवर्तनं तु अवश्यंभावि। Benjamin Franklin महोदयोऽवदत् “When you're finished changing you are finished.” अयमर्थो यत् यदा परिवर्तनमेव समाप्तं तदा सर्वमपि समाप्तम्। अतः संसारस्य जगतः इदं परिवर्तनमस्माभिः स्वीकरणीयम्। तदनुसारमस्माभिरपि परिवर्तनीयम्। वर्तमानमेव भविष्यम्। अतः वर्तमानं तथा समृद्धं स्यात् यथा भविष्यविषये नैव चिन्तनीयं भवेत्। Vincent Van Gogh महोदयेनोक्तं - "Great things are not done by impulse, but by a series of small things brought together.” सत्यम्। क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थञ्च चिन्तयेत्। क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम्।

---

16. संस्कृतपत्रकारितासन्दर्भ संस्कृतभाषाप्रयोगस्य महत्वम्

नितू तिवारी

संस्कृत भारत का सांस्कृतिक धरोहर है । यह राष्ट्र की पहचान और अस्मिता है। यह विश्व के अन्य भाषाओं की जननी है। विश्व में संस्कृति एक ऐसी भाषा है, जो पूर्ण रूप से शुद्ध है। संस्कृत अध्ययन करने वाले छात्रों को गणित विज्ञान एवं अन्य भाषाएं ग्रहण करने में सहायता मिलती है। यह भाषा ३००० वर्ष पूर्व तक भारत में बोली जाती थी तभी तो ईशा पूर्व पाणिनी ने दुनिया का पहला व्याकरण ग्रंथ अष्टाध्याई लिखी । अतः भारत में सन् १७९१ ईस्वी में वाराणसी में संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय खोला गया, जहां संस्कृत का अध्ययन प्रारंभ हुआ। हमारे देश के हर क्षेत्र में संस्कृत के ध्येय वाक्यों का प्रयोग किया जाता है, चाहे वह सरकारी कार्यालय हो, विदयालय हो, महाविदयालय हो, विश्वविदयालय हो लोकसभा या राज्यसभा हो।

यथा:- भारत का ध्येय वाक्य - "सत्यमेव जयते"
दिल्ली विश्वविद्यालय - "निष्ठा धृति: सत्यम्"

लोकसभा - "धर्मचक्र प्रवर्तनाय"
दुरदर्शन - "सत्यम शिवम् सुन्दरम्"

कुछ समय पूर्व 'रूस' से "डॉ लुई रेणु" भारत आई थी तब उन्होंने कहा था "मुझे केवल एक ही दुख है कि हम जिस संस्कृत भाषा को अत्यधिक रुचि से पढ़ते हैं और जिस भाषा को अमर समझते हैं, उसी संस्कृत भाषा को भारतीय मृत भाषा स्वीकार करते हैं।"

इसी प्रकार अमेरिका के "अमेरिका कांग्रेस पुस्तकालय" में ६७०० संस्कृत भाषा के हस्तलिखित ग्रंथ आज भी भारत की गौरव का गुणगान कर रहे हैं। यही नहीं जर्मनी, अफगानिस्तान, थाईलैंड, हॉलैंड, मिश्र, इटली, इंग्लैंड, चीन आदि देशों में भी इसका महत्व है। परंतु भारत में "जो की संस्कृत की जननी है "वहां इसे मृत भाषा के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

---

17. तंत्रयुग में संस्कृत पत्रकारिता की भूमिका

डॉ. रेणुका बोकारे, कविकुलगुरू कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक

संस्कृत पत्रकारिता का भारतीय पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान निश्चितही महत्त्वपूर्ण है। एक तो भाषिक पत्रकारिता की दृष्टी से और दुसरी और राष्ट्रीय स्तर पर सातत्यपूर्ण विविध विविध पहलूओं पर गंभीर लेखन की दुष्टि से।

आज के तंत्रयुग में केवल संगणक तथा आंतरजाल का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं अपि तु विविध समाजिक प्रसारमाध्यमों के द्वारा हूई क्रांति ने विश्व के का चेहरामोहरा ही बदल दिया है। इसका परिणाम विभिन्न क्षेत्रों पर हुआ है। जिसमे पत्रकारिता भी एक महत्त्वपूर्ण अंग है। भारतीय पत्रकारिता एक सर्वसामान्य संज्ञा हैं। इसके अंतर्गत प्रादेशिक – भाषिक पत्रकारिता स्वाभाविकही अंतर्भूत हैं। अर्थात् इस पत्रकारिता पर सामाजिक प्रसारमाध्यमों में हुई उथलपुथल का परिणाम विशेष रूप से दिखाई देता है । मुद्रित, इलेक्ट्रॉनिक तथा सामाजिक ऐसे तीन स्तर यह परिणाम हुआ है।

संस्कृत पत्रकारिता का भारत में गत 70 सालों से प्रचलित हैं | आज पूर्ण भारत में सुधर्म यह संस्कृत वार्तापत्र सातत्यपूर्णता से चलाया जा रहा हैं। संस्कृत भवितव्यम् जैसे संस्कृत साप्ताहिक, पाक्षिक, संभाषण संदेश जैसे मासिक निष्ठापूर्वक प्रकाशित हो रहे हैं। इन सभी मुद्रित पत्रकारिता को तंत्रयुग तथा समाजमाध्यमों के स्पर्धा का सामना करना पड़ रहाहैं।

इस तंत्रयुग में संस्कृत पत्रकारिता ने अपनी भूमिका – स्थान तथा सामंजस्य बडी सजगता से बनाया है। तंत्रयुग में नई तकनीक का स्वीकार, बदलते जगत् का अंगिकार, समाजमाध्यमों में प्रवेश उदा. व्हॉटसॲप, फेसबुक, टिट्टर, वेबसाईट इन सभी का उपयोग कर अपनी नींव रखी हैं | तंत्रयुग में संस्कृत पत्रकारिता का स्थान, भूमिका तथा नई सोच क्या हैं? और क्या होनी चाहिए? इसका साद्यंत आलेख इस शोधनिबंध में प्रस्तुत किया जायेगा।

Modern Sanskrit

1. Modern Sanskrit Poetry of Twenty First Century

Harshdev Madhav Jani,
Retired Prof., H.K. Arts College, Ahemdabad

In this paper, modern Sanskrit poetry of twenty first century is discussed. The theme, subject matter and new figures of speech are shown in this paper. This paper is on modern sanskrit. In this paper, modern Sanskrit poetry of twenty first century is discussed. The theme, subject matter and new figures of speech are shown in this paper. This paper is on modern sanskrit. In this paper, modern Sanskrit poetry of twenty first century is discussed. The theme, subject matter and new figures of speech are shown in this paper. This paper is on modern sanskrit. In this paper, modern Sanskrit poetry of twenty first century is discussed. The theme, subject matter and new figures of speech are shown in this paper. This paper is on modern Sanskrit.

---

2. आलङ्कारिकाणां दृष्ट्या अन्योक्ति अलङ्कारः

Devasmita Barik

संस्कृतभाषायाः अलङ्कारशास्त्रय्येतिहासः गुरुतमः। संस्कृतसाहित्ये अलङकारतत्त्वं अनिर्वार्यमिति धिया पण्डिताः रसध्वन्यादिविषयेषु अधिकं लग्नाः भवन्ति।किन्तु कवेः कल्पनायाः उच्चता तत्प्रयुक्तानाम् अलङ्काराणां विश्लेषणेन ज्ञायते।कल्पनां त्यक्त्वा कवित्वं प्रतिष्ठितं न भवति। कल्पनां त्यक्त्वा कविकल्पनायाः पल्लवनं न भवति। अतः अलङ्काराणां तात्त्विकम् अनुशीलनं कतिपयैः आलङ्कारिकैः विहितमस्ति।तेषु भरत-दण्डी-रुय्यक-वामन-रुद्रट-आनन्दवर्धनाचार्य-मम्मट-जयदेव-विश्वनाथ-पण्डितराजजगन्नाथ अप्प्यदीक्षितप्रभृतयः प्रायशः केचन प्रसिद्धाः।न कस्या अपि भाषायाः अलङ्कारसाहित्यमद्यापि तज्जेतुं पारयति। भाषायां व्युत्पत्तिविवर्धनाय यथा व्याकरणशास्त्रमपेक्षते तथैव काव्ये नैपुण्यायालङ्कारशास्त्रमपि।अलङ्कारशास्त्रं विना केवलं काव्ये नैपुण्यमेव न सम्पद्यतेऽपितु वाक्यदोषदृष्टिरपि नोत्पद्यते। साहित्यशास्त्रे विद्यमानेषु प्रसिद्धेषु षट्सम्प्रदायेषुद्वितीयस्थानं भजते अलङ्कारसम्प्रदायः। यस्य प्रवर्तकः भामहाचार्यः। अलङ्कारनिबन्धकर्त्तारः प्राचीना अर्वाचीनाश्चाचार्याः बहवो हि सञ्जाताः।अतः अलङ्काराणां तात्त्विकम् अनुशीलनं कतिपयैः आलङ्कारिकैः विहितमस्ति।तेषु भरत-दण्डी-रुय्यक-वामन-रुद्रट-आनन्दवर्धनाचार्य-मम्मट-जयदेव-विश्वनाथ-पण्डितराजजगन्नाथ-अप्प्यदीक्षितप्रभृतयः प्रायशः केचन प्रसिद्धाः तेषु रुद्रटः तस्य ग्रन्थः काव्यालङ्कारे अन्योक्ति-अल्ङ्कारस्य प्रयोगः अत्युत्तमरूपेण कृतम्। परन्तु मम्मट-रुय्यक-भरत-भामह मम्मट-रुय्यक-अप्पय्यदीक्षितः तथा पण्डितराजगन्नाथः प्रभृतयः आचार्याः 'अन्यक्ति' इति न स्वीकृताः ।पण्डितराजजगन्नाथस्य मतेन एतत् तु अप्रस्तुतप्रशंसा एव। पण्डितराजगन्नाथेन कृतम् भामिनीविलासस्य प्रस्ताविकविलासेऽपि अन्यक्तयः प्रस्तुताः।

अतः भामिनीविलासस्य प्रथमविलासः प्रस्ताविकविलासः इति स्मृतः न तु अन्यक्तिविलासः। सः तस्य अन्यतमकृती रसगङ्गाधरे अप्रस्तुतप्रशंसायाः उल्लेखं कृतवान्।अतः मया रुद्रट तथा पण्डितराजजगन्नाथस्य मतेन अन्योक्ति-अल्ङ्कारस्य वैशिष्ट्यम् स्वरूपम् च दर्शयितुं इच्छामि इति।

---

3. Myth: A Poetic Instrument in *Netraprānte Nispandasamayaḥ* of A.R.Mishra

Sukanya Bhattacharjee

Department of Sanskrit, Pali & Prakrit Visva-Bharati, santiniketan

Myth is a postmodernist poetic instrument used world-wide for conveying the meanings which cannot be easily conveyed as per the desire of the writer. It includes mythical incidents, characters and thoughts and also the legends, cultural pasts and historical incidents as well. In our present attempt, we wish to analyze the usage of myth in the collection of poems entitled '*Netraprānte Nispanda-samayaḥ'* (2019) of A.R. Mishra in order to assess its utility in suggesting deeper meanings and in generating refreshingly beautiful feelings.

A.R. Mishra who teaches Sanskrit in Visva-Bharati, Santiniketan, is a postmodernist Sanskrit poet and the present book is his second one after the first one *'Tava javādhara-manmaya-rekhasu'*. His poetic instruments like fancy, metaphor, symbol, *dhvani* and simile are extremely new and refreshing. In the present book, he uses myth as a great poetic instrument on which we wish to make a brief study.

---

4. Concept of intelligence with special reference to प्रज्ञा and मेधा

Amey Sunil Khare.

There are so many words used to get the meaning of 'intelligence' in Sanskrit literature. Do these words deliver the same meaning or different shades of meanings? It is a mystery! Here with this small attempt, I'll be trying to differentiate between the two Sanskrit words used for intelligence which are 'प्रज्ञा' and 'मेधा'.

Some dictionaries have mentioned that both words connote the same meaning, which is 'intelligence' or 'knowledge'. Many people think the same. But study of two Atharvavedic hymns मेधाजनन सूक्त (1.1) and मेधावर्धनसूक्त (6.108), an explanation from Patanjali's Yogasutras, a shloka from Bhagvatgeeta and so on explains that both the words try to connote different meanings which are similar to one another's but not 'the same'.

---

5. Role of Matha-s and Temples in the Preservation of Sanskrit

Sanjay Panda

Since time immemorial Sanskrit has received royal patronage to a very discernible extent. The moral, financial and institutional support couched with infrastructural one has been provided by the traditional Matha-s and temples in the propagation and preservation of Sanskrit language and literature. However, this trend has been receding in modern times due to the lack of governmental support to these institutions. Whereas due to the present upsurge in technology, there is a reverse trend with regard to the study of Sanskrit, the present employment scenario does not encourage the students to pursue Sanskrit for their livelihood.This paper wishes to highlight the role of the Matha-s and Mandirs vis-à-vis that of the government in the modern times.

---

6. औदुम्बरी: संस्कृत गजल समीक्षा - द्वारा प्रणीत प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

Rajendra Tripathi

सहयोगी प्राध्यापक, अलाहाबाद डीग्री कॉलेज, अलाहाबाद.

"औदुम्बरी" अभिधान है, अर्वाचीन संस्कृत काव्यविधा में सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रचलित गीत और गज़ल की उस सामयिक संरचना का जिसके सर्जक प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र स्वयं प्रतिमान हैं उस परम्परा के जिसका प्रवर्तन भट्ट मथुरा नाथ शास्त्री ने किया, आचार्य बच्चू लाल अवस्थी ने उसे प्रतिष्ठित किया।प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने अपने अभिनव काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ 'अभिराजयशोभूषणम् 'में उसका शास्त्रीय स्वरूप प्रदर्शित कर उर्दू और फारसी की गज़ल विधा को संस्कृत में ' गलज्जलिका 'जैसा नामकरण कर उसमें राग,लय, ताल ,स्वर और संगीत की ऐसी माधुरी प्रस्तुति की जिसकी गुनगुनाहट से हर संस्कृत काव्यप्रेमी और कवि आकृष्ट हुआ और इस विधा में रचनाएँ करने की अब ऐसी होड़ लग गई है कि कोई भी कवि अपने को पीछे नहीं रखना चाहता।मंचो पर इसकी लयात्मक प्रस्तुति स्वाभाविक रूप से श्रोता को बर्बस आकृष्ट करने वाली अनुभूत होती है।उर्दू की प्रचलित गज़ल विधा के सांचे में ढली ये संस्कृत रचनाएँ निश्चित रूप से लोकप्रिय और हृदयग्राही हैं।

औदुम्बरी संस्कृत गज़लों की एक ऐसी मञ्जूषा है जिसमें डॉ.मिश्र नेअपनी 68 संस्कृत गलज्जलिकाओं को उपन्यस्त किया है। इसमें लोक ,समाज, राष्ट्र , राजनीति और वैयक्तिक संवेदनाओं की उन तमाम पीड़ाओं और अनुभूतियों को समाहित किया गया है जिसका प्रत्यक्ष और परोक्ष अनुभव कवि ने स्वयं कालचक्र के संक्रमण में यथावसर प्राप्त किया है।

"औदुम्बरी "शीर्षक ही आवरण है उस रहस्य का ,गोपन है उन कृमि-किरीटों का , उपहास है उस अर्हता का ,उपेक्षा ओर प्रवंचना है उन आत्मीयों की, छलछद्म है अकारण वैरियों का , विसंगति और विडम्बना है व्यक्तिगत जीवन में उतार और चढ़ाव की, प्रदर्शन है मिथ्या सहानुभूतियों का ,आकलन है अन्याय और अयोग्यता का , प्रतिफल है संचित कर्मों का , उपसंहृति है अवमानना का और अन्तत: अवधारणा है उस परमगति और परमात्मा की जिसके अधीन होना ही पड़ता है उस हर एक प्राणी को जिसने जन्म लिया है इस संसार में।पुनर्जन्म और पुनर्मिलन की आशा में ही कवि अपने सारस्वत संस्कृत सेवियों के साथ विलीन होना चाहता है अपनी उस जन्मभूमि में जहाँ वह जन्मा है।

ऐसी अन्यान्य मनोगत अनुभूतियों और संवेदनाओं को विविध बिम्ब-विधानों और प्रतीकों के माध्यम से प्रो.मिश्र ने अपनी हर गज़ल को निर्धारित और नियामक ढाँचे में ढालने का प्रयत्न किया है।

---

7. वामनावतरणम् महाकाव्य का वैशिष्ट्य

शताक्षी लता

शोध–छात्रा, संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विष्वविद्यालय, लखनऊ

वामनावतरणम् अभिराज राजेन्द्र मिश्र द्वारा विरचित आधुनिक महाकाव्य है इसमें 17 सर्ग हैं। यह एक उत्कृष्ट कोटि का महाकाव्य है। प्रस्तुत महाकाव्य का कथानक श्रीम´ागवत से लिया गया है। इसके वस्तु–विन्यास में अनेक पुराणों का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। इस महाकाव्य का वर्ण्य विषय वामन के अवतार द्वारा समाज में एक आदर्ष लोकतंत्र की स्थापना है। वामन कथा ने कवि के हृदय को इतना अधिक द्रवीभूत किया कि वामन के उत्तम चरित्र को ही केन्द्र में रखते हुए वामनावतरण जैसे उच्चकोटि के महाकाव्य की रचना कर डाली। महाकाव्य के नायक इन्द्र हैं। भगवान वामन बलि की निरंकुषता समाप्त करने के लिए अवतार लेते हैं। इस महाकाव्य का अंगीरस शान्त रस है, यद्यपि बलि की दानवीरता की दृष्टि से वीररस प्रधान स्थान प्राप्त करता है। महाकाव्य में प्राचीन षिल्प, सर्गबद्धता, छन्द, ग्राम–नगर, वस्तु वर्णन, यज्ञ, संस्कार आदि का वर्णन प्रायः किया गया है। महाकाव्य में उभय–विध प्रकार के साम्राज्यों का वर्णन कवि ने भली भा%ति किया है।

वामन की भावना सर्वजन–सुलभ प्रषासन एवं स्वराज्य–स्थापना की ओर उन्मुख है। महाकाव्य सद्उपदेषों, वचनों से परिपूर्ण हैं। वामनावतरणम् महाकाव्य का प्रारम्भ एक अत्यन्त विषादपूर्ण घटना के वर्णन से प्रारम्भ होता है। वामनावतरण एक षिक्षाप्रद काव्य तो है ही साथ ही आज के स्वार्थान्ध, मूल्यहीन, व्यवस्था–विरोधी तथा सत्तालोलुप, भारतीय लोकतंत्र के लिए पथ–प्रदर्षक भी है। वैष्णव कुल में उत्पन्न बलि के मद एवं अहंकार को खण्डित करना, उसके प्रति वत्सलता का व्यवहार करना और साथ ही साथ देवराज इन्द्र तथा समाज को निर्मद बने रहने की षिक्षा, सद्उपदेषों का वर्णन आदि कवि ने अपनी सूझ–बूझ एवं नवीन कल्पना से सरस एवं सुग्राह्य बना दिया है जिससे महाकाव्य में वैषिष्ट्य आ गया है।

---

8. The Social System and Beliefs at the Time of *Bhartruhari* – An Overview Based on *Neetisataka*

Dr. Bhargava Raman K.K., SSUS R/C TIRUR

The works of a period, along with other materials, can clarify the social conditions, beliefs, customs and cultural characteristics of a particular period. Some of the styles adopted in the text, the use of specific words, and some contextual clues can all lead us to such conclusions. The purpose of this article is to analyze the internal references in the book *Neetisataka of Bhartruhari*. Few assumptions-

- There was a special mechanism to think about the governing system.
- A high level of morality was maintained. There was alcoholism and prostitution in the society, but it was not treated with dignity.
- There was a general perception that sex with own wife was considered best. However, sex with underage (below 16 – *Bala*) girls was valid and acceptable in the society.
- There were several beliefs among people both mythological and non-mythological. There was a belief in the destiny. Several such beliefs can thus be drawn from the descriptions. Careful and systematic cultivation is another characteristic of that period.
- In more than three verses, it could be seen the symbolic use of the word grass (तृण) was part of the general usage when it was compared to grass in the place of worthlessness.

Important aspect regarding this is that the beliefs and practices that are so integral in the present-day *Sanatana* culture can be traced back to 1500 years ago.

---

9. आधुनिक संस्कृत साहित्य और अवसाद (डिप्रेशन) का समाधान

हेमलता रानी

शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

मानसिक स्वास्थ्य, सभी व्यक्तियों के लिए शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों ही बहुत जरुरी होता है | अगर कोई व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ है लेकिन उसका मानसिक स्वास्थ्य ख़राब है तो उसे अपने जीवन में कोई प्रकार की दिक्कतों का सामना करना पडेगा | इसलिए मानव जीवन में खुश रहना अति अवश्क

होता है नहीं तो आप दुखी रहने के कारण अपने मन मस्तिष्क को बीमार कर लेंगे | हाँ यह बात सत्य है | अवसाद जिसे डिप्रेशन कहा जाता है | इस विषय को लेख रूप में पूर्ण करना एक चुनौती पूर्ण है, फिर भी मुझे प्रयास तो करना ही चाहिए

मेरे अनुसार डिप्रेशन के ईलाज के लिए उपर्युक्त उपाय के अलावा भी मनुष्य मन को संस्कृत साहित्य के माध्यम से भी कुछ हद तक मन को अवसाद से मुक्त हुआ जा सकता है क्योंकि मानव प्रेरणा से भी जीवन परिवर्तन किया जा सकता है | उसमें से भी पोजिटिव tink को लेते हुए जीवन का संचार करना चाहिए|

आधुनिक संस्कृत साहित्य में अनेक ग्रंथों की रचना कि गई | यथा डॉ सत्यव्रत शास्त्री की रचना 'श्रीरामकीर्तिमहाकाव्य', 'इंदिरागान्धीचरितम्' आदि डॉ अशोक कुमार डबराल की 'दुधुक्षा' (कथा संग्रह) शंकरदेव अवतरे का काव्य 'सीतारामीयम्' इत्यादि संस्कृत रचनाओं के पात्रों के माध्यम से भी जीवन को प्रेरित किया जा सकता है | जैसे सामान्य जीवन में अगर पत्नी पति को या पति के द्वारा पत्नी के त्याग देने के कारण जीवन को अधिक कुण्ठित मानते है जिससे इनमें से कुछ कमजोर हृदय प्राणी अपने जीवन को त्याग का विचार करते है या जीवन ही त्याग देते है | जोकि अत्यधिक अवसाद की स्थिति होती है | ऐसे में श्रीरामकीर्तिमहाकाव्य के पात्र दृढ़ता प्रदान करते है जैसे नारी रूप में सीता और पुरुष रूप पात्र में राम मनुष्य को नवीन मार्ग प्रदान करने में सहायक होते है जिसमें प्राण प्रिय सीता के मृत्यु समाचार सुनकर भी श्रीराम को दुखी तो होता है किन्तु अपने प्राणों को त्याग ने का विचार कभी नहीं करते वही दूसरी ओर सीता अपने पति द्वारा मृत्यु दण्ड दिए जाने के विचार को, वन में छोड़ देने व लक्ष्मण के सीता का वध कर हृदय लाने का समाचार सुनकर भी दृढ हृदय सीता पति प्रेम में विचलित नहीं हुई इतने के बाद भी अपने प्राणों की रक्षा करती हुई भी राम के पुत्रों (मंकुट और लव) को जन्म देती है | इसके पश्चात् दुखी राम के द्वारा क्षमा प्रार्थना करने पर भी आदर्श मूर्ति सीता अयोध्या नहीं लौटती पर देवताओं के कहे पर ही राम संग जाने को तैयार होती है जबकि सामान्य जन-जीवन में प्राणी छोटी–सी घटना से टूट जाता है मनुष्य को यह विचारना चाहिए कि दुःख के बाद सुख आवश्यक ही प्राप्त होता है, फिर क्यों मानव मन रोता है |

---

10. अर्वाचीन संस्कृत साहित्य : नवीन दृश्टि नये प्रयोग

Dr. Rajmangal Yadav, Asst. Prof. Delhi University, Delhi
Dr. Kamlesh Rani, Ass Prof. Delhi University, Delhi

अर्वाचीन संस्कृत साहित्य के समृद्धिकाल (Golden Period) 1948 से वर्तमान तक में अनेक रचनाकार कवि एवं समीक्षक ऐसे हुए हैं, जिन्होंने काव्य और शास्त्र दोनों का साथ–साथ सर्जन किया है। इनमें से प्रमुख हैं–भट्टमथुरानाथ शास्त्री, पं०बच्चूलाल अवस्थी, प्रो०रामजी उपाध्याय, प्रो०शिवजी उपाध्याय, प्रो०रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, प्रो०राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो०रहस विहारी द्विवेदी, प्रो०रामप्रताप वेदालंकार तथा प्रो० हर्षदेव माधव आदि। इन रचनाकारों ने जहाँ एक ओर काव्यशस्त्रीय सिद्धान्तों किंवा काव्यतत्त्वों पर अपनी नवीन दृष्टि प्रस्तुत की है, वहीं दूसरी ओर नये–नये प्रयोग भी किये हैं। अर्वाचीन वाङ्मय में विरचित रचनाकारों की रचनाओं के आधार पर उपर्युक्त नामांकित कवियों ने युगानुरूप विविध प्रकार के नवीन काव्यों यथा–महाकाव्य

एवं नाटक लक्षण, राग, विमान, दूत, लहरी, मुक्तक, मुक्तच्छन्द, गजल, प्रगतिशील, सौन्दर्यविधान, विम्बविधान, प्रतीकविधान, शतक, समस्यापूर्ति, नभोनाट्य, गीत, अनुकृति, हास्य–व्यंग्य, अन्योक्ति, विल्वपत्र(हाईकू), सीजो, तान्का, लघुविम्ब (Mono Emage), लिपिरूपक, लघुवर्ण काव्यादि के लक्षण, उपन्यास, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनचरित, आत्मकथा, यात्रावृत्त, कथा–आख्यायिका, लघुकथा(कथानिका) आदि काव्यों के लक्षण और इसके अतिरिक्त लोकगीतों यथा–सूत्रगीतम–्सोहर, वटुकम्–वरूआ, नक्तम्–नकटा, उत्थापनम्–उठान, प्रचरण–पचरा, चैत्रकम्–चैता, चतुस्तालम्–चौताल, फाल्गुनिकम्–फाग–फगुआ, होलोत्सवगीतम्–होलीगीत, स्कन्धहारीयम्–कहरवा, औष्ट्रहारिकम्–उंटहारागीत, लांगलिकम्–लांगुरिया, रसिकम्–रसिया तथा कजरीगीतम्–कजरी आदि का लक्षण एवं कुण्डलियाच्छन्दादि का प्रयोग आधुनिक संस्कृत साहित्य की उपलब्धियाँ एवं प्रयोग हैं। काव्यानुरूप नायक–नायिका की सृष्टि, काव्यप्रयोजन में राष्ट्रदेवप्रवोध एवं राष्ट्ररक्षा, राष्ट्र के स्वातंत्र्यवीरों और वीरांगनाओं का वर्णन, व्यास, विडम्बन, चेतनाप्रवाह एवं वार्तालापादि नवीन रीतियों का प्रादुर्भाव, प्रेमाह्लाद, विषादन, विभीषिका, व्यंग्य, कौतुक, जिजीविषा, अहंकार,स्मरण तथा साक्ष्यादि अलंकार, काव्यात्मा के रूप में सत्य एवं चमत्कारादि का प्रतिपादन तथा राष्ट्रभक्ति और विक्षोभ रसादि का समावेश आदि अर्वाचीन संस्कृत वाङ्मय की नवीन दृष्टियाँ हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में इन्हीं समस्त विषयों पर विचार–विमर्श किया जायेगा।

---

11. संस्कृतसाहित्ये अनभीप्सितमिति गद्यकाव्यस्य समीक्षणम्

सौम्या

अनभीप्सितमिति नामधेयेनैकं कथासंकलनमस्ति यत् नवाधिकद्विसहस्रेशवीयाब्दे(2009) साहित्य अकादमी पुरस्कारेण पुरस्कृतम्। अनभीप्सितमेकमभिनवचिन्तनात्मकं समसामयिकं गद्यकल्पं प्रवर्तते। इदं कथासंकलनं शास्त्रिणा प्रशस्यमित्रेण विरचितम्। अस्मिन् कथासंग्रहे द्वादश कथाः संकलिताः। कथासंकलने संकलिताः कथानामान्यधोलिखितानि विराजन्ते-

1. अमृता स्मृतिः
2. गुण्डा गुरुसिंहः
3. अनभीप्सतम्
4. विवशता
5. अनपेक्षितम्
6. अद्वितीयं प्रेम
7. जाज्वल्यमानं जीवनज्योतिः
8. प्रचण्ड-प्रतीक्षा
9. स्नेहसदनस्य स्वप्नः
10. अपराजिता
11. कथं पुनः प्रत्यागमः
12. अन्तिमम् आह्वानम्

आसु कथासु तृतीयकथायाः शीर्षकैवास्य कथासंकलनस्य शीर्षकरूपेण विराजितः। लेखकवर्याः अतिसरल-सहज-मधुर-सुष्ठुरीतिभिः एतासु कथासु जनमानसस्य आधुनिकपरिवेशजन्य संघर्षाणां वर्तमानसामाजिकदशानाञ्च वर्णनं प्रदर्शन्ति। आधुनिकसमाजस्य सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक-धार्मिकप्रवृत्तीनां जीवनमूल्यानाञ्च स्वाभाविकचित्रणं चित्रयन्ति कथासंकलने विशेषरूपेण नारीसमस्यानां। आसां प्रवृत्तीनां प्रकाशनमेव शोधपत्रस्य मुख्योद्देश्यो वर्तते तथा अनेन सार्धमेव जनमानसस्य हृदयैनं कथासंकलनं प्रति अधिजिगांसSपि वर्धेत, अयमपि मम प्रयासः। अस्य विस्तृतविवरणं मया शोधपत्रे प्रस्तोस्यते।

---

12. भारतीय काव्यशात्रीय परम्परा में अर्वाचीन प्रमुख तीन काव्यशास्त्रीयों का नूतन योगदान

डॉ.रवीन्द्र कुमार खाण्डवाला

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, श्री एच के आर्ट्स कॉलेज अहमदाबाद।

भारतीय संस्कृत काव्यशास्त्र का विश्वकविता के विवेचन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान है। आचार्य भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के बाद भामह, दण्डी ने काव्यशास्त्र को उन्नत किया, तो वामन,रुद्रट,आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त,कुन्तक,राजशेखर,क्षेमेन्द्र,जगन्नाथ आदि ने भी उसे पोषण प्रदान किया। इस महान श्रृंखला को बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में रेवाप्रसाद द्विवेदी, ब्रह्मानन्द शर्मा, शिवजी उपाध्याय, गोविंदचंद्र पांडेय, जैसे काव्यमर्मज्ञ पंडितों ने गौरवान्वित किया। 21वीं शताब्दी में हमें प्रमुख रूपसे राधावल्लभ त्रिपाठी का अभिनव काव्यलंकारसूत्र, राजेन्द्र मिश्र का अभिराज यशोभूषण और हर्षदेव माधव का वागीश्वरीकंठसूत्र प्राप्त होता है। प्रस्तुत शोधपत्र में इन प्रमुख तीन अर्वाचीन काव्यशास्त्रियों के नूतन योगदान को उजागर करने का प्रयास है। आचार्य राधावल्लभजी ने अलम्भाव, सत्य और पूर्णता जैसे तीन नूतन काव्यतत्वों के साथ अलंकार सिद्धान्त के काव्यशास्त्र की रचना की है। राजेन्द्र मिश्र जी ने आनन्दवर्धन की चिन्तन पीठिका को अभिराजयशोभूषण में स्पष्टता एवं लाघव प्रदान किया है।इस काव्यशास्त्र को 21वीं शताब्दी में ध्वनिसिद्धान्त का प्रतिनिधि कह सकते हैं।तृतीय अध्येय काव्यशास्त्र है वागीश्वरीकंठसूत्र। आचार्य हर्षदेव माधवने अपने काव्यचिन्तन को मैत्री, मुदिता, करुणा,उपेक्षा जैसी चार वासनाये कि जो बौद्धदर्शन, योगदर्शन एवं शक्ततंत्र में प्रतिपादित है, उन चार वासनाओ की पीठिका पर काव्यशास्त्र की रचना की है।पौर्वात्य और पाश्चात्य दोनो काव्यसृष्टिओ को अपने में समेट ले ऐसे काव्यशास्त्र की खोज इस वागीश्वरीकंठसूत्र के सर्जन से पूर्ण हुई है।

---

13. अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्यसन्दर्भे आचार्यसत्यव्रतशास्त्रिमहाभागस्य रचनासमीक्षणम्

डॉ. शिप्रा राय

एसोसियेट प्रोफेसर, संस्कृतविभागः, त्रिपुराविश्वविद्यालयः

साम्प्रतिकयुगे अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्ये आचार्यसत्यव्रतशास्त्रिमहाभागानां स्थानं प्रथमतया गण्यते । पद्मश्रीः- पद्मविभूषणः- राष्ट्रपतिसम्मानः- आधुनिकसंस्कृतमहाकविः ज्ञानपीठइत्यादिभिरुपाधिभिर्विभूषिता एते विद्वांसः । आचार्यशास्त्रिप्रवरः न केवलं भारतवर्षे अपितु विदेशेष्वपि संस्कृतभाषासाहित्यस्य प्रचारे-प्रसारे दृढ़मनसा संलग्ना। आचार्येण त्रीणि महाकाव्यानि, त्रीणि खण्डकाव्यानि, प्रबन्धकाव्यमेकं, पत्रकाव्यमेकं,पञ्चसंख्यकाः समालोचनात्मकाः ग्रन्थाः विरचिताः ।

शोधपत्रेऽस्मिन् मया आचार्यशास्त्रिवर्याणां कृतीनां समीक्षणं विधास्यते यथा आचार्यसत्यव्रतशास्त्रिमहाभागैः 'थाईदेशविलासम्' इति शीर्षकेण रसमयं यात्राकाव्यं रचितम् । काव्येऽस्मिन् थाईलैण्डवास्तव्यानां वस्तुस्थितीनां सुरुचिपूर्णं चित्रमयं वर्णनं प्रस्तुतम् । ग्रन्थेऽस्मिन् आचार्यस्य स्वानुभूत्यात्मकं वर्णनं दरीदृश्यते । आचार्यवरेण अनेकानि वर्षानि थाईदेशे शिल्पाकोणविश्वविद्यालये संस्कृतविभागे अतिथिप्राध्यापकरूपेण कार्यं कृतमस्ति । काव्येऽस्मिन् थाईदेशस्य प्रकृति-सुषमा, ऐतिहासिकमहत्त्वञ्चाभिलक्ष्य काव्यवर्णनं दृश्यते । यथा च –

'ऐश्वर्यसौन्दर्यविलासधानी बैंङ्काकनाम्नी खलु राजधानी'

'इन्दिरागान्धिचरितम्' इति काव्ये इन्दिराप्रियदर्शिन्यः सुन्दरस्वरूपस्य कुमारसम्भवमहाकाव्ये वर्णितं पार्वतीसोन्दर्यवर्णनमनुसृत्य वर्णनमकरोत् । महाकाव्येऽस्मिन् पञ्चविंशतिसर्गेषु प्राक्तन भारतीया प्रथममहिला प्रधानमन्त्री इन्दिरागान्धिमहाभागायाः जीवनचरितं प्रदर्शितम् । थाईदेशीया रामकियेन रामकथामाधृत्य शास्त्रिणा 'श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम्' विरचितम् । महाकाव्येऽस्मिन् पञ्चविंशतिसर्गेषु नवोत्तरद्वादशशतपद्येषु च थाईदेशीया रामकथा निरुपिता । इयं थाईदेशीया रामकथा श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणाद् भिन्ना वर्तते । रामकथा थाईदेशे 'रामकियेन्' इति नाम्ना प्रचलिता ।

चतुर्दशसर्गात्मकं 'श्रीबोधिसत्त्वचरितमहाकाव्यम्' जातककथामनुसृत्य बुद्धजन्मजन्मान्तरवृत्तान्तमनुसृत्य रचिता एका सुललिता शोभना रचना ।

'बृहत्तरं भारतम्' इत्यस्मिन् ग्रन्थे भारतस्य सर्वविधं वैशिष्ट्यं कविना सुरुचिपूर्णं वर्णितम् । आचार्यशास्त्रिवर्यैः भारतीयपरम्परामधिकृत्य 'सुभाषितसाहस्री' इति कृति रचिता । ग्रन्थे अनेकानि ललितानि सूक्तिवचनानि रचितानि सन्ति काव्येऽस्मिन् भारतीयसंस्कृतेर्संरक्षणस्य भावना परिलक्ष्यते । शास्त्रिणा 'श्रीगुरुगोविन्दसिंहचरितम्' इत्यस्मिन् काव्ये शिखमतस्य दशमगुरु श्रीगुरुगोविन्दसिंहस्य जीवनवृत्तान्तस्य चर्चा कृता । जर्मनीदेशः संस्कृतसमाजे ख्यातिलब्धः । अगणिताः जर्मनदेशीयाः विद्वांसः संस्कृतक्षेत्रे अवदानं दत्तवन्तः । आचार्यवरैः जर्मनदेशमाहात्म्यमाश्रित्य 'शर्मण्यदेशः सुतरां विभाति' पुस्तकमिदं सुष्ठुरूपेण विरचितम् । काव्यमिदं भ्रमणसाहित्ये परिगण्यते ।

शास्त्रिवर्येण ‘Contribution of Muslims to Sanskrit Literature’ इति शीर्षकेण निबन्धात्मकं पुस्तकं विरचितम् । पण्डितचारुदेवशास्त्रिसूनुः पण्डितसत्यव्रतशास्त्रिमहाभागाः नवनवोन्मेषशालिनीप्रतिभया शब्दचातुर्य्येन उभयविधालङ्कारप्रयोगकोशल्येन सहृदयहृदयेषु मनोज्ञतायाः सञ्चारं प्रसारयति ।

सङ्गोष्ठ्यां मया आचार्यसत्यव्रतशास्तिविरचितसाहित्यमधिकृत्य शोधपत्रं प्रतिपादिस्यते ।

---

14. Stylistic comparison between *Yājňasenī* and its Sanskrit Rendering

Sourav Pal

Guest Lecturer in Sanskrit, Katwa College, Katwa, West Bengal-713130

Style can be defined as the technique an individual author applies in his writing. Baffon observes “Style is man’s own, it is part of his nature.” It varies from author to author as it depends upon one’s syntax, word choice, tone etc. It is the voice of the author by which he wants to reach to his expected readers when they read the piece. When it is the matter of translation from one language to another, then not only author concerned but language also is changed. As every language has its own distinct characteristics, it has great impact in stylistic level. Renowned Odia writer Pratibha Ray is crowned with the Moortidevi (1991) and Jnanpitha (2011) award for her Odia novel *Yajňasenī.* Prof. Bhagirathi Nanda, a prominent scholar, translated this great work into Sanskrit. We, in this paper, shall try to demonstrate how the stylistic features are differed from the source or Odia language to the target or Sanskrit language.

The linguistic differences between Odia and Sanskrit language are very little. Pratibha Ray, in her novel, uses dialogue method mostly to depict the characters like Yajnaseni. The translator follows her extensively. Still the style of Prof. Nanda, expressing his talent in Sanskrit, is very elegant and polished. He is able to develop the subtle expression of the original frankly through the imposing Sanskrit language. A brief study in this regard shall take ahead the stylistics studies in Sanskrit literature.

---

15. A Brief Survey of Kerala's Historical Kavyas in Sanskrit

Ramadevi Menon

Ancient Sanskrit writers did not attach any importance to writing history as it is understood at present. But it is not true to hold that they had no historical sense. From the Vedic Age we find past events described in Vedas and other later literature though shrouded in imaginative narration. Literary creations dealing with historical events are called historical kavyas. We have celebrated historical

kavyas like Rajatarngini and Harsacarita Kerala has also produced a few literary works of this type.

The above Survey enables us to trace a rough outline of the changing ideas on history in Kerala. What was said about the history of ancient India is true of ancient Kerala as well. One rarely comes across any authentic historical account from the ancient writers of Kerala. Instead of historical narratives, one generally finds mythological accounts interspersed with historical gleanings. However, there are a few poems of some historical importance. But they were most probably written after the 10th century A.D.

---

16. The *Gandhadūtam*: A Social Messenger

Tumpa Dey

The *Gandhadūtam* (a fragrance messenger) is a dūtakāvya, composed by ShriParamananda Shastri, the former chair-person of the Sanskrit department of the Aligarh Muslim University. The composition has a great importance in our society. Here the author has represented a common problem which can naturally be seen as a disease in many families. The addiction to wine destroys slowly one's family. In *Manusaṁhitā* Ācārya Manu included and described the 'drinking' as one of the ten 'evil passions' (kāmaja vyasana).

In this composition we introduced a person who was addicted to liquor and misbehaved with his wife. His wife tried her best to stay with him, but once she became impatient, she left her husband's house with great sorrows and having heavy heart. But still the person did not get any lesson rather kept on drinking liquor as long as his wealth was with him. At that very moment he had many friends who had been with him as long as he was wealthy. But when he expanded his all belongings no friends were with him and he became reclused. He started feeling his wife's absence and he felt vacant everywhere like bedroom, balcony etc. Once he is being frustrated decided to commit suicide. For this he arrived at a lake having bloomed fragrant lotuses. He saw the beauty and felt the sweet fragrance of the flower. A gallant was spreading the flower pollen at the surroundings of the place. Having seen that sight he asked himself if a lotus could expand itself (its petals) in a very pomping way being the part of mire why not he can retrieve himself from that dark world and lead himself in a proper way. So, he thought he could also start his life with his wife in a beautiful way.

But his wife was in her paternal home in Varanasi at that time. She was offended and arrogant with him for what kind of misbehavior he had done with her. So, he would try to break her egos. The sweet serene air or the sweet fragrance which diverted his mental disorder, he requested to that aromatic air to bear the news of him that state of mind to his estranged wife and make her understand about him so that she could change her mind and also requested it to persuade her to return her in-law's house.

Though the way of its composition style is resemble to Kālidāsa's *Meghadūtam*, the author represented his genius and a picture of modern India through the *Gandhadūtam*. These all are will be discussed in the proposed article.

---

17. व्यथा कैकेयी कि

रजनी झा

मन्थरा ने 'देवासुर संग्राम' को स्मरण कर कैकेयी को समझाती है कि यही समय है दशरथ से प्राप्त वर को प्रयोग कर अपने भरत की राज्याभिषेक करवाने की. खुद कैकेयी सोचती है कि -इस तरह भरत राजा भी बन जायेगा और रघुकुल की रीत पर भी आंच नहीं आएगी.

जब कैकेयी अपना कर्तव्य निर्वाह करती है तो बदले में उसे क्या मिलता है? घर , परिवार और यहाँ तक कि खुद का बेटा भरत भी उससे घृणा करने लगता है. होम करते हाथ जल जाता है कैकेयी का. वह सभी से दुत्कारी जाती है. कोई यह समझने का प्रयास ही नहीं करता कि वह तो पहले रघुकुल की मर्यादा बचाकर सच्ची कुलवधू बनाना चाहती थी और साथ में माँ का कर्तव्य भी निभाना चाहती थी. पर प्रथम था कुल का मर्यादा .
कैकेयी की व्यथा कोई नहीं समझ पा रहा. उसने मर्यादा हेतु पति खोया. राम , जिसे वह प्राणों से भी अधिक स्नेह करती थी ,उसे दूर करना पड़ा और भरत जो उसके कोख से पैदा हुआ था , उसने भी मुंह मोड़ लिया. वह भी उसे गलत समझने लगा|

यह कोई क्यों नहीं मानता कि कुल की मर्यादा प्रथम है, अगर दशरथ अपनी वचन तोड़ देते तो क्या आज कोई भी 'रघुकुल रीत सदा चली आयी, प्राण जाये पर वचन न जायी ' कह पाता ? फिर जहाँ कैकेयी की प्रशंसा होनी चाहिए थी वहां उनको लोग खलनायिका के रूप में देखते हैं और यह कैकयी के लिए सबसे बड़ी दारूणस्थिति है ,यही सबसे बड़ी व्यथा भी है ।

---

18. ''राजस्थान में शतक काव्य परम्परा''

Gopal Verma

संस्कृत साहित्य में 'शतक–काव्य' :–

गीतिकाव्य के साथ उपदेशकाव्य का गहरा सम्बन्ध है। बहुत सी रचनाओं में गीतिपद्य एवं उपदेश वाक्य इस प्रकार घुले मिले है, कि उनके विभाग में विप्रतिपत्ति हो जाती है। भारतीयों ने काव्य के क्षेत्र में उतनी दक्षता प्राप्त नहीं की जितनी गहनता उपदेश काव्यों में देखने को मिलती है। ये उपदेशकाव्य मुख्यतः'शतकों' में लिखे गये । बहुत सी लोकोक्तियॉ जो रसिक समाज में प्रचलित रही है। जिनके रचयिता साधारणतया विस्मृत हो गये है, 'शतकों' में संगृहित है।'

'शतक काव्य वस्तुतः अन्योपदेशक हुआ करते हैं। किसी बहाने गुण और दोष को इंगित कर सद्धर्म की शिक्षा देना ही इन काव्यों का मुख्य लक्ष्य होता है। विश्व की चराचर वस्तुएं यथा वृक्ष लता पक्षी मृग वायु आकाश भूमि पर्वत समुद्र मेघ सूर्य चन्द्र कमल भौंरा आदि अन्योपदेश काव्यों के विषय हैं।

हाल की 'गाथा शप्तशती' से 'शतक–परम्परा का प्रारम्भ माना जा सकता है। इसकी वृत्तसंख्या सात सौ हैं जिनमें प्राकृत गीतों का निबन्धन किया गया है। तदुपरान्त भर्तृहरि का नाम आता है। इनके 'शतक–त्रय प्रसिद्ध हैं श्रृंगार शतक नीतिशतक और वैराग्यशतक। अमरूकवि का अमरूकशतक अपने समय का महत्वपूर्ण काव्य है। इसमें काम प्रधान जीवन का वर्णन किया गया है। परवर्ती कवितयों द्वारा अधिक ललित छन्दो के सहारे व काव्य – शैली के माध्यम से काव्यकला में भर्तृहरि से आगे बढने का प्रयास किया है, पर उनके विचारोत्कर्ष तक कोई भी कवि, किसी भी समय में नही पहुंच पाया है। वस्तुतः भर्तृहरि को 'शतक – काव्य' का 'आदि पुरूष' कहा जाये तो अत्युक्ति नही होगी।

---

19. आधुनिकसंस्कृतसाहित्ये निवेदिता-निवेदितमिति नाटकस्य नवीनं दिग्दर्शनम

मौसुमीपालः (गवेषिका)

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (श्रीसदाशिवपरिसरः, पुरी, ओडिशा)

पितामहब्रह्मा चतुर्णां वेदानां साररूपत्वेन नाट्यवेदं रचयामास । नाट्यवेदस्योत्पत्तेः कारणादेव स ऋग्वेदात् संवादतत्त्वम्, सामवेदाद्गीतम्, यजुर्वेदादभिनयम्, अथर्ववेदाच्च रसग्रहणं चकार । नाट्यशास्त्रस्योत्पत्तिप्रसङ्गे भरतमुनिना ऊचे –

"जग्राह पाठ्यं ऋग्वेदात् सामेभ्यः गीतमेव च ।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानायर्वणादपि ॥" (नाट्यशास्त्रम् – १.१७)

काव्येषु रम्यं नाटकं रम्यमिति वचनात् ज्ञायते यत् नाटकन्तु साहित्यस्य सर्वोत्कृष्टं रत्नम्। नाटकस्यास्य विशुद्धधाराया अवगाहनेन मानवहृदयमाह्लादितं भवति । संस्कृतसाहित्यस्य नाटकपरिशीलनेन ज्ञायते यत् सुबन्धुरचितं वत्सराजचरितम्, देवलप्रणीतं इन्द्रविजयमित्यादीनां नाटकानां नामोल्लेखो दृश्यते । परन्तु केवलम् एतेषां नाटकानां नामोल्लेखो दृश्यत एव परन्तु इमानि नाटकानि दृष्टिगोचराणि न भवन्ति इत्युक्ते नैव प्राप्यन्ते। संस्कृतसाहित्ये भासकृतं नाटकमेव सर्वप्राचीनमिति मन्यते।

संस्कृतनाटकानामेषा परम्परा आधुनिकसंस्कृतनाट्येष्वपि दृश्यते । विविधासु नाट्यकारासु डा.रमाचौधुरी अन्यतमा। तया तु अनेकानि नाटकानि विरचितानि सन्ति तेषु नाटकेषु अन्यतमं भवति निवेदिता – निवेदितम्।

नाटकस्यास्य प्रस्तावनायां सूत्रधारेण उक्तमस्ति यत् –

"अहो ! परमानन्द प्रसन्नो दिवसोऽयम् । यद्वयम् आकाशवाणी-भगिनी-निवेदिताजन्मशतवार्षिकोत्सव – कर्तृपक्षैरादिष्टाः स्म – श्रीसारदासुतायाः लोकहितायाः शोकातीतायाः श्रीनिवेदितायाः पूत-जीवनलेख्यमाश्रित्य रचितं किञ्चित् संस्कृतनाटकं नाट्ये प्रयोक्तव्यमिति । तद्वयं कलिकातास्थ –प्राच्यवाणी- सदस्याः रवीन्द्रनाथविश्वविद्यालयोपाचार्य-डक्तर-रमाचौधुरिणा विरचितम् अभिनवं संस्कृतनाटकं निवेदिता-निवेदितं नाट्ये प्रयुक्तमुद्यताधीराश्च वर्तामहे ॥" (नि.निवे.पृ. २)

नाटके भगिनी निवेदिता प्रचण्डमार्तण्डमूर्तिरेव प्रखरतेजा, सुतीक्ष्णशरधारेव युक्तिशाणिता समुन्नत-हिमाचल-कान्तिरिव-गम्भीरादिना रूपेण चित्रिता।

तस्माद्धेतोः नारीणां सर्वशक्तिमत्त्वस्य श्रीश्रीसारदामणिदेवी। तस्याः प्राणप्रतिमदुहितायाः भूमस्वरूपिण्याः श्रीनिवेदितामातुः विशाल-गम्भीर-पुण्यधन्य-जीवनस्य प्रतिविम्बस्तु मया शोधप्रबन्धेऽस्मिन् मुख्यालोचितो विषयत्वेन स्थापितोऽस्ति।

---

20. लक्षणों की दृष्टी से *'Vaideshikatanam'* महाकाव्यत्व पर शोधपरक विवेचन

Vinod Gupta

संस्कृत महाकाव्य लेखन की सुदीर्घ परंपरा रही है। स्वातन्त्र्योत्तर काल में भी इसके लेखन की सत्यता अद्यावधी पर्यन्त प्रभावमान है । इस समय दो प्रकार के महाकाव्य लिखे गए है । एक वह जो काव्यशास्त्रीयाचार्यों द्वारा प्रदत्त महाकाव्य लक्षण को ध्यान में रखकर लिखा गया और दुसरा वह जो समग्रता में लक्षणों की कसौटी पर खरे नही उतरे अर्थात विषय के अनुसार लिखे गए। इसी श्रेणी में आता है हरिदत्त शर्मा का ''*Vaideshikatanam*'' महाकाव्य। प्राकृत महाकाव्य वैदेशिक संस्कृति को विषय बनाकर लिखा

गया है। इसमें कतिपय लक्षण तो प्राप्त होते है। यथा सर्गों में इतिवृत्तों का विभाजन, सर्गान्त में छन्द परिवर्तन आदि किन्तु नायक रस आदि के विषय में कवि लक्षणों का अतिक्रान्त कर जाता है। जो विषय सापेक्ष हैं। विषय आदि की दृष्टी से यह महाकाव्य सर्वथा नवीन प्रतीत होता है। प्राकृत शोध पत्र में लक्षणों की दृष्टी से इसका महाकाव्यत्व पर शोधपरक विवेचन किया गया है।

---

21. संस्कृत संरक्षणकर्ता : सवाई जयसिंह

ओम नमो नारायण उपाध्याय
शोधच्छात्र, संस्कृतविभाग, कलासंकाय काशीहिन्दूविश्वविद्यालय, वाराणसी

लंकापतेः संकुचितं यशो यद् यत् कीर्तिपात्रं रघुराजपुत्रः।
स सर्व एवादिंकवेः प्रभावो न कोपनीयाः कवयः क्षितीन्द्रै।।

महाकवि श्रीविल्हण कवि के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहते है कि लंकापति रावण के अपयश और दशरथपुत्र राम के यश का कारणभूत एकमात्र वाल्मीकि का प्रताप है। अतः राजाओं का सर्वप्रथम कर्तव्य है कि वह कवि को कभी भी कुपित न करें।

महाकवि की यह उद्घोषणा वैदिककाल से अद्यावधि शाश्वत सत्य प्रतीत होती है। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही समस्त कवियों को राजाश्रय प्राप्त था। कवियों को प्रभुत्वशाली लोगों का संरक्षण कभी उनके साहित्य प्रेम से कारण प्राप्त होता था, तो कभी उनके कुल, शौर्य, वैभवादि का गौरवगाथा वर्णन करने के लिए।

जयपुर के इतिहास का सूक्ष्मावलोकन करने से कछवाहावंशीय शासकों का साहित्य, संगीत, संस्कृत एवं संस्कृति के प्रति अनन्य प्रेम देखने को मिलता है। आमेर एवं जयपुर के राजा सदैव अपनी वीरता, पराक्रम एवं वैभव के कारण ही नहीं, अपितु वे अपनी प्रगाढ़ भगवद्भक्ति, गुणज्ञता, विद्याप्रेम, कलानुराग, संस्कृति संरक्षण तथा पाण्डित्य के लिए भी प्रसिद्ध हुए हैं। यही कारण है कि महाराजा पृथ्वीराज (1559 सं.) से लेकर अद्यावधि तक शायद ही ऐसा कोई राजा होगा, जिनके आश्रय में एक न एक ख्यातिलब्ध कवि या लेखक न हुआ हो। इसी का सुपरिणाम है कि आमेर और जयपुर में अनेकानेक कवि, पण्डित, विद्वान्, लेखक, शायर, कारीगर, शिल्पशास्त्री, चारण आदि हुए है, जिनके कारण जयपुर को बारम्बार गौरवान्वित होने का अवसर प्राप्त हुआ। इन राजाओं में विशेषतः जयसिंह द्वितीय का शिक्षा एवं संस्कृत साहित्य से असीम प्रेम था। इनके शासन में संस्कृत साहित्य का विकास एवं उत्कर्ष देखकर विद्वानों ने इस काल को संस्कृत साहित्य का स्वर्णयुग स्वीकार किया है। इस लघुशोध पत्र में जयसिंह द्वितीय के संरक्षण में संस्कृत कवियों एवं उनके ग्रन्थों पर विशेष चर्चा की जाएगी।

---

22. नीतिशास्त्र एवं वर्तमान समय में इसकी अनिर्वायता :

डा0 रामजी मेहता,

आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, मालीघाट,

''युग–युग के संचित संस्कार, त ऋषि–मुनियों के उच्च विचार।
धीरों–वीरों के व्यवहार ही है, नैतिक मूल्यों के श्रृगांर।''

वैदिक साहित्य के अवलोकन के पश्चात हमें ज्ञात होता है कि वैदिकत्रृषियों ने मानव व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास का आधार स्तम्भ नैतिकता को माना है। नैतिक ज्ञान ही मानव को मानव बनाती है,क्योंकि नैतिक गुणों के बल पर ही मनुष्य वंदनीय , गुणी एवं पूज्य बनता है। नीति से नैतिक तथा नैतिक से भाव अर्थ में तल प्रत्यय करने पर नैतिकता शब्द की निष्पत्ति होती है, जिसका व्युत्पत्ति परक अर्थ है :– नयतीति नीति : अर्थात् 'नीयते –पुरूषार्थफलाय सर्वजगत् यया सा नीतिः।' तात्पर्य है कि जो शिक्षा अपनी युक्तियों के द्वारा सम्पूर्ण मानव को उसके जीवन की अभिष्ट लक्ष्य एवं परं पुरूषार्थ धर्म, अर्थ, काम मोक्षादि की प्राप्ति के लिए उचित मार्ग की ओर अग्रसर करे उसे नीती कहते है।

नैतिकता के अन्तर्गत सत्यता, अहिंसा , शिष्टता , विनम्रता , सुशीलता आचार–विचार , रहन–सहन , संयम–साधना, भाषा–भाव, सभ्यता–संस्कृति, आदि आते है, जिनका सम्यक रीति से संवर्धन तथा मानव मात्र के लिए प्रकाश –स्तम्भ और शक्ति के स्रोत वैदिक वागंमय में नीहित नीतिपरक ग्रन्थ है। कहा भी गया है –''सर्वज्ञानमयो हिस्र :''

आज हमारा जीवन भटकाव की ओर अग्रसर है। नैतिकता का मार्ग कण्टकाकीर्ण प्रतीत होता है। मनुष्य के जीवन का आयाम व्यक्तिपरक तक सीमित हो गया है जबकि सामाजिक प्राणि के रूप में प्रतिष्ठित मनुष्य के जीवन का आयाम क्रमशः परिवार, समाज, राष्ट्र, तथा वैश्विकस्तर की समष्टि धारा के रूप में जनकल्याणमय की सुख शान्ति एवं समुद्धि के लिए कार्य कर जीवन को सार्थक बनाना चाहिए।

हम सब को विदित है कि यह समय कलियुग का है अतएव मानव–प्रवृतिया कलियुग के गुणों से अभिभूत है। यास्क ने कहा भी है। ''कूलि : कत्नाश्च कृ– पिक्षेपे इत्यस्मातधात्ो : साध्या :। कलौ वचांसि अन्योन्यंविक्षिप्यन्ते कला अपि राशे : विक्षिप्ता भवन्ति। अर्थात् इस वैश्वियकयुग में शास्त्रों की सब व्यवस्थाएं बिखरी रहती है तथा अपनी मर्यादाओं को छोड़ देते है। लोग शास्त्र विपरीत आचरण करने लगते है। ऐसी स्थिति में नैतिक, धार्मिक, आर्थिक, समाजिक आदि क्षेत्रों में भयावह अवनति हुई है। परिवार में माता–पिता–भाई–बहन पुत्र–पुत्री आदि संबंध अमर्यादित होते जा रहे है। धन की लोलुपता इतनी अधिक बढ़ गई है कि मनुष्य उसकी पूर्ति में अनेका–नेक अनुचित साधनों का प्रयोग करते है। एक कवि ने सत्य ही कहा है–

'बन्दूक की बगावत और गोलियों की भाषा, बारूद की धुएं ने आकाश को तराशा।
दंगो के इस शहर में लावारिशों की लाशें, इस खून की नदी में किस–किस को हम तराशे।
मजबुर जिन्दगी की गूंगी जुबान है। यह इक्कीसवीं सदी का हिन्दुस्तान है।'

नैतिक दृष्टि से आशातीत गिरावट आयी है। नैतिकता दिन–प्रतिदिन पृथ्वी से लुप्त प्राय होती जा रही है। आज की परिस्थितियों में नैतिक मूल्यों की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता इहलौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार की उन्नति के लिए आवश्यक है।

क्योंकि मानवीय समानता की भावना पर ही समग्रतया नैतिक जीवन का विकास हुआ है। जिस प्रकार किसी भी मनुष्य में मानसिक विकारों और दुर्गणों का पाया जाना स्वभाविक है उसी प्रकार किसी भी समाज में असमाजिक तत्वों का अस्तित्व हो सकता है। परन्तु उनके प्रति लोगों का क्या व्यवहार और विचार है, इससे उस समाज के नैतिक दृष्टि कोण का बोध होता है। नीतिगत विधाओं में द्वेष, कलह, घृणा, चोरी, द्युतर्ता, कपट, हिंसा, ईर्ष्या, क्रोध, आदि प्रतिकुलभावों के निराकरण की भूरिश : प्रार्थनाए है , तो साथ ही धर्म विरूद्ध आचरण करने वाले शत्रुओं, अपराधियों को शमन की कामनायें की गई है यथा – त्याग और लोभहीन होने का उपदेश द्रष्टवय है।

तेन त्येक्तेन भुंजीथा मा गृघ : कस्य स्विद्धनम्। वा0सं040।

अतः प्रस्तुत शोध–पत्र सामान्यत स्वीकृत विषय के परिपेक्ष्य में सर्वसम्मुख प्रस्तुत करने का एक क्षुद्र प्रयास है। मेरा तो यही मानना ह कि – 'सर्वेभवन्तु सुखिनः'

स्थापित करने के लिए नीतिशास्त्र की प्रांसंगिकता एवं अनिवार्यता को मानव मन में पिरोना ही होगा तभी समाज स्वस्थ्य एवं सुदृढ़ बन सकेगा ।

---

23. मेघदूत में अलंकारों का विधान

डा0 सुमन कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर साहित्य विभाग (संस्कृत)

प्रस्तुतेऽस्मिन् शोधपत्रे महाकविकालिदासस्य कृतिः मेघदूते प्रयुक्तः अलंकार विषयममधिकृत्य विश्लेषणम् कृतमस्ति।

कविवरेण्य कालिदास सरस्वती के अमर पुत्र तथा साहित्य भारती के शास्वत श्रृंगार है। कवि का वैदुष्य एकांगी न होकर सर्वांगीण है। वस्तुतः महाकवि की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। क्या साहित्य क्या व्याकरण, क्या दर्शन? सभी शास्त्रों में उनकी अच्छी पैठ थी। इनकी भाषा सौष्ठव सालंकार है। कविराज को अलंकार प्रयोग में विशेष दक्षता प्राप्त थी। इनके द्वारा प्रणीत 'मेघदूतं' नामक गीतिकाव्य इसका ज्वलन्त प्रमाणा है। इस काव्य में कवि ने प्रचलित प्रायः सभी अलंकारों का प्रयोग किया है। भामह, दण्डी, रूद्रट आदि अलंकारवादी काव्य शास्त्रीय चिंतकों को यथेष्ट सम्मान देते हुए अपने इस खण्डकाव्य में समस्त अलंकारिक तत्वों का चित्रण अत्यन्त मनोहारी रूप में चित्रित किया है जो भाव–भाषा एवं अलंकार सौष्ठव के अद्भूत छटा से अभिभूत होकर रस

परिपाक में सहायक है। इनकी शैली में कही उपमाओं का लालित्य है तो कहीं अर्थान्तरन्यास का अर्थ गाम्भीर्य, तो कहीं उत्प्रेक्षा अलंकारों की अनुपम छटा, उपस्थित है। प्रस्तुत गीतिकाव्य 'मेघदूत' एक विरह–काव्य है, जो (110) एक सौ दश श्लोकों से निबद्ध है। कहीं–कहीं श्लोको की संख्या अन्तर है। पूर्व मेघ और उत्तर मेघ इसके दो खण्ड है। इसमें अलंकारों का यथास्थान समुचित प्रयोग हुआ है, जिससे काव्य का नैर्सगिक सौन्दर्य निखर आया है। इसमें उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का जों सुन्दर–विन्यास प्रयुक्त है उनकी विस्तृत विवेचना कर काव्य में अलंकारों की अपरिहार्यता सिद्ध करना ही प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है। आशा है इस शोध–पत्र में संस्कृत साहित्य क`मूर्घन्य कवि कालिदास की शास्त्रीय दक्षता तथा विचारों की परिपक्वता के साथ–साथ अलंकारों की नवीनता दृष्टिगोचर होगी, जिससे वर्तमान कर्मशील अनुसन्धान वेत्ताओं के लिए उज्ज्वल मार्ग प्रशस्त होगा।

---

24. "तरुकथा" समीक्षणम्

डॉ0 कृष्णकान्त झा:

एशोसियेट प्रोफेसर सह अध्यक्ष, संस्कृत–विभाग, डरै- कॉलेज एल.एन.एम.यू., दरभंगा।

सहकारं वीतरसं, तरुमपि सकलविदं तनुते।

वास्तव्यं कविहृदये, किमपि महो जयतु वाग्देव्याः।।

अथ गतशताब्द्यां मैथिलमहाकविश्रीरामचन्द्रमिश्रप्रणीतस्य तरुकथा लघुकाव्यस्य समीक्षणं प्रस्तूयते–

विविधविद्याविद्योतिताऽन्तःकरणस्य महाकवेः श्रीरामचन्द्रमिश्रस्याऽनेकविधानेकरचनास्वेकतमं तरुकथा नामकं लघुकाव्यम्। अस्य काव्यस्य कल्पनाऽऽधारः आवासपार्श्वस्थितो जीर्णः सहकारतरुरेकः। तथाहि पूर्वावऽवतरे प्रणेत्रोक्तम्–

सरलतममपीदं व्यग्भवत् प्रौढबन्धं, लघुनि वपुषि बद्धं काव्यमव्याकृतांशम्।
समधिकरमणीयं वस्तु किं/द् विदध्यात्, स्फुटमिति न कदाचित् सरिरा''ंसनीयम्।।[1]

अयं भावः– स्फुटं वस्तु समधिकरमणीयं विदध्यादिति न कदाचिद् विद्वरिरा''ंसनीयम्। अत्र ध्वनिः मया तु शुष्कसहकारतरुमेवाश्रित्येदं लघुकाव्यमाततम्।

मयाऽपि मग्लाचरणे ''सहकारं वीतरसं तरुमपि'' इत्युक्त्वा कविहृदये वास्तव्यं वाग्देव्याः महसः जयोद्घोषः कृतो येन तादशोऽपि नीरसस्तरु सकलविदः सरसो विततः।

अस्मिन् तरुकथानामके लघुकाव्ये सहकारः स्वाधःस्थितं श्रोतारं पुरुषमभिलक्ष्य स्वजननादरभ्य स्वर्गगमनकालपर्यन्तस्य कालावधेः यावन्ति अनुभूततथ्यानि, तेषां प्रकटनव्याजेन समग्रभारतीय संस्कृति परम्परायाः सूक्ष्मतममपि रहस्यमुद्घाटितवान्। शान्तरसं प्रामुख्येनागीकृत्य प्रणीतेऽस्मिन् लघुकाव्ये कविकुलगुरोः कालिदासस्य ऋतुसंहारवत् सर्वेषामृतूनां विलक्षणं वर्णनं विततमस्ति। कथारम्भव्याजेन विं''ातेः पद्यानामवतरणं विधाय पद्यसंख्या एकविं''ातोः द्विचत्वारिंशत्तमं पद्यं यावद् वसन्तवर्णनं कृतम्।

ततः 'ाट्प/ा''ात् पद्येषु ग्रीष्मवर्णनं, चतुःसप्ततिपद्येषु वर्षावर्णनं, सप्तत्रिंशत् पद्येषु शरद्वर्णनं, सप्तभिः पद्यैः हेमन्तन्तोः वर्णनमथ च त्रयोविं''ातिपद्येषु काव्यस्योपसंहृतिरस्ति। सम्भूय 239 पद्यान्यस्मिन् लघुकाव्ये विराजन्ते। काव्यमिदं प्राचीनसंस्कृतकाव्यपरम्परापोषितं सदपि किं/न्नूतनं वैलक्षण्यं धारयति। तद्यथा–

1) ''उवाच'' शब्दप्रयोगः। 2) युग्मकम्–चिन्तनैक्यप्रदर्शनाय युग्मकमिति कोष्ठकेऽभिधाय पद्यावतरणं कृतमस्ति। काव्यमिदं लघुकलेवरमपि समग्रं काव्यगुणं सन्धारयति। तद्यथा– वसन्तवर्णने नवकुसुमवतीनां लतानां वर्णनप्रसगे कविः उपमां दर्शयति–

नवोदयोरोजकृतव्यलीका बाला इवोद्भूतमनोविकाराः।
जिज्ञासमाना अपि तन्निदानमन्यं न ताः प्रष्टुमपि प्र''ोकुः।।

ग्रीष्मवर्णने द''ाभिः' पद्यैः सहकारमाश्रित्य नूतनाः कल्पना नितरां द्रष्टव्या भवन्ति। वर्षावर्णने पक्षिणां कुलायनिर्माणं, मेघरूपनायकस्य दृढबाहुपा''ान्मुक्तये प्रयतमानविद्युन्नायिकाया वर्णन, नदीभिः लज्जां मर्यादा/ परिहाय सागरपतिना सह पलायनमेवं प्रभृति लोकोत्तरवर्णनाप्रस्तुतिरत्रकाव्ये पदे पदेऽधिगम्यते। शरत्सुषमावर्णनन्तु कवीनामतिप्रियन्तेनाऽत्राऽपि तत्तथैव, हेमन्तवर्णनं संक्षेपेण विधाय उपसंहृतिपद्यान्यवतार्य काव्यनिर्मितिः सम्पूर्णतामगात्। अन्ते च कविः सहकारस्य हार्दिकभावनामेवं प्रस्तौति–

न यत्र दुःखं न सुखं न चिन्ताए न द्वेषरागौ न च काऽपि भीतिः।
सदा''ायः संयमितस्वरुपो, भवे भवे स्यां तरुरेव भूयः।।

---

25. ādibhaṭlanārāyaṇadāsasya kāśīśatakasya viśleṣāṇātmakam adhyayanam

An analytical study of Kasisatakam, a travelogue authored by Adibhatla

Narayanadasu

डां. के. वरलक्ष्मीः उपनिदेशिका संस्कृत अकादमी, उस्मानियाविश्वविद्यालयः, हैदराबाद, तेलङ्गाणा

लौकिकसंस्कृतवाङ्मये मुक्तककाव्यानि महत्त्वपूर्णस्थानं वहन्ति। मुक्तककाव्यस्य लक्षणम् अग्निपुराणे उल्लिखितमित्थम् –

'मुक्तकं श्लोकं एवैकश्चमत्कारक्षमः सताम्।' अग्निपुराणम् – 337.36

मुक्तककाव्ये चमत्कारक्षमता प्राधान्यं भजति। मुक्तककाव्यानि शृङ्गाररसप्रधानानि भक्तिरसप्रधानानि स्तोत्रपरकाणि च भवन्ति। मयूरकवेः सूर्यशतकं, बाणस्य चण्डीशतकं, भर्तृहरेः नीतिशतकं, शङ्गारशतकं वैराग्यशतकम् इत्यीदीनि नैकानि मुक्तककाव्यपरम्परायाम् विराजन्ते। शतककाव्ये शतं श्लोकाः भवन्ति। कदाचित् शताधिकाः श्लोकाः अपि भवन्ति। श्रीमदज्जाडादिभट्लनारायणदासेन विरचितं

'काशीशतकं' मुक्तककाव्यपरम्परायामेव अन्तर्भवति। श्रीमदज्जाडादिभट्लनारायणदासः हरिकथापितामहः इति प्रथितः। सः बहुभाषाकोविदः।

आधुनिकरचनासम्प्रदाये 'Travelogue literature' यात्रावृत्तम् इति यत् व्यवह्रियते तदेव 'काशीशतकम्' इति निश्चप्रचं वक्तुं शक्यते। यतः श्रीमदज्जाडादिभट्लनारायणदासः क्रि.श. 1910 तमे वर्षे काशीयात्रां चकार। 'काशीशतके' काशीयात्रायाः वर्णनमेव प्रधानेतिवृत्तम्। काशीक्षेत्रस्य विश्वेश्वरस्य महिमानं वर्णयन् समकालिकसामाजिकस्थितिमपि अक्षरबद्धं चकार कविः। 'काशीशतकम्' इति यात्रावृत्तस्य विश्लेषणात्मकम् अध्ययनं नातिविस्तरेण शोधपत्रेऽस्मिन् प्रस्तूयते।

26.Fantasy and Romantica In the Poetic Tools Of Tava-Javādhara-Manmayarekhāsu

Mili Saha
Ph. D Scholar, Department of Sanskrit, Visva-Bharati Santiniketan

Arun Ranjan Mishra teaches Sanskrit in the Department of Sanskrit, Pali & Prakrit in Visva-Bharati, Santiniketan. He has authored 8 books of post-modern Odia poems and 2 collections of post-modern Odia mini-stories. He is the one of the harbingers of post-modernist poems in Sanskrit in the 21st century. He has to his credit two collections of post-modern poems in Sanskrit entitled "*Tava-Javādhara-Manmayarekhāsu"* (*TJMR*) (2018) and "*Netraprānte Niṣpandasamayaḥ*" (2019). In our present attempt we want to concentrate on the art of romantic fantasy through different modern poetic tools and figures of speech employed by the poet in his first book, *TJMR*.

---

27. बङ्गीयपण्डितनित्यानन्दमुखोपाध्यायस्मृतितीर्थस्य साहित्यिकप्रभावः

पापूराणीसासमल
शोधच्छात्रा(साहित्यविभागः), श्रीसदाशिवपरिसरः,पुरी

अयं कविः वैयाकरण-न्याय-पुराण-स्मृति-मीमांसादर्शनादि शास्त्रेषु पण्डितः। जीवनस्यार्धधिकभागः स कोरावागान चतुष्पाठ्यां कलिकातासंस्कृतमहाविद्यालये टोल-विभागे च पाठितवान्। 1994 तमे वर्षे प्रेसिडेन्ट आवार्ड प्राप्तवान्।"हाओडा संस्कृतसाहित्यसमाजे फाउन्डार" सेक्रेटरी आसीत्। निखिलबङ्गसंस्कृतिसेवासमिति मध्ये प्रेसिडेन्ट आसीत्। संस्कृतसाहित्यस्य विकासाय प्रसाराय च, सः आत्मानें नियोजितवान्।

तस्मिन् समये संस्कृतशिक्षकाणां छात्राणां च उन्नति विकासे स्वयं नियुक्तं कृतवान्। सः 110 संख्यकः संस्कृतरूपकानि, बङ्गलानाटकानि, सप्तसंख्यकः संस्कृतमहाकाव्यानि, 24 संख्यकः संस्कृतखण्डकाव्यानि रचितवान्। हिन्दुधर्मे पाण्डित्यपूर्णं प्रबन्धाः बंगला संस्कृतञ्च लिखितवान्।

कृतित्वम् –

- **ऐतिहासिकनाटकेषु** – अस्य षड् नाटकानि अन्तर्भूतानि सन्ति।
- **जीवनचरिताधारितनाटकानि** – जीवनचरितमवलम्ब्य विंशति नाटकानि प्रसिद्धानि सन्ति।
- **आधुनिकविषयमवलम्ब्य** – अस्य त्रीणि नाटकानि प्रसिद्धानि सन्ति।
- **अर्धैतिहासिकविषयमवलम्ब्य** – अस्य षोडश नाटकानि प्रसिद्धानि सन्ति।
- **अनुदितानि नाटकानि** – पञ्चदश सन्ति।
- **पौराणिकविषयमवलम्ब्य** – पञ्चचत्वारिंशद् नाटकानि प्रसिद्धानि सन्ति।

एवमेव आधुनिकवभ्गीयसंस्कृतसाहित्ये सामाजिक-शैक्षणिक-आध्यात्मिक-राजनऐतिक-सांस्कृतिकादि प्रभावः तत्र तत्र काव्यकवितानाटकेषु यथा शास्त्रं दृष्टान्तरूपेण प्रदर्शितम्। एतत् सम्पाद्य शोधपत्रस्य अपूर्वत्वम् अत्रैव सोत्स्यति इति। समाजाय किञ्चित् दिग्दर्शनमपि भविष्यति इति शम्

---

28. सामाजिक संवेदनाओं का सिद्धहस्त कवि - हर्षदेव माध

Mrigank Malasi

माधव का काव्य संवेदनाओं का काव्य है। संस्कृत कविता करने वाले से जनमानस प्रायः यही अपेक्षा रखता है कि उसके काव्य में संस्कार, मर्यादा, अनुशासन, गौरवगान आदि की बातें हों प्रायः उसके काव्य को अतीत के गौरवगान से ही जोडकर देखा जाता है परन्तु माधव ने इन समस्त भ्रामक विचारों को दूर किया है। माधव के बिम्बों की नवीनता और विचारों की मुखरता उन्हें अलग स्थापित करती है। आचार्य मानवीय संवेदना को अल्प शब्दों में ही प्रस्फुटित कर देते हैं, यथा- हरिणी हता व्याधेन निष्ठुरेण सायं खादिता सा पुनः श्वसिति। व्याधवध्वा वक्षसि।। माधव के काव्य में परम्परा के प्रति कोई दुर्भावना या दुस्साहस नहीं है वरन् अपनी विचारसरणि के माध्यम से उन तथ्यों को आगे बढाया जो चिन्तन प्रायः कालिदास सदृश महाकवि अपनी इस सन्तति के लिए छोड़गएथे। माधव कीशकुन्तला कालिदास की शकुन्तला की भाँति मौन रहना नहीं जानती अपितु वो प्रत्युत्तर देने का साहस करती है। दुर्वासा श्रापकी कल्पना कर दुष्यन्त को बचा लेने की लालसा नहीं है अपितु दुष्यन्त को कठघरे में खडा कर उसे साफ शब्दों में अवसरवादी कहने का साहस मादह की शकुन्तला ही कर सकति है। माधव की इस शकुन्तला में जहाँ एक ओर अपनी परम्पराओं का निर्वहण करने की ललक है तो दूसरी ओर परिपाटी को तोड़ने का साहस भी है।

---

29. विष्णुदासकृतमनोदूतकाव्यस्य दार्शनिकतत्त्वालोचनम्

असीमहालदारः

शोधच्छात्रः, हिमाचलप्रदेशकेन्द्रीयविश्वविद्यालयः

दूतकाव्यपरम्परायां मन: आधारितदूतकाव्यानां बाहुल्यं परिदृश्यते। मन: आधारितदूतकाव्येषु द्वे वैशिष्ट्येऽतिमहत्वपूर्णे भवतः, तौ यथा- एतेषु दूतकाव्येषु शान्तरसस्य भक्तिरसस्य वा प्रयोग: दृश्यते तथा एतेषां दूतकाव्यानामाधार: दर्शनं भवति। अन्यानि वैशिष्ट्यानि तु सामान्यदूतकाव्यानुसारीणि भवन्ति। मन: आधारितदूतकाव्यपरम्परायामतिमहत्वपूर्णं दूतकाव्यं वर्तते श्रीचैतन्यदेवमातुलविष्णुदासविरचितं मनोदूतम्। वसन्ततिलकच्छन्दसा रचितमिदं काव्यम्। विष्णुदासेन शान्तरसात्मके दर्शनाधारिते च अस्मिन् दूतकाव्ये दार्शनिकतत्त्वानां विश्लेषणमतिसारल्येन कृतम्।

यतोहि समग्रदर्शनानां मूललक्ष्यं भवति सामग्रिकदु:खानामात्यन्तिकनिवृत्तिः, अत: अस्मिन् मनोदूतकाव्येऽपि विष्णुदासेन प्राथमिकश्लोकेनैव दु:खानामात्यन्तिकनिवृत्तिविषये चिन्तनं कृतम्। दु:खानामात्यन्तिकनिवृत्ते: हेतुत्वेन तेन पञ्चमश्लोकेनोक्तं यत्, कालस्य समापनं न भवितुमर्हति, जन्तो: मरणञ्चावश्यकं भवति। अत: अज्ञानवशादेव वयमस्मिन् जगति स्वजन-वन्धुत्वादि बद्धत्वं प्राप्नुम: तथा अज्ञानवशात् स्वकर्मनिगडै: अर्थात् स्वस्य सकामकर्मवशात् कर्मचक्रेण वयमाबद्धाः भवाम: यस्मात् मुक्तिलाभ: असम्भवो भवति। अत: प्रवलगतिसम्पन्नमन: यदि परमात्मन:(श्रीकृष्णस्य) ज्ञानाय अभिप्रेरयामि चेत् तर्हि अज्ञाननाश: परमज्ञानस्योदय: तथा मोक्षप्राप्तिर्भविष्यति।

अस्य मनोदूतकाव्यस्य द्वादश-नवदशाभ्यां श्लोकाभ्यां परमात्मन:(श्रीकृष्णस्य) अस्तित्व प्रमाणाय अनुमानस्य, शब्दप्रमाणस्य(आप्तवचनस्य) च विधानं प्रदत्तम्। तथा चित्तस्यैकाग्रताप्रतिपादनाय चतुर्विंशति-पञ्चविंशतितमश्लोकाभ्यां च यथाक्रमेण अभ्यासवैराग्ययो: प्रतिपादनमभवत्। अस्य मनोदूतकाव्यस्याधिकांशश्लोकेषु परमात्मन:(श्रीकृष्णस्य) लौकिकजगति अलौकिकस्वरूपस्य वर्णनं कृतम्।

---

30. "सन्देशकाव्य 'मध्येयक्षमेघयोः' में, आधुनिकता"

जगदम्बा प्रसाद

शोधच्छात्र, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

साहित्य मानवीय संवेदनाओं को प्रकट करने व सामाजिक चेतना को समाज के अधिकांश लोगों तक पहुँचाने का उत्कृष्ट माध्यम है | संस्कृत साहित्य की विविध विधाओं में गीतिकाव्यों का महत्त्वपूर्ण स्थान है | लौकिक संस्कृत साहित्य में महाकवि कालिदास को गीतिकाव्यों का जनक माना जाता है | मेघदूत (सन्देश) काव्य में शापित पक्ष अपनी प्रिया के विरह से व्याकुल मेघ को अपना दूत बनाकर यक्षिणी को धैर्य

धारण कराने हेतु सन्देश भेजता है | 'मध्येयक्षमेघयोः' के रचनाकार डॉ० महाराजदीन पाण्डेय ने कालिदास के मेघदूतम् की कुछ संज्ञाओं कुछ सन्दर्भों के बहाने यक्ष और मेघ के बीच उस समय हुई वार्ता को वर्तमान परिस्थितियों में मूल्यांकित कर वर्तमान मानवीय चिन्तन तथा कथित आधुनिकता के प्रभाव को प्रकट करने का सफल प्रयास किया है | यह रचना अपनी संरचना में भी एक नवतर प्रयोग है | मध्येयक्षमेघयोः का उत्तर भाग अन्य दूतकाव्यों की तह मन्दाक्रान्ता जैसे संस्कृत छन्द में नहीं है | बल्कि रूबाई (उर्दू) छन्द में रचा गया है | और वर्णन चित्रण में परम्परित स्थलों व कृत्रिम शब्दावलियों से हटकर प्रत्यन्तो पर ठेले गये यथार्थों से संवाद की आत्मीयता में भाषा को प्रसाधन मुक्त रखना औचित्यपूर्ण लगा है कवि को |

मध्ये यक्षमेघयोः के कुछ महत्त्व स्थल जहाँ कवि ने चाटुकारिता सामन्तवाद व पूंजीवाद पर गहरा व्यंग किया है – शासन चाहे जैसा भी हो सामान्य व्यक्ति के लिए स्वतन्त्रता विरोधी होता है "स्वातन्त्र्यध्रुग्भवतिसकलं तन्त्रमेतद्धितद्वा" (मध्ये यक्ष मेघयोः 01/23) | "और भी गम है जमाने में मोहब्बत के सिवा" फैज अहमद फैज की ग़ज़ल पंक्तियों को अपने काव्य में पिरोते हुए रचनाकार ने पुराने कवियों पर व्यंग्य किया है जो केवल प्रेम में बिरही लोगों की समस्याओं को ही अपनी रचनाओं में स्थान देते थे | समाज में व्याप्त बेरोजगारी, अशिक्षा और उपनिवेशवाद पर भी रचनाकारों की दृष्टि पड़नी ही चाहिए |

अन्यद्दुःखान्यपि च रतितोऽद्येति वृद्धोऽवदद्यत् | (मध्येयक्षमेघयोः 01/24)

प्रकृति के अन्धाधुन्ध दोहन पर कवि ने सकारात्मक व्यंग्य करते हुए लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया है – प्रकृति का वैभव दुह लेने की मानवों की जिद ने कचरों का अम्बार लगा दिया है, जो आज उसी मानव के लिए समस्या उत्पादित कर रहा है पानी, मिट्टी, वायु सब मैले हो गये हैं, मशीनों के उच्छिष्ट के सम्पर्क से सम्पूर्ण संसार जीवन जीने लायक नहीं रहा |

हस्ते कर्तुं प्रकृतिविभवं येन केनापि रीत्यो पोत्पादानां चयमरचयद् यं जनस्तद्धितो न |
यन्त्रोत्सर्गच्छुरणमलिनं वारिमृद्वातजातं जातं जीवं निखिल जगतो नो सुजीवं हि येन |

इस प्रकार मध्येयक्षमेघयोः में विभिन्न सामाजिक कुरीतियों, आडम्बरों व अयथार्थाता पर व्यंग्य करते हुए लोगों को जागरूक करने का सफलतम् प्रयास डॉ० महराजदीन पाण्डेय के द्वारा किया गया है |

---

31. नवदशशतकरचितस्य नृसिंहविजयमहानाटकस्य भक्तिरसद्योतकत्वम्

श्रीमती नम्रता पटेल
शोधच्छात्रा, साहित्यविभागः, विद्याविहार, मुम्बई

भरतमुनितः आरभ्य पण्डितराजजगन्नाथपर्यन्तं संस्कृतस्य केनापि प्रमुखकाव्याचार्येण भक्तिरसाय रसशास्त्रे मान्यता अप्रदाय अपि भक्तिरसस्य सिद्धिस्तु भक्तिशास्त्रेण भवति, न काव्यशास्त्रेण। श्रीमद् भगवद्गीता,

श्रीमद्भागवतम्, शाण्डिल्यभक्तिसूत्रं, नारदभक्तिसूत्रं, हरिभक्तिरसामृतसिन्धुः आदयः ग्रन्थाः भक्तिरससंपोषकाः। अस्य शोधपत्रस्य विषयः भक्तिरसविशिष्टनाटकस्य परिप्रेक्ष्येऽस्ति। यत्र मधुराख्या रतिः स्थायिभावः मधुररसरूपे परिणमति, स एव भक्तिरसः। परमेश्वरः कृष्णादयः भक्तिरसस्य आलम्बनविभावाः। परमात्मनः लीलाः, सत्सङ्गः, भक्तानां समागमः इति उद्दीपनविभावाः। भगवन्नामस्मरणं, लीलानां कीर्तनं, नेत्राभ्याम् अश्रुपतनं, गदगदकण्ठः, क्वचित् नर्तनं, क्वचित् आह्लादे रोदनमादयः अनुभावाः। निर्वेदः मतिः हर्षः वितर्कादयः भक्तिरसस्य संचारिभावाः। उज्जवलनीलमणि नामके ग्रन्थे भक्तिरसः-'रसराट्' पदेन चित्रितः।

विष्णोः दशावतारेषु चतुर्थः श्रीमन्नृसिंहावतारः, कथा अस्य पौराणिकी ख्याता च। विशेषतः वैष्णवसम्प्रदायस्य इष्टदेवता श्रीमन्नृसिंहः यः विपत्तौ भक्तानां रक्षार्थमुपस्थितः भवति। अस्य कथाधारितः संस्कृतदृश्यकाव्येषु अन्यतमं साहित्यं नाम दशाङ्कविभूषितं नृसिंहविजयमहानाटकम्। एतन्नाटकं श्रीमद्वल्लभाचार्यकुलकौस्तुभैः गादीपतिस्थानमण्डितैः विद्याविलासिभिः श्रीजीवनजीमहाराजैः पुष्टिमार्गस्य प्रतिपादनशैल्या भिन्नपद्धत्या प्रणीतम्। नाटकस्य उपलब्धमातृकाद्वयोः ज्ञायते यत् विक्रमसंवत् १९२९ तमे वर्षे नाम प्रायः क्रैस्ताब्दे १८७२ तमे वर्षे ग्रन्थरचना पूर्णा जाता, तेन नाटकमिदं नवदशशतकस्य उत्तरभागवर्ति सिद्धम्। अस्य शोधपत्रस्य प्रयोजनं नृसिंहविजयमहानाटकस्य भक्तरसद्योतकत्वसिद्धिः वर्तते। तदर्थं महत्त्वपूर्णः भक्तिरसपरिपूर्णः दशमोऽङ्कः अत्र विशिष्टेन स्वीकृतः। शोधपत्रेण स्फुटं भवति यत् मधुरेभ्योऽपि मधुरः भक्तिरसः, सश्च कथं नृसिंहविजयमहानाटकस्य प्राणभूतः इति शम्।

---

32. "वेदों में नाट्यतत्व तथा उसका विस्तार: एक चिंतन"

Pradeepkuamar Shende

वेदों में नाटक-

कई दिनों तक चलने वाले लंबे यज्ञों (अग्नि आहुतियों) के बाद, वैदिक हिंदुओं ने जनता या परिचारकों का मनोरंजन करने के लिए नृत्य, संगीत और नाटक किया था। जो कथा भरतमुनि के नाट्यशात्र के प्रथम अध्याय में वर्णित है |

भरत का नाट्यशास्त्र, अपने लिए एक दिव्य उत्पत्ति का दावा करता है। यह खुद को पांचवे वेद के रूप में प्रस्तुत करता है,

सर्वशास्त्रार्थ संपन्नं सर्वशिल्पप्रवर्तकम्|
नाट्याख्यं पंचमं वेदंसेतिहासं करोम्यहम्||

जो सभी के लिए सुलभ है, जिनमें चार वेदों के अध्ययन से पहले शामिल थे। अपने वर्तमान स्वरूप में यह कालिदास के नाटकों के बाद आया।

यह संभव है कि नाट्यशास्त्र का लेखक कालिदास के कार्यों के अनुवादक चंद्र राजन का कहना है कि उनके समक्ष कालिदास के नाटकों के साथ उनके ग्रंथ की रचना की।

वैदिक अनुष्ठानों में नाटक का उल्लेख -

"वैदिक भजनों (ऋचाओं) को कई स्वरों द्वारा गाया गया था और गाया जाता है और कुछ में परिवर्तन की उपस्थिति एक वर्णिक तत्व बताती है। महान बलिदानों के अनुष्ठानों में एक नाटकीय चरित्र होता है। अनुष्ठान लौकिक घटनाओं का पुन: विधान हैं। यह संभव है कि पुजारियों ने ब्रह्मांडीय घटनाओं को फिर से लागू करने में देवताओं और द्रष्टाओं की भूमिका निभाई हो।

"वैदिक साहित्य में सुंदर कपड़े पहने और जौहर करने, गाने और नृत्य करने और पवित्र जल की धारा के साथ उनके हाथों में परिक्रमा करने का उल्लेख है। एक रथ दौड़ का उल्लेख किया गया है, साथ ही एक वैश्य और शूद्र के बीच सूर्य (प्रकाश) का प्रतीक एक सफेद त्वचा के कब्जे के लिए एक प्रतियोगिता है।

"बहुत से विदेशी विद्वानों का मानना है कि उर्वशी-पुरुरवस कविता एक मंचित संवाद था, जो मूल रूप से एक पवित्र अनुष्ठान शादी के बाद प्रजनन क्षमता संस्कार में एक पुरुष का बलिदान था।

"वैदिक अनुष्ठानों के प्रदर्शन के दौरान इस्तेमाल किए गए मुद्रा (हाथ के इशारों) को बाद में शास्त्रीय नाटक में शामिल किया गया। एक नाटक में प्राय: मंच के निर्देश मिमिंग का संकेत देते हैं, और एक विशिष्ट मुद्रा के लिए निर्देशित करते हैं, उदाहरण के लिए, कालिदास के शाकुंतलम् में 6-3 कपोत-हस्तका में- कबूतर के आकार का हाथ का इशारा जो आराधना या उपदेश को व्यक्त करता है।

---

33. रामजीठाकुरप्रणीतकाव्येषु नारीभावना

अजित आचार्य

वैदिककालादारभ्य इदानीं यावत् विधातुः सृष्टौ आवहति नारीणां विशेषवैशिष्ट्यम्। धर्मक्षेत्रे कर्मक्षेत्रे च नारीणां सार्वत्रिकभूमिका न केवलं प्रशंसार्हा जयश्रीमण्डितापि तु सदा सर्वत्र सश्रद्धया शिरोधार्या। समयानुसारेण सदा स्वकीयमर्यादापरिपालने सचेष्टिताः सन्ति जननीरूपेण भगिनीरूपेण भार्यारूपेण शासनकर्त्रीरूपेण वा तासां अननुमेयक्षमता वर्तते। जगति यदि जननी न स्यात्तर्हि जनकमर्यादाभावः अपि स्यादिति तु सत्यम्। यस्मात् कारणात् सम्यगेवोक्तं भगवन्मनुना "पितुरप्यधिका माता गर्भधारणपोषणात्"। अपि च परब्रह्मपरमात्मना भगवता रामचन्द्रेण एवमुक्तं "जननी जन्मभूमिश्च सर्गादपि गरीयसी"। जननीकृते एतादृशं गौरववचनं भूभागे क्वचिदपि न परिदृश्यते। सतीत्वरक्षणन्तु केवलं भारतभूमिभाग एवालोक्यते। सतीत्वरक्षणत्वात् भारतं भा-रतम्। भारतीयरमणी अज्ञानतमः खण्डणी, सूक्तजननी, ब्रह्मवादिनी, ऋङ्गण्डल-मण्डिणी च वर्तते।

आलोच्यमानेषु काव्येषु मेवाडस्वाभिमाननाम्नि लघुकलेवरे काव्ये राजमहिष्याः पद्मिन्याः बुद्धिकौशलं, निर्णये स्वाभाविकं चातुर्यं, नीतिपाटवं स्वाभिमानसंरक्षणतत्परा च दर्शनीयतां यान्ति।

अमृतमन्थनकाव्ये परमाविदुषीमैत्रेयी जागतिकनिखिलसुखसाधनसामग्रीषु अनन्यसाधारणवैराग्यं प्रकटीकृतवती तथा सश्रद्धया अमृतत्त्वलाभहेतोः पतिप्रवरयाज्ञवल्क्यमहर्षिं निकषा पार्थितवती। महत्कर्मणि नारीणां कदापि अन्तरायो नास्ति यदि प्रकृतलक्ष्यवस्तु यथार्थं समीचीनं स्यात्तर्हि क्व खलु वाधा अर्थात् वाधा नास्त्यत्यर्थः। स्वस्वलक्ष्यवस्तुनि यदि प्रकृतदृष्टिर्स्यात्तर्हि कथं नारी अवला इति। आर्याविलासकाव्ये महिलायाः सदाशयतां निभालयन् कविः भणति -

कल्पलतेव सदेयं/स्नेहरसेनैव सिच्चतां साधु।
अर्धाङ्गिनी प्रसिद्धा/सर्वस्वं या मुद्रा प्रयच्छति।।

सामाजिकीव्यवस्थां कन्यादानरूपां प्राचीनकालादेवागतां प्रति कविः स्वकीयखेदं व्यनक्ति-

धनमिव ददते पितर-/स्तदिव च साऽऽदीयते न सस्नेहः।
न च चैतन्यं नार्य्यां/दृष्टं धर्मावलम्बिभिः पुरुषैः।।

अपि च 'मातृस्तन्यम्' इति काव्ये कविः वर्णयति मातुः पयःप्रभावम्। यस्मात् प्रभावात् हनुमान् बरीष्ठकायामितशालीवीरवत्तश्चासीत्। अनेन प्रकारेण विषयवस्तु पर्यालोच्य पश्यामः कविकृतकाव्येषु नारीभावना कीदृशी प्रतिफलितास्ति, तदुपस्थापनमेवास्य निबन्धस्य मूलविषयः।

---

34. आर्यासहस्राराम में आध्यात्मिक तथ्य

डॉ. कुमारी नन्दिनी
मन्दराज विगहा, पो.- आर. एस., गया, थाना – डेल्हा, जिला – गया (बिहार)

ईश्वर की सत्ता ही सर्वत्र है। वही सबके अन्तः में है और वही सबके बाहर भी। यघपि अध्यात्म जगत् में अनेक विषय हैं, जिसका चिन्तन – मनन किया जाता है, किन्तु उन सबके अन्तः में एक ही मूल तत्त्व है और वह है परमात्मा। ईश्वर एक है। उस एक परमात्मा को पाने के अनेक रास्ते हैं। सामान्य व्यक्ति निश्चय नहीं कर पाता कि कौन मार्ग प्रशस्त है, जिस पर चलकर परमात्मा – दर्शन रुप लक्ष्य पर आसानी से पहुँचा जा सकता है। एकनिष्ठ भक्त हमेशा परमात्मा के सान्निध्य में रहना चाहता है। इसके लिए वह हमेशा आराध्य का चिन्तन– मनन करता है।

परमात्मा अनभवगम्य है। आत्मज्ञानी जन तो अपने अन्तः में ही परमात्मतत्व का दर्शन करते हैं जो व्यक्ति इन्द्रियों के संयमित करके अन्तर्मुखी हो जाता है, अपने अन्तः में ही रमण करता है, वही इन बाह्य विध्न – बाधाओ को आसानी से हटा सकता है और उनके दुष्प्रभावों से बच सकता है। मन बङा ही चंचल है, मन को वश में करना कठिन है। इसके लिए परमात्मा की कृपा होनी चाहिए। मनुष्य संसारी है। वह सांसारिक सुख

– साधनों को देखकर उसे ही सर्वोपरि समझा जाता है और उसी में रम जाता है। उस महापंक से निकल नहीं पाता। मनुष्य की इसी प्रवृति को मोह या आसक्ति कहते हैं।

आर्यासहस्राराम में आध्यात्मिक तथ्य Aryasahsararam mein Adhayatmic tathay.

---

35. विद्यापरिणयनम् नाटक में प्रतीक विधान

Sachin Dwivedi

विद्यापरिणयनम् नाटक आचार्य आनंन्दरायमखी द्वारा संस्कृत के प्रतीक नाटकों की परम्परा में लिखा गया नाटक हैं इसकी रचना 18 वीं शताब्दी के आरम्भ में हुई। नाटककार मूलतः शैवागम के मानने वाले अव्दैतवेदान्ती थे उन्होंने इस ग्रन्थ में शैवागम समर्थित मोक्ष का स्वरुप तथा उसकी प्राप्ति का उपाय बताया है। शैवागम व्दारा प्रतिपादित मोक्षोपाय शास्त्रीय पद्धति से प्रतिपादित होने पर उतना हृदयङम नही होता अतः उन्होने इस सरस पद्धति का अवलम्बन किया हैं। जिसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय जीव को विद्या की प्राप्ति हैं विद्या की प्राप्ति के लिए शिवभक्ति को आधार बनाकर अव्दैतवेदान्त का प्रतिपादन किया गया हैं और इसी दृष्टि से इस नाटक में जिन पात्रों का निरुपण है उनमें जीव विद्या अविद्या प्रवृत्ति निवृत्ति आदि इनके भावात्मक पात्र हैं जिनको मूर्तरुप प्रदान किया गया है इस प्रकार यह नाटक प्रतीक नाटको में एक विशिष्ट स्थान रखता हैं प्रस्तुत शोधपत्र में प्रतीक की दृष्टि से इस नाटक की समीक्षा की हैं।

---

36. संस्कृत जगत में पण्डिता क्षमा राव द्वारा महाराष्ट्रीय प्रतिभाओं का चरित्र वर्णन

स्विटी राजेन्द्र टेंभरे

शोध छात्रा, वैदिक दर्शन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पण्डिता क्षमा राव आधुनिक संस्कृत जगत में अग्रदूत हैं। उनका जन्म 4 जुलाई 1980 में हुआ था। उनके पिता शंकर पांडुरंग पण्डित संस्कृत के उच्चकोटी के विद्वान व भाषाविद थे। पिता की मृत्यु के उपरांत माँ उषादेवी के आदर्शो का पालन निरंतर करते हुये पण्डिता क्षमा राव ने अपना संस्कृत लेखन प्रतिभा को आगे बढ़ाया, वह खेल क्षेत्र में भी अग्रगण्य थी। मुंबई के डॉ. राघवेंद्र राव इनसे उनका विवाह हुआ।

उम्र के दसवें साल उन्होने लिखना प्रारम्भ किया। पाठकों के मन को भाए ऐसे लेखन कार्य की प्रतिभा उनमे थी। 1920 से 1930 तक अङ्ग्रेज़ी भाषा में लेखन किया तथा 1931 से अन्त तक संस्कृत भाषा में ही लेखन कार्य किया। पण्डिता क्षमा राव ने लेखन हेतु अनेक परितोषिक प्राप्त किए। औंध के संस्कृत कार्यालय द्वारा 1938 में 'पण्डिता' की उपाधि से तथा 1942 में 'सरस्वती चन्द्रिका' की उपाधि से भी उन्हे सन्मानित किया गया।

पण्डिता क्षमा राव के जीवन पर गीता का विशेष प्रभाव हुआ। यह उनके लेखन कार्य से समझ आता है। उन्होने अनेक महाकाव्य, संक्षिप्त नाटक, कहानियाँ,लेख आदि में लेखन कार्य किया। संस्कृत कथाओं में

कथा मुक्तावली पद्य रचना तथा कथान्पंचकम और ग्राम ज्योति पद्य रचना हैं । सत्याग्रहगीता, उत्तर सत्याग्रहगीता इ. तथा जीवनचरित्र पर शंकरजीवनाख्यानम, मीरालहरी,श्रीतुकारामचरितमहाकाव्यम, श्रीरामदासचरितम, श्रीज्ञानेश्वरचरितम इत्यादि व महाराष्ट्र के प्राचीन महान साहित्यकारों के विषय में संस्कृत साहित्य रचना करके उन्होने एक प्रकार से संस्कृत जगत में योगदानपरक कार्य किया।

---

37. संस्कृत की नई काव्य विधाएँ

डॉ. लालाशंकर गयावाल,
विभागाध्यक्ष रामेश्वरी देवी राज. स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, भरतपुर

संस्कृत की प्राचीन परम्परा काव्य के मुख्य दो भेद दृष्यं श्रव्यं के रूप में स्वीकार करती है। दृश्य काव्य के रूपक एवं उपरूपक तथा श्रव्यकाव्य के गद्य–पद्य चम्पू के रूप में प्रभेद तथा श्रव्यों के ही जैसे गद्य के कथा एवं आख्यायिका। पद्य के पुनः महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, मुक्तककाव्य, स्तोत्र काव्य आदि भेद किये जाते हैं। गद्य–पद्य मिश्रित रचना चम्पू काव्य के अन्तर्गत आती है। संस्कृत भाषा में कुछ अन्य प्रकार की पद्यात्मक रचनाएँ मिलती हैं, जिन्हें गीति काव्य, नीतिकाव्य तथा उपदेश परक काव्यों में रखा जाता है।

संस्कृत की आधुनिक परम्परा में काव्य की उपर्युक्त विधाओं के अतिरिक्त अनेक नवीन विधाएँ आविर्भूत हुई हैं। जो आधुनिक संस्कृत कवियों के कविकर्म व्यापर को उद्भावित करती हैं। ये विविध नूतन काव्य विधाएँ है जैसे– बाल–काव्य, गौरव–काव्य, पुराण–काव्य, प्रेम काव्य, लहरी–काव्य, लघु–काव्य, राग–काव्य, विरह–काव्य, विलाप–काव्य, शोक–काव्य, व्यंग्य–काव्य, कथा–काव्य, पुत्र–काव्य, यात्रावर्णन–काव्य, अनुकाव्य , श्लिष्ट–काव्य, ललित–काव्य आदि।

आज का कवि समवाय इन विविध नूतन काव्य विधाओं में रचना करता है। इनमें रचित सामग्री भी नित नूतन एवं सामयिक विषयों से युक्त है, जो पाठक को इनके अध्ययन से पुरूषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति में सहायक होता है, आनंद प्रदान करता है एवं शिक्षा देता है। इस दृष्टि से के॰एन॰ दामोदर शर्मा को बाल काव्य ''श्री कृष्ण चरितम्'' श्री कृष्ण की बाल्यावस्था की विविध लीलाओं का मनोहर वर्णन करता है। श्री दिगम्बर महादेव कुलकर्णी का गौरव काव्य ''धाराय शोधारा'' तथा रमेशचन्द्र शुक्ल का पुराण काव्य ''नवभारत पुराणम्'' (1985) प्रसिद्ध है। कलकत्ता के रघुनाथदास गोस्वामी का प्रेमकाव्य ''दानकेलिचिन्तामणी''(1949) प्रेमपरक व्याख्या करता है। लहरी काव्य के रूप में माधव कवि का ''विनोद लहरी'' (1985) तथा राधा बल्लभ त्रिपाठी का ''लहरी दशकम्''(1991) प्रमुख लहरी काव्य है। काव्यों के प्रतिमान आज बदल चुके हैं इन समस्त नई काव्य विधाओं का सांगोपांग वर्णन करना ही इस शोधपत्र का प्रतिपाद्य है।

---

38. श्रीजीवन्यायतीर्थ प्रणीतस्य चिपिकटचर्वणस्य नाट्यतत्त्वदृष्ट्या विमर्शः

राकेश दास

वङ्गदेशे प्राप्तजन्मभिः श्रीजीवन्यायतीर्थमहोदयैः प्रणीतेषु बहुषु रूपकेषु चिपिकटचर्वणं नाम किञ्चन प्रहसनम्। अस्मिन् प्रहसने कस्यचन कृपणस्य दुर्दशा वर्णिता वर्तते। प्रहसनस्य नायकः कृपणः कपाली। तस्य भार्या रङ्गिणी, तस्य दासी मन्थरा, दासः पङ्गुरामः, कश्चन वैद्यः, कश्चन तान्त्रिकः च अत्र पात्रभूतानि। हास्यरसभरिते अस्मिन् प्रहसने नाट्यकारः नाट्यशास्त्रीयरीत्या एव सन्धि-सन्ध्यङ्ग-लास्याङ्गादीनां प्रयोगं कृतवान् इति दर्शयति अयं प्रबन्धः। प्रहसनस्य आरम्भे नान्द्यन्ते अवगलिताख्यप्रस्तावनया प्रहसनं प्रस्तूयते। अस्य प्रहसनत्वं युज्यते न वा, अत्र सन्धीनां प्रयोगः कीदृशः, सन्ध्यङ्गानि कथं कुत्र निवेशितानि, नायकादीनां पात्राणां कीदृशानि लक्षणानि इत्यादयः विषयाः प्रकृतप्रबन्धे चर्चिताः सन्ति। अस्मिन् प्रहसने नायकः धीरोद्धतः शठः च। नायिकायाः पात्रम् अत्र नास्ति। नायकस्य या भार्या सा अत्र वस्तुतः पताकात्वेन एव तिष्ठति। एतत् सर्वम् अत्र प्रबन्धे विस्तरेण चर्च्यते।

---

39. आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ

शेषनाथ मिश्रा

आधुनिक संस्कृत साहित्य में गजल, कव्वाली, गीतियाँ, उपन्यास, लघुकथा, जीवनी, आत्मकथा, यात्र वृत्तान्त, हास्य आदि विधाओं में रचनाएँ हुई हैं। छन्दोमुक्त नव्यकाव्य की रचना के प्रति संस्कृत-लेखकों का झुकाव हुआ है। नाटक, व्यंग्य-लेख, ललित-निबन्ध आदि नवीन विधाओं में लेखन हुआ है। आधुनिक संस्कृत-लेखन में गद्य की अपेक्षा पद्य को अधिक प्रश्रय मिला है, जबकि अन्य भारतीय भाषाओं में गद्य को। गद्य में मौलिक उपन्यास और लघुकथा-लेखन की प्रवत्ति निरन्तर बढ़ती गयी। संस्कृत-लेखन में काव्य, पौराणिक कथाएँ, स्तो=, भक्ति-साहित्य आदि बिल्कुल नये विषयों पर नये परिप्रेक्ष्य में नयी विषयवस्तु पर लेखन हो रहा है।

संस्कृत भाषा में प्राचीन शैली और भावबोध की रचनाओं के साथ-साथ नवीन शैली और भावबोध की रचनाओं का सर्जन इस भाषा की अद्भुत सर्जन क्षमता और जीवन्तता का द्योतक है। सदा ही इसमें श्रेष्ठ रचनाओं (किसी भी विश्व-साहित्य के समकक्ष) की उपस्थिति रही है। साहित्य की नवीनतम विधाओं में निरन्तर संस्कृत-लेखन हो रहा है। प्राचीन विधाओं पर भी नवीन विषय की रचनाओं का प्रकाशन हो रहा है। यहाँ विषयानुसार नवीन विधाओं पर विचार किया गया है। आधुनिक संस्कृत-साहित्य में संस्कृत की लगभग सभी प्राचीन तथा नवविकसित विधाओं में सृजन हो रहा है।

संस्कृत के कतिपय रचनाकारों ने विदेशी काव्य विधाओं यथा हाईकू (विल्वपत्र) काव्य, तान्का काव्य (जापानी विधा), सीजो काव्यविधा (दक्षिण कोरिया) में भी काव्य रचनाएँ की हैं। आचार्यों ने उनके स्वरूप (लक्षण) का भी निर्धारण किया है। इन कवियों में प्रो॰ राजेन्द्र मिश्र, प्रो॰ राधावल्लभ त्रिपाठी, श्रीनिवास रथ और प्रो॰ हर्षदेव माधव आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

---

40. मेघदूतम् में विरह–वर्णन

डॉ॰ कनक लता कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर, एस॰ बी॰ कालेज, आरा, भोजपुर, बिहार

महाकवि कालिदास संस्कृत–साहित्य के मूर्ध्न्य नाटककार एवं कवि हैं। इनकी समग्र चिरपुरातन काव्यों में मेघदूतम् चिरनवीन है। 'मेघदूतम्' एक विरह–प्रधन ;विप्रलम्भ श्रृंगार से समन्वितद्ध गीतिकाव्य है। गीतिकाव्य किसी भी कवि के अन्तस्थल से निःसृत होनेवाली हृदयस्थ कोमलभावों की रचनात्मक अभिव्यक्ति है। प्रेम और सौन्दर्य का जितना स्वाभाविक चित्राण इस काव्य में हुआ है वैसा अन्यत्रा दुर्लभ है। इस काव्य का अनुकरण करके परवर्ती लेखकों द्वारा अनेक दूतकाव्य लिखे गए किन्तु कोई भी काव्य मेघदूतम् के समान हृदयंगम तथा विरही चित्त की स्वाभाविक अभिव्यक्ति करने में समर्थ नहीं हो सकी।

मेघदूतम् संस्कृत–साहित्य में स्वतंत्रा ग्रन्थ के रूप में लिखे गए गीतिकाव्यों में सर्वप्रथम है। यह संस्कृत–साहित्य की ही नहीं अपितु विश्व–साहित्य की भी एक सुमधुर अमर कृति है। रसात्मक सौन्दर्य के कारण यह काव्य न केवल भारतीयों को बल्कि संसार के समस्त सहृदय काव्यमर्मज्ञों को अपनी ओर आकृष्ट किया है।

विधता की पहली रचना दिखने वाली यक्षिणी प्रिय वियोग में इस तरह मुरमफा गई है मानो मुरमफाई हुई कोई कमलिनी हो। मानसिक व्यथा के कारण दुर्बल बनी वह स्वप्न में ही अपने यक्ष से मिलना चाहती है जिस कारण ऑसुओं के भारी प्रवाह को भी रोक लेती है–

विरही यक्ष भी अपनी प्रिया का चित्रा बनाकर उसके चरणों में अपने आपको समर्पित करना चाहता है लेकिन ऑसू उसकी ऑखों को ढक लेता है। यम की भॉति निष्ठुर दैव को चित्रा में भी उनका मिलन नहीं सुहाता –

स्वप्न में ही वह अपनी प्रिया को छाती से लगाने के लिए अपने हाथ उपर पफैलाता है उस समय वन देवता उसकी स्थिति पर बड़े–बड़े ऑसू वृक्षों के पत्तों पर गिराते है। लम्बे–लम्बे विरहा की तीन पहरों वाली रातें काटें नहीं कटती। दिन भी हर समय हल्का तापवाला कैसे बने, ऐसी–ऐसी दुर्लभ इच्छाओं से आकुल उसके हृदय को विरह वेदना ने असहाय बना दिया है

इस प्रकार महाकवि की कृति 'मेघदूतम्' विप्रलंभ से परिपुष्ट सम्भोग–श्रृंगार का वह रमणीय चित्रा है जिसकी नवीनता क्षण–क्षण परिवर्तनशील है।

---

41. ज्योतिष में आजिविका का विचार

योगेश कुमार

जिस युग में हम रह रहे है खास कर भारत वर्ष में ,युवा पीढी को शिक्षा और आजीविका के बारे में परामर्श की आवश्यकता है यह परामर्श ज्योतिषशास्त्र द्वारा सबसे आसानी से दिया जा सकता है जातक की आजीविका के बारे में आधुनिक युग में ज्योतिषशास्त्र द्वारा जन्म कुण्डली के माध्यम से सरलता के द्वारा जाना जा सकता है आचार्यवराहमिहिर ने आजीविका के विषय में सहज किन्तु वेहद महत्वपूर्ण सम्पर्क सूत्र स्थापित किया है |

---

42. Ishti A Sanskrit Film

Jayalakshmi T hazheveettil
Asst. Professor, Calicut University, Kerala

There has never been a more favorable time for Indian Cinema than today. With vibrant community, new technology and investment interest, we are on the verge of seeing Indian Cinema transcend its national borders to project India's sociopolitical and economic influence around the world. List of the film industries in India based on languages. This is sad to know that movies on Sanskrit language didn't made a separate industry in Indian Cinema, which has been flourished into many branches on the basis of languages. Sanskrit is popularly known as scholarly language and lack case on communication. This could be the major barrier for Sanskrit language to get flourished in this field. There are only seven Sanskrit feature films made so far. A language is thousands of years old, but it has taken so long to make a movie in it.

The first Sanskrit movie ever made was Adi Sankaracarya in 1983. The film dipict the life and times of Sankaracarya, who consolidated the doctrine of Advaita Vedanta. The second film Srimadbhagavatgita was released in 1993. After a gape of twenty-three years the next film in Sanskrit was made at Kerala in 2015 named Priyamanasam. The movie is blend of traditional and modernity while showcasing the 200 years old dance form of Kerala. Isti is the next one in this group of Sanskrit movies, an unsettling story of a Namboodiri family set in the midst of 20th century. Suryakanta is the first movie to be handled by the contemporary socialist. Punyakoti is the first animation film in Sanskrit directed which was completed in 2017. Anurakti is the first 3D film in spoken Sanskrit the story based on contemporary times, released for the audience in February 2018.

43. आधुनिक संस्कृत–साहित्य की नवीन विधा डायरी : एक विश्लेषण

डॉ॰ अंजना शर्मा,
एसोशिएट प्रोफेसर, संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग,
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

संस्कृतसाहित्य–धारा वैदिककाल से प्रवाहित होकर आधुनिक काल में भी न केवल सतत प्रवहणशील है, अपितु युगानुरूप प्रवृत्तियों को आत्मसात करती हुई विविध व विशालतर रुप में आगे बढ़ रही है। गद्य–पद्य आदि सभी रुपों में नवीन विधाओं का विकास एवं विस्तार इसको अभूतपूर्व बना रहा है। इनमें गद्य–साहित्य की अनेक विधाएँ आधुनिक युग में प्रचलित हैं जैसे– उपन्यास, निबन्ध, कहानी, यात्रावृत्त, एकांकी आदि। इनसे पृथक् एक विधा है– डायरी। अंग्रेजी भाषा का यह डायरी शब्द दैनन्दिता का बोधक है। हिन्दी भाषा में यह 'दैनन्दिनी' अथवा 'दैनिकी' बंगला भाषा में 'दिनपञ्जीति', गुजराती भाषा में 'वासरी' नाम से प्रसिद्ध है। अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला आदि भाषाओं में इस विधा में विपुल लेखन कार्य हो रहा है। किन्तु संस्कृत भाषा में इस विधा में लेखन कार्य नहीं हुआ था। संस्कृत भाषा में इस विधा में सर्वप्रथम डायरी ग्रन्थ लिखने का श्रेय सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो. (डॉ.) सत्यव्रत शास्त्री को है। इन्होंने **''दिने दिने याति मदीयजीवितम्''** डायरी ग्रन्थ के माध्यम से संस्कृत–साहित्य में डायरी लेखन का सूत्रपात किया है। अंग्रेजी, हिन्दी, बंगाली और मराठी में अनूदित व मौलिक डायरियों का पत्र–पत्रिकाओं में धारावाहिक अथवा पुस्तक रूप में प्रकाशन हुआ है। किन्तु संस्कृत भाषा में डायरी की इस परम्परा का यह क्रम नवीन है। इस नवीन विधा के स्वरूप विश्लेषण का प्रयास प्रस्तुत पत्र में किया गया है।

---

44. पूर्णप्रज्ञानां स्तोत्रेषु नैतिकमौल्यानि

Dr. M A Shruthikirti
Kuvempu University, Sahyadri College Campus, Shimoga

अतः वयं सर्वे अत्र विविधेषु वाङ्मयेषु पिहिताम् नीतिं अनावरणम् कर्तुम् समुत्सुकाः। मया तु पूर्णप्रज्ञस्य ग्रन्थेषु नैतिकमौल्यानि इति विषये प्रबन्धः मंड्यते। केचन मध्वानंदतीर्थापरनामके पूर्णप्रज्ञभिक्षौ अन्यथाज्ञानं असंपादयन् । ते सर्वदा खंडनतत्पराः, शास्त्रातिरिक्तज्ञानमेव नास्ति तेषां, जगदनुपकारिणः स्वाचरणमेव बहुमन्यन्ते नेतरेषां, इत्यादयः अपवादाः तेषु श्रूयन्ते। किन्तु न तथैते भिक्षवः इति अत्र निरूप्यते। एतत्कृतिषु अपि सामान्यमान्यधन्यराजन्यानामपि विहिताः, अनुष्ठेयाः नीतयः बह्व्यः प्रतिपादिताः । तेषु उपयुक्तेषु नैतिकमौल्येषु स्थालिपुलकन्यायेन काश्चन नीतयः भवतां पुरतः उपस्थाप्यन्ते।

---

45. भर्तृहरि नीति शतक में मानव-जीवन-दर्शन

डा बिनोद कुमर सिंह
यू. एम. एस. सिरहाँ एम. टोली जिला – पूर्वी चम्पारण(बिहार)

इस जगत में जन्म लेना, जवान होना, बच्चे पैदा करना और वृद्ध होकर मर जाना ही मानव जीवन की सार्थकता नहीं है। इसी मानव-जीवन को सुखमय बनाने, सार्थक बनाने, एंव प्रत्येक परिस्थिति में अपने को सम्भालने में भर्तृहरि के नीतिशतक की महत्वपूर्ण भूमिका है। आनन्द एक ऐसी चीज है जिसे लेने के लिए व्यक्ति की व्यक्तिगत अन्तर्मन की चैतन्यता की आवश्यकता होती है । प्रकृति और मानव जीवन के व्यावहारिक परिस्थिति में सुख और दुःख के क्षण प्रतिपल गुजरते रहते हैं और उन क्षणों को लेना न लेना व्यक्ति के स्वभाव पर निर्भर करता है। परिस्थिति के रंगस भी मनुष्य पर समान रूप से नहीं चढ़ते हैं। भर्तृहरि के नीतिशतक में सम्पूर्ण मानवजीवन का प्रत्येक पक्ष एक-एक श्लोकों में निबद्ध होकर दर्शन देते नजर आते हैं। भर्तृहरि का नीतिशतक सार्वदेशिक और सार्वकालिक परिस्थिति का सत्यवक्ता है।

भर्तृहरि ने नीतिशतक में अज्ञपद्धति, विवेक – अविवेक, विद्वत्प्रशंसा, विद्याधन की महत्ता, सुसंस्कृत वाणी की विशिष्टता, सत्संगति की महिमा, सुयश की महत्ता, दया, प्रीति, शौर्य, क्षमादि का सद्प्रभाव, मानशौर्यपद्धति, धीर पुरूष की महिमा, तेजस्वी पुरूष की विवेचना, अर्थपद्धति, धन की गति की विवेचना, जनता की प्रधानता, राजनीति, दुर्जनपद्धति, सेवाधर्म की महिमा, खल और सज्जन की मित्रता, सुजन पद्धति, महान व्यक्ति की महिमा, परोपकार पद्धति, सन्मित्रलक्षण, संत की महिमा, धैर्यपद्धति, शील-क्षमा-विरह-विवेक, की विशिष्टता, दैवपद्धति एवं अंत में – "तस्मैनमःकर्मणे" – के द्वारा कर्म की प्रधानता का प्रमुख रूप से विवेचन किया है।

इस प्रकार भर्तृहरि के नीतिशतक में मानव जीवन के महत्वपूर्ण आयामों का सहज दिग्दर्शन हमें प्राप्त होता है। सफल जीवन जीने हेतु पुरूषार्थ चतुष्ट्य की शिक्षा हमें मिलती है। इस शतक में धर्म प्रतिपादित आचरण के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। जीवन के समग्र रूप का निरूपण यहाँ प्रदर्शित है। वर्तमान समाज को आज सबसे अधिक उर्जा एवं सफल सदाचार की शिक्षा प्रदान करने वाला भर्तृहरि का नीतिशतक दृष्टि गोचर होता है।

"स्वजीवन सुधार कर दीप बन घुम-घुम, घर-घर नव– नव दीपक जलाइये।
" 'भर्तृहरि नीतिशतक वाली बोली बोल, लाख-लाख सोये हनुमान को जगाइये ।।

46. अंताराष्ट्रियता संबन्धी भारतीय चिन्तन

डॉ. ताराकान्त शुक्ल
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग

प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व अंताराष्ट्रियता संबन्धी कोई चिन्तन विश्व स्तर पर नहीं था। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् विश्व स्तर पर किसी ऐसे संगठन की आवश्यकता महसूस हुई तथा राष्ट्रसंघ की स्थापना की गई। परन्तु यह संगठन विजेता राष्ट्रों के स्वार्थ के ऊपर आधारित था जिसके कारण यह अपने उद्देश्य को पूरा करने में समर्थन हीं हो सका और करीब दो दशकों में ही पुनः द्वितीय विश्वयुद्ध आ धमका। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात्पुनः संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई। परन्तु आधी सदी बीतते ही तृतीय विश्वयुद्ध के बादल मण्डराने लगे हैं।

परन्तु भारतवर्ष में अंताराष्ट्रिय संबन्ध में गहनविचार विमर्श हुए हैं तथा मनु, याज्ञवल्क्य, चाणक्य आदि ने इस पर गहन चिन्तन किया है। इसे ही षड्गुण सिद्धान्त कहा जाता है। ये षड्गुण सिद्धान्त हैं – संधि, विग्रह, यान, आसान, द्वैधीभाव और संश्रय (1)। आज भी ये प्रासंगिक हैं तथा विश्व को एक दिशा देने में समर्थ हैं।

संधिं च विग्रहं चैव यानमासनमेव च।
द्वैधीभावसंश्रयं चैव षड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा॥
मनुस्मृति 7/160

---

47. Human Values and Human Rights: Ancient to Modern Era

Dr. Snehal Fadanavis

Human rights and freedoms are a true reflection of the part played by man in the development of society. Human rights are historically conditioned and so very in accordance with the changes in the social, economic, political, cultural and other aspects of the society. Human rights are closely linked with a person's duties towards society. The Indian view stresses the performance of the duties instead of demanding rights. It is assumed that if all individuals perform their duties, the rights of others are automatically secured. If every human being demands his rights and does not perform his duty then the situation becomes unmanageable.

In Vedic era the notion of dutiful conduct held the highest position. Rights and duties were entangled with each other. They used to go hand in hand. Welfare of individuals was given the highest priority. The Vedic man as so enlightened that they never demanded rights butt traverse the path of duties in a just manner. Indian Constitution conferred all of the above basic rights upon the individual under Part III of the Constitution are called Fundamental Rights because they are secured by the Constitution, which is the supreme law of the land. They are called fundamental rights because they are most essential for the attainment by the individual in his full intellectual, moral and spiritual status.

The UDHR and the two Covenants' together are indeed milestones in securing the welfare of human being and the Constitution of India is also guaranteeing and protecting the rights of individuals but with the development of civilization and culture the notion of Dharma and eternal values also developed.

---

48. आचार्यरामचन्द्रमिश्रस्य संस्कृतसम्वर्धने योगदानम्

प्रो० वैद्यनाथ मिश्रः, छपरा

अस्मिन् शोधपत्रे आचार्यरामचन्द्रमिश्रस्य विद्वत्तापूर्णटीकादिलेखन कार्यैः महाकाव्यादिप्रणयनैः उद्बोधनैश्च सञ्जातस्य संस्कृत सम्वर्धनस्य एक संक्षिप्तं स्वरूपं प्रकाशीक्रियते।

आचार्य रामचन्द्रमिश्रः कामेश्वरसिंहदरभंगासंस्कृतविद्यालयस्य सर्वमान्यः साहित्य विभागाध्यक्षः आसीत् । एतस्य महाकवेः परमवैयाकरणस्य, निष्णातदार्शनिकस्य, टीकाकाररत्नस्य च जन्म मिथिलामहीमण्डनभूतसीतामही मण्डलेपकड़ी कोठी ग्रामे 19.09.1911 तमे खीष्टाब्दे कोठी ग्रामे सजात्मासीत् । बाल्यकालत एव विलक्षणमतिरेष आचार्यः स्वतपः स्वाध्यायैः संस्कृतस्य महतीं सेवां- प्रबन्धपारिजातः, स्मृतिरेखा च प्रसिद्धाः सन्ति। अनेन गुरुवर्येण संस्कृतमहाकाव्यानां नाटकानां च संस्कृत-हिन्दी टीकाश्च च कृताः सन्ति। अस्य वैदुष्येण संस्कृतच्छात्राः विद्वान्सः शोधार्थिनः पण्डिताः सर्वे उपकृताः भवन्ति।

---

49. महाकविहरेकृष्णशतपथिविरचितमहाकाव्येषु राष्ट्रप्रेम

डा.बुद्धेश्वरषडङ्गी,कोलकाता-35

कवयः क्रान्तदर्शिनः। प्राचीनकालादद्यावधि राष्ट्रप्रेमरसान्विता काचिदम्लानकविताधारा आदिकवेः प्रारभ्य रमाकान्ताभिराजराधाबल्लभहरेकृष्णादीनां कवितासु दरीदृश्यते। विश्वमङ्गलकामिनः कवयः सर्वदा

राष्ट्रहिताय यतन्त एव। सत्यधर्मन्यायमार्गेण परिपालिता धरा सुखदायिनी कीर्त्तिदायिनी च भवति। प्रजाप्राणा राजानश्चिरं प्रजाभिः समेड्यन्ते। महाकविना कालिदासेन सूर्यवंशीयनृपाणां कीर्त्तिरुदीर्यते रघुवंशे यथा- स पिता पितरस्तेषां केवलं जन्महेतवः।

अर्वाचीनकविवरो हरेकृष्णशतपथी संस्कृतकाव्यधारायाः प्रथितयशाः सारस्वतसाधकः। नैकानां काव्यानां कर्त्ता महाकाव्यद्वयं विलिख्य गीर्वाण्या महान् उपकारः कृतः। प्रथमं भारतायनमहाकाव्यं तस्य कविप्रतिभामातताम। द्वतीयं विश्वायनमहाकाव्यं बहुविधपुरस्कारैः सभाजितं सहृदयमनोमन्दिरे मन्देतरं रसानन्दमजनयत्। उभयत्र सर्वाङ्गसुन्दरराष्ट्रस्य कृते सत्यमार्गस्य वैशिष्ट्यं तेनोपन्यस्तम्। विश्वायनमहाकाव्ये द्वितीयसर्गे उक्तम्-

सत्यस्य योगात् पृथिवी प्रसन्ना वृक्षैर्लताभिश्च फलैश्च पुष्पैः
सौन्दर्यसम्भारसुरम्यराशिप्रकाशकेदारकलापधन्या।।2-8

अपि च-

वसुन्धरा भाति यदाभिषिक्ता कृषिक्षमा सा बहुसस्ययुक्ता।
तदा प्रजाजीवनधारणार्थं भवन्ति सत्येन सदा समर्थाः।।2-13

अनेन क्रमेण देशरक्षा-अर्थनीत्यादिविषये कवेश्चिन्तनं प्रशंसार्हम्। अत्रशोधनिबन्धे प्रोक्तविषयोपरि चर्चा करिष्यते

---

50. ''मेघदूत में मानवाधिकार''

मानवेन्द्र नाथ

शोध छात्र, बी.आर.ए.बी.यू, मुजफ्फरपुर (बिहार)

मनुष्य के सर्वाङ्गीण विकास हेतु मानवाधिकार परमावश्यक है। महाकवि कालिदास ने अपने गीतिकाव्य मेघदूत में मानवाधिकार पक्ष को भी चिन्हित किया है। मेघदूत के कथानक में यक्ष और यक्षिणी दोनों का अधिकारहनन होता है। करूण रस में श्रृंगार का बुद्धिमत्ता पूर्ण समावेश कर कवि ने सहृदयों को अचंभित किया है। महाकवि ने अचेतन में चेतना का आधान कर जीवन–शैली की सुगमता में अचेतन बादल का भी सहयोग लिया है। प्रकृति के सभी तत्त्व नदी, झड़ने, पर्वत, पशु–पक्षी इत्यादि मानवाधिकार को पोषित करने में अहम् भूमिका निभाई है। महाकवि ने ''स्वाधिकारात् प्रमत्तः'' कहकर अधिकार और कर्त्तव्य को एकरूपता प्रदान कर विभेद सिद्ध किया है।

---

51. एकांकि रूपकसामाजिक उद्बोधन का प्रभावी माध्यम :

सौ. मृदुला अतुल तापस
शोधछात्रा(संस्कृत साहित्य) क. का. सं. वि., रामटेक नागपूर

संस्कृत काव्य के दो प्रमुख प्रकार माने जाते है, श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य। रूपक प्रकार दृश्य काव्य में अंतर्भूत होते है। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र, नाटकलक्षणरत्नकोश, दशरूपक तथा साहित्यदर्पण में रूपक के दस भेंद बताये गये है। उनमें से पाँच एकाकिं है।भाण, प्रहसन, वीथी, व्यायोग और अंक। सभी एकांकियों के लक्षण भी शास्त्रकारोंने निश्चित रूप सें बताए है। प्रस्तुत शोधनिबंध में नागपूर की संस्कृत विदुषीयाँ डॉलीना रस्तोगी., डॉ. विभा क्षीरसागर तथा डॉ स्मिता होटे इनके द्वारा लिखित तथा रूपांतरित . एकांकि रूपकों में से कुछ चुनिंदा एकांकियों का समीक्षणात्मक अध्ययन किया जायेगा।

---

52. अनुदितसंस्कृतसाहित्ये स्वामी विवेकानन्दः

डॉ. सुनीता वर्मन

संस्कृत विभाग (विभागीय प्रधान), विवेकानन्दमिशन महाविद्यालय, पूर्वमदिनीपुर - पश्चिमवङ्ग

अनुदितसंस्कृतसाहित्ये विद्यमानानां ग्रन्थानामुपरि स्वामिविवेकानन्दस्याभिप्रायः।

युगाचार्यविवेकानन्दः

स्वामिनापूर्वानन्देन विरचितः युगाचार्यविवेकानन्दः इति मूलग्रन्थः। युगप्रवर्तक- विवेकानन्दः इति वङ्गीयग्रन्थस्तस्यैवापरा कृतिःयः परं स्वामिनः शततमजन्मजयन्ती , मुपलक्ष्य श्रीगोपालचन्द्रचक्रवर्तिना संस्कृतभाषयानूदितः। ग्रन्थेऽस्मिन् स्वामिनः स्वरचितस्तोत्राणि विशेषतो विविधदृष्टिकोणतो विवेकानन्दाधारेण रचितानि कविवर्गेण समृद्ध पद्यान्यत्रो -पस्थापितानि।

विवेकानन्दचरितम्

श्रीरामकृष्णवारियर्वर्येण विवेकानन्दचरितम् इति पुस्तकं अनुष्टुप् च्छन्दसा अष्टादशाध्यायेषु-निबद्धम्। बाल्यकालादारभ्य पाश्चात्यदेशगमनपर्यन्तं कृत्स्नं वृत्तं तत्रोपनिबद्धम्।

'Rousing Call to Hindu Nation' इति आङ्गलपुस्तकं संस्कृतेनानूद्य **एकनाथरानडेवर्यः** उत्तिष्ठत जाग्रत इति नाम्ना प्रकाशयामास। अत्र प्रतिपाद्यविषयाः सन्ति सनातनधर्मः, हिन्दुधर्मप्रचारः, देशभक्तिः, स्वजनप्रीतिश्च।

---

53. The Narrative Literature in Sanskrit

Vidya.V.

Research Scholar, Dept. of Sanskrit Sahitya, S.S.U.S, Kalady

The narrative literature in Sanskrit mainly falls into two categories, Akyayika and Katha. Though both are narrative in structure, according to Bhamaha, they basically differ in thematic aspect. Akyayika is an account of what actually happened. In Katha, on the other hand, theme must be an imaginary one that means it is fictitious in nature. Again, the fiction itself has many divisions like Katha, Parijatha, Sakalakatha and Khandakatha. Among them katha, in the specific sense of 'Ornate fiction' like Kadhambari, gives primary emphasis of Rasa. It addresses the so called 'Sahrdaya' as it has all the characteristic features of Mahakavya, except the metrical composition. Yet there are several other types of Katha works comprising popular tales, fairytales and didactic fables, in which narration subjugates poetic description and folk elements become more prominent. Anandavardhana says that they are not Ithivritha Nirvahanapara not Rasanirvahanapara (narration of story is more important than the delineation of Rasa). Pancatantra Hitopadesa, Simhasanadvatrimsika, Vetalapancavimsati, Sukasaptati etc are very popular among these types of poetic compositions. In order to distinguish these poetic forms from the 'Katha' or ornate fiction, M. Krishnamacariar denotes them as "Kathanakas.'

---

54. आचार्यश्रीरमेशचन्द्रशुक्लप्रणीते 'नवभारतपुराणे' संस्कृतविदुषामुल्लेखः

डॉ. रमाकान्तशुक्लः, नवदेहली

आचार्य श्री रमेशचन्द्र शुक्लैः प्रस्तुतपंक्तिलेखकस्य प्रार्थनामङ्गीकृत्य "नवभारतपुराणम्" इत्यस्यैकादशाध्यायात्मकस्य संस्कृत-महाकाव्यस्य रचना कृता यस्य प्रकाशनं दिल्लीस्थ-देववाणीपरिषदा १९८५ तमख्रष्टैऽब्दे कृतम्। "अर्वाचीनसंस्कृते" ऽप्यस्य प्रकाशनं १९८६ तमे ढेष्टेऽब्दे जातम्। अस्य काव्यस्य सप्तमेऽध्याये कविना संस्कृतस्य स्वसमकालीनानां विदुषां कवीनां चोल्लेखः कृतोऽस्ति येषु सर्वश्री-हरिहरानन्द आरण्यकः, आचार्यबदरीनाथशुक्लः, जयमन्तमिश्रः, श्रीधरभास्कर वर्णेकरः, रामजी उपाध्यायः, ए. सदाशिव डाँगे, विद्याधरशास्त्री, वी. राघवन्, आचार्यविश्वेश्वरः, देवीप्रसादशुक्लः, बलदेव उपाध्यायः, कृष्णप्रसाद (घिमिरे), नृसिंहदेवशास्त्री, द्रव्येशझाः, डांगे, सुरेशचन्द्रबनर्जी, भारतेन्दुद्विवेदी, ब्रह्ममानन्दशुक्लः, विशुद्धानन्दशास्त्री, परमानन्दशास्त्री, पन्नालालजैनः, फूलचन्द्रजैनः "प्रेमी", मातृदत्तत्रिवेदी, एस.एन. शुक्लः, एस.पी. सिंहः, उमेशः, कृष्णमोहनठक्कुरः, कैलासपतित्रिपाठी, रामप्रसादत्रिपाठी, गुलामदस्तगीरः, ए.एन.

पाण्डेयः, ब्रजमोहनपाण्डेयः, एच.सी. पटयालः, राजनाथपाण्डेयः, एच.एल. रस्तोगी, शिवदत्त आचार्यः, श्रीवरचतुर्वेदी, ओटूर उण्णि नम्बूदिरीपादः, मनोहरलाल गौडः, सुरेन्द्रदीक्षितः, के.सी. आचार्यः, विमला अग्रवालः, रामकृष्ण आचार्यः, सिन्धुडांगे, जी.वी. देवस्थली, बी.एन. कल्ला, पद्मनेत्रः, त्र्यम्बकचिन्तामणिकेघे, एस.डी. लद्दू, जी.बी. पलसुले, उदयचन्द्रजैनः, रामकरणशर्मा, स्वामिनाथः, वेदानन्दझाः, चारुदेवशास्त्री, बटुकनाथः शास्त्री खिस्ते, मिथिलेश मिश्रः, गणेशथिटे, रामभूलः, देवीदत्तशर्मा, कृष्णकान्तशुक्लः, पण्डिताक्षमारावः, उमाकान्तशुक्लः रमाकान्तशुक्लः, विष्णुकान्तशुक्लः, हरवंशलालशर्मा, श्रीनिवासमिश्रः, टी. गणपति शास्त्री, कस्तूरी रंगाचार्यः, डॉ. गोवर्धननाथशुक्लः, सरोजशर्मा, डॉ. बाबूरामयादवः, आचार्यसोमदत्तगौडः, डॉ. सत्यप्रकाशशर्मा, चिन्तामणिशुक्लः, डॉ. कर्णसिंहः, डॉ. वासुदेवकृष्णचतुर्वेदी, डॉ. शशिधरशर्मा, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, पं. भवानीदत्तशास्त्री, आचार्यवैद्यनाथझा, आचार्यकृष्णानन्दशास्त्री, पं. ताराचरणभट्टाचार्यः, पं. वनमाली चतुर्वेदी, पं. रघुनाथप्रसादचतुर्वेदी, पं. मथुरानाथशुक्लः, कथासम्राट् प्रेमचन्दः, श्री एस. सुन्दरराजन, डॉ. वी. कण्णन, पं. टी. वी. परमेश्वर अय्यर, डॉ. वीरभद्रमिश्रः, प्रभाकर रामरत्नशास्त्री, आचार्य पं. रघुनाथ शर्मा, रेवाप्रसाद द्विवेदी वसन्त अनन्त गाडगीलश्च।

आचार्यश्रीशुक्लैः बहूनां संस्कृतविदुषामुल्लेखो न व्यधायि। तत्र कारणं ते निर्दिशन्तिअस्माकं भारतेऽस्मिन् प्रचुरसुरवचोमेधाविसुजनाः तेषां नो सम्भवं वर्णनमिह लघुकृत्यां सर्वकृतिनाम्। स्वल्पास्तस्माद् गृहीताः परमविवशताहेतोर्बुधजनाः क्षस्यन्ते पण्डिताः संस्कृतगिरि निरताः स्वान्तोज्ज्वलतराः॥ इत्थं 'नवभारतपुराणे' कविनाचार्यशुक्लेन प्रसङ्गानुसारं प्रायः स्वसमकालीनानां प्रौढ़ानां यूनां च संस्कृतविदुषामुल्लेखेन स्वलेखनी धन्यतां प्रापिता। यतो हि विद्वान् सर्वत्र पूज्यते। कवेर्विनम्रता कीदृशीति ज्ञातुं वयं जानीमो यत्तेन स्वविषये किमपि पद्यं न निर्मितम्। गुरुभ्यो नमः।

---

55. डॉ. अभिराजराजेंद्रमिश्रकृत शतपर्विका कथा में कन्या का महत्त्व

सौ. सुवर्णा संजयकुमार केवटे
एम. फिल. (संस्कृत साहित्य) क. का. स. वि. रामटेक

संस्कृत साहित्य की काव्यधारा अनादिकाल से ही निरंतर प्रवाहित होकर अद्यावधि गतिशील है | वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत में अनेक काव्यों की रचनाएँ समाज का मार्ग प्रशस्त करती रही है | आधुनिक युग में संस्कृत साहित्य के आधुनिक कवि एवं उनकी कृतियों का ज्ञान होना अत्यावश्यक है | महाकवी कालिदास की उक्ति प्रसिद्ध है - "पुराणमित्येव न साधु सर्वं, न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम् |" अर्थात काव्य की उपादेयता पुराणता या नवीनता के आधारपर निर्धारित नही की जा सकती है | अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में 'अभिराज राजेंद्र मिश्र' इनका नाम सर्वपरिचित है | वह अनेक पुरस्कार प्राप्त २१ वी शताब्दी के मूर्धन्य विद्वान कवि, संस्कृत गीतकार, कथाकार एवं नाटककार है | उनकी साहित्यकृती में २

महाकाव्य, १४ खंडकाव्य, ७ नवनीतसंग्रह, ६२ एकांकीसंग्रह, ४ संपूर्ण नाटिका, ७ कथासंग्रह, ७ शोधपरक ग्रंथ, ७ पाठ्यग्रंथ इ. प्रसिद्ध है |

प्रस्तुत शोधनिबंध में 'इक्षुगन्धा' कथांतर्गत 'शतपर्विका' कथा में कन्या का महत्त्व इस विषय का प्रतिपादन किया जायेगा | जिसमें सात बेटियों वाली पिता की दोहरी मानसिकता का चित्रण है |प्रस्तुत विषय शोधनिबंध के लिये स्वीकारने का उद्देश्य है की प्राचीन काल से लेकर आजतक बेटियों को समाज में बेटों की तुलना में कम महत्त्व दिया जाता है | परंतु आज देखा जाए तो कोई भी क्षेत्रों में बेटों की बराबरी बेटियाँ कर रही है | बेटा और बेटी में जो अंतर है और जो वैचारिक भेद है उसपर 'शतपर्विका' कथानुसार प्रकाश डाला जायेगा, साथ ही कन्या का महत्त्व भी उद्घाटित किया जायेगा |

बेटा और बेटी उसमें भेद न रखते हुए दोनो को समान शिक्षा और समान दर्जा देना आधुनिक जगत में अत्यावश्यक है |

महत्त्व के शब्द - इक्षुगन्धा, शतपर्विका, उद्घाटित, उपादेयता, अभिराज.

---

56. आधुनिक संस्कृत भातक काव्यों में प्रकृति चित्रण (संक्षिप्तिका)

डॉ0 जनक लली पाण्डेय
असि0 प्रोफेसर, पीटी0 जे0 एन0एस0जी0 महाविद्यालय, तरबगंज गोण्डा (उ0प्र0),

प्रस्तुत शोध पत्र आधुनिक काल के संस्कृत शतक काव्यों में प्रकृति चित्रण पर केन्द्रित है। आधुनिक युग में अब तक अगणित शतक काव्यों की रचना हो चुकी है तथा अब भी जारी है। इनमें से बीसवीं शती के उत्तरार्ध में विरचित लक्ष्मी शतक (डॉ0 वरद् राज कण्णन्) श्री गरुडध्वजशतक (डॉ0 रामकिशोर मिश्र), षोडशाक्षरीस्तोत्रशतक (डॉ0 शा0 रा0 स्वामिनाथ कार्यकार), बालीप्रत्यभिज्ञान सार्धशतक, भारती परिदेवन, संस्कृत शतक (अभिराज डॉ0 राजेन्द्र मिश्र), भारताभिज्ञानशतक (डॉ0 बालकृष्ण शर्मा), राजनीतिलीलाशताधिक (डॉ0 दीपक घोष) एवं समयशतक और तपस्विकृषीवल (डॉ0 हरिहर शर्मा अर्याल) को ही स्थालीपुलाकन्यायतः विचारार्थ स्वीकृत किया गया है।

यहाँ प्रकृति चित्रण के अन्तर्गत भगवद्गीता में निर्दिष्ट प्रकृति के पंच महाभूत और उनके कार्य समूह को ही बाह्य प्रकृति तथा अन्तःकरण की वृत्तियों (मन, बुद्धि आदि) को ही अन्तः प्रकृति के रूप में ग्रहण किया गया है।

इन शतक काव्यों में प्रकृति चित्रण का विवेचन करने से यह स्पष्ट होता है कि निर्दिष्ट शतक काव्यों के अन्तर्गत दृश्यप्रधान होने के कारण बालीप्रत्यभिज्ञानसार्धशतक में केवल बाह्य प्रकृति के उभयपक्षों का विस्तृत चित्रण मिलता है, अन्तः प्रकृति चित्रण और अप्रस्तुत विधान की स्थिति नगण्य है, जबकि विषयप्रधान या विचारप्रधान होने के कारण शेष शतक काव्यों में अन्तः प्रकृति और अप्रस्तुत विधान का विशेष महत्व दृष्टिगोचर होता है। संस्कृत शतक में तो बाह्य प्रकृति

चित्रण का सर्वथा अभाव है। अवश्य ही तपस्विकृषीवल और भारताभिज्ञानशतक में विचार–विषय एवं दृश्य दोनों का समन्वय होने के कारण बाह्य प्रकृति, अन्तः प्रकृति और अप्रस्तुत विधान का समानतः महत्व दिखलाई पड़ता है। सामान्यतया तपस्विकृषीवल, बालीप्रत्यभिज्ञानसार्धशतक और भारताभिज्ञानशतक में प्रकृति का विस्तृत चित्रण हुआ है जबकि दूसरी ओर संस्कृतशतक, समयशतक, भारतीपरिदेवन आदि में प्रकृति का अधिक चित्रण नहीं परिलक्षित होता है। इस स्थल पर यह भी उल्लेख्य है कि केवल यहां निर्दिष्ट दस शतक काव्यों के आधार पर प्रकृति चित्रण की दृष्टि से बीसवीं एवं इक्कीसवीं शती के सहस्राधिक अर्वाचीन शतक काव्यों के विषय में अनुमान ही किया जा सकता है। ऐसा इसलिए भी है कि इस युग के शतक काव्यों में राजनीति, समाज, विज्ञान, कृषि आदि के रूप में विषयगत वैविध्य भी बहुत अधिक दिखलाई पड़ता है जबकि पूर्ववर्ती शतक काव्य केवल नीति, शृंगार एवं अध्यात्म से ही सम्बन्धित होते थे। इस कारण इन सभी काव्यों में प्रकृति चित्रण वैविध्यपूर्ण है। इसके साथ ही आज मानव की जीवन शैली पूर्व की भांति प्राकृतिक परिवेश को महत्व नहीं देती, उसमें पूरी तरह कृत्रिमता आ चुकी है। आधुनिक काव्यों में बाह्य प्रकृति चित्रण के पूर्वापेक्षया अल्प होने में यह भी एक कारण है।

---

57. डॉ. इच्छारामद्विवेदी कृत 'प्रणवचतुष्टयी' में रचित 'कीदृशी' में मानव–मूल्य वर्तमान सन्दर्भ में'

डॉ. रीता तिवारी

एसो.प्रो एवं अध्यक्ष संस्कृत विभाग नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ

यशःकाय डॉ. इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव' जी पौराणिक विद्वान्, लेखक, सहृय कवि के रूप में ख्यातिलब्ध है। आपका जन्म इटावा जनपद के इकनौर ग्राम में वर्ष 1961 में हुआ। डॉ. द्विवेदी जी ने पुराणेतिहास में आचार्य की उपाधि स्वर्णपदक के साथ प्राप्त की थी। आपकी शिक्षा–दीक्षा श्रीएकरसानन्द संस्कृत महाविद्यालय मैनपुरी उ.प्र., जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर तथा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली से हुई। आप जन्म से ही विद्या के सम्पर्क में रहे। आपके पिता प्रतिष्ठित विद्वान् आचार्य श्री लाल बिहारी जी द्विवेदी थे। संस्कृत तथा भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पित डॉ. द्विवेदी जी ने श्रीएकरसानन्द संस्कृत महाविद्यालय मैनपुरी तथा श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली में पुराणेतिहास विभाग में आचार्य पद को अपनी ज्ञान व प्रतिभा से अलंकृत किया।

डॉ. इच्छाराम द्विवेदी जी की 20 से अधिक रचनाएँ प्रकाशित है। जिसमें 'ओ महाकवि' तथा 'प्रेरणा के रंग', दूत प्रतिवचनम्, मित्रदूतम्, संस्कृत साहित्ये नलचरितम्, गीत मन्दाकिनी, सत्प्रेरणानाटकम्, मित्रदूतम्, एकादशी, बालगीताञ्जलि, अन्योक्ति रत्नावली, प्रश्नचिन्ह, समुज्जवला, लघ्वी, वोढ़ा, वामनचरितमहाकाव्यम्, प्रणवचतुष्टयी (काव्य संकलनम्) इत्यादि अनेकशः सरस एवं सरल कृतियां सहृदयों के हृदयों को आह्लादित करती रही है। डॉ. द्विवेदी जी अभूतपूर्व प्रतिभा के धनी थे। आपकी लेखनी कविता, नाटक महाकाव्य, उपन्यास, मुक्तक, गज़ल आदि विधाओं में हिन्दी तथा संस्कृत दोनों ही भाषाओं में अधिकार पूर्वक चलती रही है। समाज आपके इस अप्रतिम योगदान से कृतकृत्य है।

---

58. Reflection of Environmental Awareness in The Manusmṛti: A Study

Bhrigu Rajkhowa.
PhD Research Scholar. Dept of Sanskrit. Assam University, Silchar

Environment is taken from the French word 'environ' meaning 'that which surrounds' or 'surrounding circumstances'. In Sanskrit, the equivalent word for environment is Paryāvarana. The derivation is as Pari + ā +vṛ anaṭ in which the first prefix means 'fully covering', and the second means 'completely' and the root have the sense of covering. Thus, in general Environmental Awareness means awareness about one's surroundings which include air, water and plants. The topic has been taken up to go deep into one of the major issue of concern over the globe that is how to deal with the environmental imbalance which is affecting our living abode. Our living earth is facing environmental imbalance which is the resultant factor of materialistic advancement in the present era. Global warming, air and water pollution, overuse of fertilizers, the negative implication of use of plastic and polythene, conservation of energy and fuel resources, all these are contributing factors to this.

In recent days, environmental science and ecology are disciplines of modern science under which study of environment and its constituents is done with minute details. As science, it is established in the 20th century.

The aim and objective of this study is to showcase the *Manusmṛti* of talking care of the environment. *Manusmṛti* also throws light on the environment. Various elements of the nature are highly admired sacred text. *Manu* in his *Manusmṛti*, has enough moral lessons in connection to the care and protection of especially water and trees with their practical values. In this paper, an effort is made to understand the environmental awareness that was prevalent in the *Manusmṛti*.

Keynote: Environment, Manusmṛti, Water, Trees, Pollution.

---

59. धनपाल और विश्वकल्याण

डॉ विजय गर्ग
सहायक आचार्य, हिन्दू महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

साहित्य समाज का दर्पण होता है और तत्कालीन समाज की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, बौद्धिक, और वैचारिक विशिष्टताओं को प्रतिबिंबित करता है। कवि अपने काव्य के माध्यम से सुधीपाठकों को

रसास्वादन करवाते हुए उसे उचित-अनुचित का ज्ञान करने की क्षमता प्रदान करता है। मम्मट के शब्दों में काव्य 'सद्यः परनिवृत्तये' से युक्त होने के साथ-साथ 'कान्तासम्मित' उपदेश से भी युक्त होता है। इस प्रकार काव्य का प्रमुख उद्देश्य मानवमात्र का कल्याण है। संस्कृत की काव्य-परंपरा में कुछ कवि ऐसे भी हैं, जिनके जीवनवृत्त भी कल्याण की भावना से युक्त होते हैं। ऐसे ही एक कवि हैं महाकवि धनपाल। प्रस्तुत में धनपाल पद से दो अर्थ अभिप्रेत है। एक तो धनपाल स्वयं अर्थात उनका जीवन वृत्त और दूसरा धनपाल कृत तिलकमञ्जरी। प्रबंध-साहित्य में उनका जो जीवनवृत्त तथा अपने आश्रयदाता राजा भोज से उनके जो संवाद आदि दृष्टिगत होते हैं। उनमें अकाट्य युक्तियों के आधार पर जिस याज्ञिक हिंसा का प्रतिषेध किया गया है, वह मनुष्य ही नहीं अपितु प्राणी-मात्र के प्रति कल्याण की भावना से ओतप्रोत है। यज्ञ स्तंभ से बंधे हुए बकरे की मिमियाहट को सुनकर राजा भोज धनपाल से पूछते हैं कि यह क्या कह रहा है। निर्भीक धनपाल का उत्तर होता है-

नाहं स्वर्गफलोपभोगरसिको नाभ्यथितस्त्वं मया, सन्तुष्टस्तृणभक्षणेन सततं साधो न युक्तं तव ।
स्वर्ग यान्ति यदि त्वया विनिहता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनो, यज्ञं किं न करोषि मातृपितृभिः पुत्रैस्तथा बान्धवैः||

यह कह रहा है कि मुझे न तो स्वर्ग के फल के उपभोग की कामना है और न ही मैंने आपसे इसके इसके लिए याचना की है। मैं तो केवल तिनके खाकर ही संतुष्ट हूं। आपका यह कृत्य ठीक भी नहीं है। यदि आपके द्वारा यज्ञ में मारे गए प्राणी निश्चित रूप से स्वर्ग जाते हैं तो फिर आप अपने माता, पिता, पुत्र और बांधवों का यज्ञ में बलिदान क्यों नहीं करते। तिलकमञ्जरी का नायक हरिवाहन पराक्रमी और वीर होने के साथ-साथ अत्यधिक बुद्धिमान है। प्राणियों पर दया करना उसके स्वभाव में ही है। वह मृगयाप्रेमी अपने मित्र राजकुमारों के बार-बार उकसाने पर भी पशुओं पर शस्त्र प्रहार नहीं करता-

जातकौतुकैश्च मृगयाव्यसनिभिः क्षितिपतिकुमारैः क्षपणाय तेषामनुक्षणं व्यापार्यत, न च प्रकृतिसानुक्रोशतया शस्त्रगोचरगतानपि तान् जघान ।

इसी प्रकार विश्वकल्याण विषयक की अनेक शिक्षाएँ धनपाल ने अपने जीवनवृत्त और अपने काव्य के माध्यम से दी हैं, जिनकी विवेचना लेख में प्रस्तुत की जाएगी।

---

60. Social Changes and Modern Indian Women: A Different Perception

Mrs. Bhāratī V. Kolekar

Woman, since many years, has three roles to play in her life that of a mother, daughter and wife. Post-independence period, there is a drastic change in the overall positions of women. The opportunities or treaties in different fields that are availed by men are also made available to women because of the implementation of the Government policies like women -welfare, equality among

women & men, women-empowerment etc. As a result, the participation of women in economic, social, political and such other men dominating surroundings has increased and has become important due to impertinent interest of human nature. No doubt it is noteworthy that both men and women must complement each other as their support is necessary for the optimum growth in life. On the contrary, due to the simulation (of the man), the woman is naturally losing the divine qualities which are meant to achieve the goal of all kinds of developments. It is neither necessary for woman to perform the manly duties by dressing like a man, nor it is necessary for her to give up her own qualities. Inculcating the male capabilities, she can bring the change even in the worst conditions of society, conditionally she should be confident. The portrayal of a woman's glory, her virtues, her flaws, her duties, etc., is seen in the Vedic text and in the classical literature as well. Their dedication, honesty, self-sacrifice, hard work and courage make women a real symbol of their beauty and virtue. This paper is an attempt to explain how the modern women can make social transformation by accepting changes that occur for women at all stages in society, keeping in mind what is described about women there in our Dharmashastras.

Keywords: Social changes, Modern women, Indian Women, Awareness

---

61. शान्तिदूते नारीशशक्तिकरणसंदेश:

डॉ.जगमोहन आचार्यः

सहायक-आचार्यः खडगपुर-महाविद्यालयः, पश्चिमबङ्गम्

भारतीयपरम्परायाः ये केचिदर्वाचीनाः सारस्वतसाधकाः काव्यवैभवेन विश्ववासिनां हृदयकन्दरमधिवसन्ति तेषु उनविंशशतकस्य वङ्गीयः कविः रवीन्द्रनाथठाकुर: अग्रगण्यः। तस्य विशालसाहित्ये समाजदर्शनस्य चित्रं सूक्ष्मरूपेण प्रतिभाति। रवीन्द्रसाहित्यस्याधारेण न केवलं बङ्गभाषायामपितु अन्यभाषायामपि साहित्यं रचयन्ति काव्यकर्तारः। संस्कृतेऽपि नैके ग्रन्थाः रचिताः।कवेः वुद्धेश्वरषडङ्गिमहोदयस्य शान्तिदूतम् रवीन्द्रनाथस्य जीवनाधारितकाव्यम्। कवि: वुद्धेश्वरषडङ्गी: काव्येस्मिन् रवीन्द्रनाथस्य जीवनं उपलक्ष्य समाजस्य वहुतत्वं स्पर्श कृतवान्। शक्तिं विहाय जीवनं निष्फलम्।नार्यः सदैव सशक्ताः। तथपि दृश्यते समाजे वहुः विरोधाभासः। यदि नार्यः अपमानिताः भवन्ति तर्हि समाजस्य विनाशः अवस्यमेव। समाजविकाशे आधारशिला नारी। नारीणां कृते सम्मानप्रदर्शनं समाजविकाशाय प्रथमसोपानम्। कवेर्भाषायाम् नारी समाजे यदि पूजिता स्याद् विकाशमार्गोज्ज्वल एव नूनम्। शिखा प्रदीपस्य हि वर्धते चेत् तैलादेदाने रुचिरेव पत्युः।। प्रवन्धस्मिन् शान्तिदूते नारीसशक्तिकरणसंदेशः कथं प्रतिभाति तस्योपरि सिंहावलोकनं भविष्यति।इति शम्।

---

62. पण्डितश्यामानन्दझाकृत मधुवीथ्या विवेचनम्

मुकुल कुमार

मिथिलाया: केन्द्रस्थाने पदवाक्यरत्नाकरविवरणकद् यदुनाथमिश्र- षष्ठिनाथमिश्रपुण्यनाथमिश्र-अर्कनाथमिश्र-गोप्तनाथमिश्र-नीतिनाथमिश्र-नन्दिनाथमिश्र-जेतृनाथमिश्र-खड्गनाथमिश्र - कुमुदनाथमिश्र-हेमपतिझा- श्यामानन्दझा तुलानन्दझा-प्रभृतीनां विदुषां निवासेन प्रसिद्धतमे 'लालगञ्ज' नामके ग्रामे विभिन्नेषु शास्त्रेधु कृतभूरिपरिश्रमाः बहवो विद्वांसोऽभूवन्। अस्यामेव परम्परायां ग्रामस्यास्यैव पण्डितश्यामानन्दझामहाशयो विंशतिशताब्या: आदितो मध्यभागपर्यन्तं विराजमान आसित्। तेन बहूनि काव्यानि विरचितानि। संस्कृतपरका या 'श्यामानन्दरचनावलि' विद्यते, तस्यां कमश: कर्णिका-मधुवीथीवेदना-सुधावल्ली- मातःसरस्वति- विक्रमार्क प्रति-विडम्बना- पञ्चपद्यानि- मनोरथश्च विद्यन्ते। तत्र मधुवीथी नामके काव्ये रसेषु श्रृङ्गाररसस्य अलङ्कारेषु चाप्रस्तुतप्रशंसायाः साम्राज्य विद्यते। तत्र चतुरशीत्यधिकशतपद्यानि विद्यन्ते। तत्र कविः श्यामानन्दझामहाशयो विविधविधा सामाजिकी दुरवस्था दुष्प्रवृत्तिञ्च अन्योक्तिद्वारा चित्रयन् तदपनोदाय विवेकस्य उपयोगाय च धीजनान् समाजञ्च प्रेरयति। काव्येऽस्मिन् प्रयुक्तेषु द्वाविंशत्यलङ्कारेषु अप्रस्तुतप्रशंसा परिवृत्ति- अनुप्रास- उपमाप्रतिवस्तूपमा-परिकर- अतिश्योक्ति-रूपक-काव्यलिङ्ग-वितर्क व्याजस्तुति-विभावना-विषमविशेषोक्ति -परिकराङ्कुर-भ्रान्तिमान् उत्प्रेक्षा अर्थान्तरन्यास-व्यतिरेक-आक्षेप-एकावलीनिदर्शनाऽलङ्काराणां प्रयोगः कृतः कविना । तत्र अप्रस्तुतप्रशंसायाः बाहुल्यं विद्यते। तत्र अप्रस्तुतप्रशंसायाः प्रायेण व्यङ्ग्यम् अर्थ निगदति परन्तु तदपेक्षया वाच्यार्थोऽधिकं चमत्कारम् आतनोति। यद्यपि काव्यशास्त्रदृष्ट्या गुणीभूतव्यङ्ग्यतया मध्यम कोटावियं काव्यमायाति तथापि कविः अस्याः माध्यमेन स्वाभिप्रायं प्रकाशयन् कमपि विशेषमानन्दं विलक्षणां च सन्तुष्टिं मनसि अनुभवति इति मन्ये। तत्र सहृदयपाठकस्तु पाठं पाठमीदृशं काव्यमाहादत एव इत्यस्माभिः दृष्टम्। यथा "बलात्कारं कुर्वन्नपि मधुपमूर्धन्यतिलकः सरोजिन्या वद्धो यदि मिहिर ! मोच्येत भवता। विधत्ता वाध्वंसं निखिलतमसा लोकनिकरे प्रसूतामानन्दं नहि तदयशो नक्ष्यतितमाम्॥ एवं सम्पूर्ण विवेचनं सम्पूर्णे आलेखे करिष्यामि इति सारांशः।

---

63. संस्कृतभाषासंरक्षणे हिमाचलप्रदेशस्य पर्वतीयभाषासोलनशिमलासिरमौरजनपदानां योगदानम्

डॉ. योगेश अत्रि

भारतदेशोऽयं विविधराज्यानां समूहोऽस्ति। तत्र बह्व्य: भाषा: प्रचलन्ति तथापि हिमाचलप्रदेशे ‘पहाड़ी’ इति उपभाषाऽस्ति। ‘पहाड़ी’ इति उपभाषायामपि सिरमौरी, बघाटी, क्योंथली, कुल्लवी, मण्डयाली, चम्बयाली, कहलूरीइत्यादिभाषाणां प्रचलनमस्ति। उत्तरभारतस्य हिमाचलप्रदेशे भूभागे डॉ. ग्रियर्सनमहोदयस्य

Linguistic Survey Of India इत्याख्ये ग्रन्थानुसारं क्योंथली, बघाटी, कुल्लई च प्रसिद्धा वर्तते। 'एकविंशतिशताब्द्यां हिमाचलप्रदेशे या उपभाषा उच्चार्यते, सा पश्चिमीया पर्वतीया उपभाषा वर्तते। भौगोलिकदृष्ट्याऽयं प्रदेश: हिमालयपर्वतस्य पश्चिमभागे स्थितोऽस्ति। वर्तमानकाले एकविंशतिशताब्द्यादौ हिमाचलप्रदेशस्य राजनैतिकमानचित्रे निम्नलिखिता: द्वादशजनपदा: सन्ति। सिरमौरसोलनशिमलाकिन्नौरलाहुलस्पितिकुल्लूमण्डीबिलासपुरऊना-हमीरपुरकाङ्गडाचम्बा:। तत्र लाहुलस्पीतिकिन्नोरौ विहाय अन्यानि सर्वाणि मण्डलानि पहाडीभाषाभाषीणि। प्रत्येकं जनपदे जनै: प्रयुज्यमाणा भाषा पृथक् पृथक् वर्तते। किन्तु कुत्रचित् एकजनपदेऽपि पृथक्पृथक्भाषा प्रयुज्यते। सर्वजनपदेषु जनैः दैनन्दिनव्यवहारे उच्चार्यमाणायां पर्वतीयभाषायां संस्कृततत्समतद्भवशब्दानां संरक्षणम् अवलोक्यते।

हिमाचलप्रदेशे दुर्गमपर्वतपरिखाणां (घाटी) भूभागत्वात् परस्परं क्षेत्रमध्ये भौगोलिकावरोधत्वे (पर्वतानामवरोधेन) सति विविधानामुपभाषाणां विकासः संस्कृतादेव अभवत्। तासामस्तित्वं मूलञ्च अद्यापि प्राप्यते। विकासदृष्ट्या पर्वतीयभाषा एका उपभाषा (बोली) रूपेण प्रचलति। तथापि तस्या: कृते सामान्यव्यवहारे भाषाया: प्रयोगो भवति। पहाड़ी इत्युच्चारणे सर्वत्रकथने वा, शब्दतत्त्वे, रूपतत्त्वे, च विभिन्नता दृग्गोचरी भवति। तथापि बहुत्र स्थलेषु विविधोपभाषाणां शब्दावल्यामुच्चारणे, व्याकरणे च पर्याप्ता समानता वर्तते। केनचित् सुभाषितकारेणसमुचितं भणितम्– **कोस कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बाणी**।। पर्वतीयभाषायामधिकं प्राचीनवीनसाहित्यं तु न वर्तते। तथाप्यत्र तत्समतद्भवशब्दा: प्रचलिता: सन्ति। पर्वतीयभाषायां तत्समतद्भवशब्दानां यद्बाहुल्यं वर्तते, तत् सिद्ध्यति कस्मिन् कालेऽत्रत्या लोकभाषा संस्कृमासीत्। यतो हि पर्वतीयभाषाया: ध्वन्यात्मकवैशिष्ट्यं मूलरूपेण संस्कृतभाषया सहैवाऽन्त: सम्बन्ध: दरीदृश्यते।

---

64. ज्ञान-सूर्योदय-नाटक में प्रबोध

डॉ० सीमा जैन

मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

'ज्ञान-सूर्योदय-नाटक' जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है एक प्रतीकात्मक नाटक है जो ईहामृग के अन्तर्गत आता है। इसके रचयिता हैं- आत्माराधना तथा सत्यसाधना में रत रहने वाले, आचार्य प्रभाचन्द्र के शिष्य, बलात्कार-गणीय सूरत शाखा के भट्टारक पट्ट पद को धारण करने वाले, हुम्मड़ जाति के सत्रहवीं शताब्दी में हुए श्रीमद् वादिचन्द्र सूरि। इनकी सात अन्य रचनाएँ भी प्राप्त होती हैं। 'ज्ञान-सूर्योदय' का नायक है प्रबोध एवं प्रतिनायक मोह है। प्रस्तुत पत्र में नायक प्रबोध का विवेचन करने का प्रयास किया गया है। प्रबोध एक भावरूप प्रतीकात्मक अमूर्त पात्र है। प्र उपसर्ग बुध् धातु तथा घञ् प्रत्यय के योग से बने प्रबोध का अर्थ है जागरण, चैतन्य होना तथा चेतना। स्वाभाविक रूप से उसके सम्बन्धी तथा सहयोगी भी उसके समान सद्भाव ही हैं, जैसे- दया, विनय, न्याय, क्षमा, शान्ति, पुरुष, विवेक, शील, सन्तोष, तर्कविद्या आदि। प्रबोध की अनेक

विशेषताएँ दृष्टिगत होती हैं। उनका सर्वोत्तम गुण है कि वे जिनेन्द्र भक्ति में कभी असावधान नहीं होते। इसका ही परिणाम है कि जब वे अपने सैन्य दल-बल के साथ शत्रु मोह पर आक्रमण करने हेतु जा रहे थे तब भी मार्ग में जिन मन्दिर देखकर वहीं रुककर पूर्ण भक्तिभावसहित जिनेन्द्र भगवान पार्श्वनाथ की तन्मय होकर पूजा तथा स्तुति करने लगते हैं। अपने प्रियजनों के प्रति उनके स्नेह का निदर्शन है कि जब वे शत्रु पक्ष द्वारा अपनी सखी दया के अपहरण तथा उनके द्वारा किए गए उत्पीड़न से अवगत होते हैं तो तत्क्षण युद्ध का सङ्कल्प कर एक-दो दिन में ही मोह आदि का वध करने हेतु तत्पर हो जाते हैं। अपने राजकर्मियों मन्त्री आदि के प्रति उनका सम्मान तथा मन्त्रणा के अनुरूप कार्य करने का उदाहरण है कि शत्रु मोह पर आक्रमण करने हेतु प्रस्तुत होने पर जब उनका मन्त्री विवेक उन्हें पहले दूत भेजने का परामर्श देता है तो वे उसे तत्क्षण मान लेते हैं। इसके साथ ही दूत कर्म के लिए उचित पात्र का नाम भी पूछते हैं। उसकी मन्त्रणानुसार न्याय को ही दूत बनाकर शत्रु के निकट प्रेषित करते हैं। वे अपनी पत्नी अष्टशती के प्रति विशेष सम्मान का भाव रखते हैं। इसी कारण वे उन्हें बुलाने हेतु अन्य किसी को नहीं अपितु श्रद्धा को भेजते हैं। उनका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष मोह के साथ हुए युद्ध में उनके सैनिकों को प्रेषित करने में प्रकट होता है। इसी प्रकार के सद्गुणों का प्रभाव है कि वाग्देवी उन्हें अपने पुत्रवत् मानती हैं तो पुरुष वास्तविक पारमार्थिक पुत्र मानते हैं। सभी नारियाँ उनके लिए मङ्गलकामना करती हैं तथा रणभेरी का स्वर सुनते ही सभी सैनिक स्वयं ही परिवार सहित उपस्थित हो जाते हैं।

---

65. प्राचीन युग से आधुनिक युग तक स्त्रियों की दशा

डॉ०रमा कुमारी, विजयनगर, पटना

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।" नारी की स्थिति से संबंधित मनुका यह कथन दृष्टव्य है। भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है।उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक उतार -चढ़ाव आते रहे हैं।

---

67. आरोग्य का मूल सदाचार

डॉ. मोनिका वर्मा,
सहायक आचार्या - मौलिक सिद्धान्त विभाडॉ. एस.आर.आर. आयुर्वेद विश्वविद्यालय जोधपुर

"स्वस्थवृत्तं यथोपद्दिष्टिं यः सम्यगनुतिष्ठति।
स समाः शतमव्याधिरायुषा न वियुज्यते।।"

चिकित्सा का सम्बन्ध मन एवं शरीर दोनों ही से सापेक्ष है। स्वस्थ मानसिक संकल्प सुखायुष के कारक कहे गये हैं। मन का पोषण मन के सन्तोष से होता है तथा मन का सन्तोष सदाचार से प्राप्त किया जाता है। यदि कहा जाये कि शास्त्रोक्त आचरण सुखायुष के जनक हैं तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

मनोतोष के इसी महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए आयुर्वेदीय संहिताओं में मनोनिग्रह की अनुशंसा करते हुए सचादार को न केवल ऐहिक सुखद का प्रापक अपितु लोकोत्तर में भी अतिशय सुख का कारण माना है -

"इमांस्तु धारयेद्वेगान् हितार्थी प्रेत्य चेह च।
साहसानामशस्तानां मनोवाक्कायकर्मणाम्।।"

मनोवेग को सहन न करने वाला मनुष्य स्वकीय अधिकारित्व को स्वयमेव नष्ट करता हुआ मानो स्वयं को खाने वाला हो जाता है अतः आचार्य चरक स्पष्ट शब्दों में सदाचार का निर्देश करते हैं :-

"नानृत्तं ब्रूयात्, नान्यस्वमाददीत नान्यस्त्रियमभिलषेन्नान्यश्रियं,
न वैरं रोचयेत् न कुर्याद् पापं न पापेऽपि पापी स्याद्।।"

स्पष्ट है कि आयुर्वेदीय परम्परा वैदिक सदाचार परम्परा को सुदृढ़ पुष्ट करने वाली हैं। यही भाव आयुर्वेदीय संहिताओं में पदे-पदे लक्षित होती है। सदाचारपालन का यही भाव **"स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं आतुरस्य विकारप्रशमनञ्च"**[4] के इस घोष में भी लक्षित होती है क्योंकि चिकित्साशास्त्र निश्चितरूप से सदाचार का ही मूर्त्तरूप है। जीवनरक्षण सर्वप्रमुख सदाचार है और जीवन रक्षण के उपक्रमों के साथ ही मानसिक जीवन्तता के निर्माण के लिए आयुर्वेदीय संहिता के नीतिवाक्य वस्तुतः संजीवनी सुधा है।

---

68. अनुबंध चतुष्टय आधुनिक व्यवस्थापन के परिप्रेक्ष्य में

डा.नन्दिनी जठार

अनुबंध चतुष्टय का अर्थ है अनु पश्चात् स्वज्ञानोत्तरं बद्ध्नन्ति,आसंजयन्ति ग्रंथपठने प्रयोजयन्ति इति अनुबंध:|ज्ञान के पश्चात् ग्रंथ अभ्यास के लिए प्रवृत्त होना |सदानंद द्वारा प्रणीत संस्कृत ग्रंथ वेदांतसार में अनुबंध चतुष्टय का व्यवस्थापन प्रक्रिया से संबंध प्रतीत होता है |इस में ग्रंथरचना के संदर्भ में विषय ,अधिकारी ,संबंध एवं प्रयोजन की भूमिका ,स्वरूप, सिद्धांत एवं सोपान की विस्तृत चर्चा की गई है |इन चारों का दैनंदिन जीवन, व्यापार ,उद्योग, तकनीकी क्षेत्र, संस्थाओं एवं संगठनों इत्यादि में उद्देश्य प्राप्ति हेतु प्रयोग किया जाता है, ऐसा सर्वत्र दिखाई देता है| अनुबंध चतुष्टय के चार बिंदु है -विषय, प्रयोजन, संबंध एवं अधिकारी| सदानंदजी के द्वारा शुद्ध चेतना की प्राप्ति यही विषय ग्रंथ रचना में सर्वश्रेष्ठ माना गया है| जबकि व्यवस्थापन में विषय का अर्थ सीमित मात्रा में किया गया हैं कि किस विषय का अध्ययन किया जाए-ऐसा दिखाई देता है| अनुबंध चतुष्टय में प्रयोजन की व्याख्या में जीव एवं ब्रह्म की एकता को प्रतिपादित करना एवं इसका अज्ञान निरस्त करने को प्रधान माना गया है| तो व्यवस्थापन में उद्देश्य विभिन्न प्रकार के कथित किए गए हैं |संबंध के बारे में वेदांतसार में जीव ब्रह्म एकता का निरूपण किया गया है| तो व्यवस्थापन में उद्देश्य की प्राप्ति एवं क्रियाओं के समन्वय की चर्चा है |अधिकारी के संबंध में कहते हुए वेदांतसार में जिज्ञासू शब्द का प्रयोग हुआ है |तो व्यवस्थापन में व्यवस्थापन शास्त्र का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने वाला होता है| अनुबंध चतुष्टय में जिन चार बिंदूओंका का आधार लिया गया है ,वे व्यवस्थापन प्रक्रिया की सारी सीढ़ियों का उपयोग करते हैं या

नहीं ?किन बिंदुओं में समानताएं अथवा विषमताएं हैं ?सिद्धांतों का उपयोग किस प्रकार से हुआ है? उनका समन्वय कैसे होता है? साधन चतुष्टयों का उपयोग किस प्रकार से किया गया है ?उनका संबंध कैसे होता है ?इत्यादि विषयों की चर्चा इस शोध निबंध में की जा रही है|

---

69. अभिराजयशोभूषणे काव्यस्वरूपविचारः

प्रतीक जोशी

तत्र आधुनिक्यां काव्यशास्त्रपरम्परायां अभिराजराजेन्द्रमिश्रकृता अभिराजयशोभूषणम्" इति" कृतिरियं अत्यन्तं महत्त्वपूर्णं स्थानं अधितिष्ठन् विराजते।कृत्यानया आचार्यः मिश्रः काव्य धर्मान् विशदं व्याख्यातवान् तेन च अस्याः कृतेः गौरवास्पदत्वं सर्वैः अवगन्तुं शक्यते।व्याख्याने च तस्मिन् प्राचीनानां अर्वाचीनानां च आचार्याणां नवनवोन्मेषशालिनीं प्रतिभां प्रकटयन् आचार्यः मिश्रः साहित्यशास्त्रस्य गौरवमयीं परम्परां निदर्शयामास। अभिराजयशोभूषणे प्राचीनैः तत्समकालीनैःच विद्वद्वरेण्यैः प्रतिपादितं काव्यस्वरूपं सुसंगतया तर्कशुद्धया च पध्दत्या समीक्षन् आचार्यः स्वमतं उपस्थापयति तद्वारा च काव्यशास्त्रपरम्परां यशोगामिनीं नूतनां दिशं निनीषते। ग्रन्थे$स्मिन् काव्यस्वरूपे महान् विचारः उपलभ्यते तत्रापि काव्यप्रयोजनम्, काव्यहेतुः, काव्यलक्षणम्,काव्यभेदः एवं काव्यात्मा इत्येते विषयाः सम्प्रति विवक्ष्यन्ते।

'प्रयोजनमनुद्दिश्य न$मन्दोपिप्रवर्तते' इत्युक्तिं अनुसृत्य अस्माभिरिदं अनुमातुं शक्यते यत् काव्यरचना अपिकेनचित् महता प्र.योजनेनैव क्रियते इति। अतः काव्यस्वरूपविचारे प्रप्रथमं प्रयोजनविचारः कर्तव्यः इति अस्ति परम्परा।सन्दर्भे$स्मिन् पूर्वाचार्योक्तं मतं खण्डयन् मिश्राः कथयन्ति-

'न धनाय न पुण्याय व्यवहाराय ना$पि वा।
न च सद्यः सुखार्थाय काव्यं निर्मात्ययं कविः।।
वस्तुतस्तस्य कर्मैतत् संस्कारोत्थं स्वभावजं।
यदकृत्या क्षणं यावन्नासौ शमधिगच्छति।।
यथा नोत्पतितुंशक्तो भ्रमरो गुंजनादृते।
तथा कविरयं काव्यादृते शक्तो न जीवितुम्।।
काव्यमेतत्ततो मन्ये कविकर्म स्वभावजम्।
जन्मजन्मान्तरा$वाप्तदिव्य संस्कारसत्फलम्।।'

अस्यायमर्थः धनं, पुण्यप्राप्तिं, व्यवहारं, क्षणिकं सुखं च उद्दिश्य कविः काव्यरचनां न करोति अपितु तत् कवेः पुर्वजन्मकृतसंस्कारप्रबोधजं कर्म, येन विना सः क्षणमेकमपि सुखं नानुभवति।

यथा अलेः कूजनेन विना भ्रमणं असम्भवं एवं कवेः काव्येन विना जीवनं असम्भवम् इति। अनेन इदम् ज्ञायते यत् काव्यं कवेः स्वभावजं कर्म अनेक पूर्वजन्मोपार्जितं कर्मसंस्कारफलं इति आचार्य मतम्।

---

70. श्रीमत्प्रतापराणायन महाकाव्य में प्रकृति–चित्रण

Dr. Rajneesh Sharma
Ph.d. [Education and Sanskrit], Rajasthan

प्रकृति के सुरम्य श्रान्त अंक में संस्कृत कविता कामिनी का जन्म हुआ और निसर्ग कन्यावत् उसने आकार लिया, वैदिक वाङ्मय के उषष्, सरित्, मण्डूक, पृथिवी, वाग्म्भृणी आदि सूक्त इस तथ्य को सम्पुष्ट करते हैं। संस्कृत कविता का मानव जीवन से अभिन्न सम्बन्ध रहा है, तथा मानव जीवन प्रकृति से अन्योन्याश्रित रूपेण सम्पृक्त है, प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना भी असंभव है, तब कविता करने वाला मानव मन कैसे अपने मूलाधार को विस्मृत कर सकता है ? संस्कृत काव्य का ध्येय अस्थिर को स्थिर करना है, अश्रान्त को श्रान्त करना है, अतः विदग्ध हृदय सारस्वतपुत्र प्राकृतिक उपादानों को आलम्बन एवं उद्दीपन उभयरूपों में स्वीकार कर प्रकृति के इन दोनों रूपों का चित्रण अपने काव्यों में करते रहें है। श्रीमत्प्रतापराणायन महाकाव्य में पं. आगेटी परीक्षित शर्मा ने वसन्त, ग्रीष्म और प्राव्ड़ इन ऋतुत्रय के वर्णन पूर्वक प्रकृति प्रेम रस को तो पुष्ट किया ही है , साथ ही महाकाव्य कथानक से इनकी विशिष्ट संगति बैठाते हुए काव्यशास्त्रीय विद्यानकों के अनुपालना में भी इनका पर्याप्त प्रयोग किया है। इस प्रकार ये तीनों ऋतु वर्णन महाकाव्य में रसपरिपाक की दृष्टि से अपना विशिष्ट महत्व रखते है। वसन्तवर्णन अकबर के सेनानायकों आसफखान, फरीदखान, अब्दुल्लाखान, कासिमखान व शाहबाज खान के महाराणा प्रताप द्वारा युद्ध में किए गए वध और उनकी विजय के पूर्वसूचक के रूप में किया गया है। मुगल सम्राट् अनुचर मानसिंह और महाराणा प्रताप के वाक्कलह से उद्भूत अकबर के युद्धोन्माद का सूचक ग्रीष्मवर्णन तथा क्षुधित पुत्री के क्रन्दन से वात्सल्य विगलित महाराणा प्रताप की सूचनार्थ वर्षा वर्णन यहाँ प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार इन ऋतुत्रय के वर्णन का सन्निवेश मात्र महाकाव्य परम्पराओं का निर्वहण मात्र न होकर रस योजना के प्रति औचित्य को धारण करने से सहृदय में महाकाव्य के अंगीरस के आस्वादन की पृष्ठभूमि तैयार करने वाले हैं।

---

71. अर्वाचीनकाव्यपरम्परायां ‘ प्रज्ञाचाक्षुषम् ‘ इति महाकाव्यस्य वैशिष्ट्यम्

डॉ. परागः जोशी
क.का.सं.वि. नागपुरम्।

वैदिककालात् प्रवहिता संस्कृतमन्दाकिनी अद्यापि अक्षुण्णतया तथैव विलसति वाङ्मयलोके इत्यत्र अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्यमेव प्रमाणम्। आदिकवेः वाल्मीकेः वंशजाः नैके रससिद्धाः कवीश्वराः गीर्वाणवाण्या समर्चयन्ति संस्कृतमातरम् । कालानुरूपं यद्यपि नूतनपरिवर्तनानि अनया भाषया आत्मसात्कृतानि यथा नूत्नकाव्यविधाः , लघुकथाः, रूपकानां नूतनप्रकाराः तथापि मूलं स्वरूपं पूर्ववत् परिरक्षितं विद्यते| नवं

काव्यमनवद्यमिति कदापि नैव लक्षितं किन्तु प्राचीनं मूलं स्वरूपं तु सदा सुवन्द्यमिति स्पष्टमेव लक्ष्यते अस्यां भाषायाम् । तस्मादेव अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्ये सम्प्रत्यपि महाकाव्यलेखनपरम्परा रक्षिता दृश्यते । नैतत् सामान्यं कार्यम् । आधुनिकेषु महाकाव्येषु विशिष्टं किञ्चित्महाकाव्यं वर्तते 'प्रज्ञाचाक्षुषम्' । महाकविः मधुसूदन पेन्ना महोदयः अस्य प्रणेता वर्तते ।विदर्भप्रान्तस्य सारस्वतजन्मभूः इति नाम सार्थकतया अनुवर्तयति अयं महोदयः । तद्वारा विरचितमिदं महाकाव्यम् । महाराष्ट्रं सन्तभूमिः इति सुविख्याता वर्तते । अस्यां सन्तभूमौ विदर्भप्रान्ते प्राप्तजन्मनः प्रज्ञाचक्षोः (जन्मान्धस्य) गुलाबरावमहाराजचरितमाश्रित्य ग्रथितमिदं महाकाव्यम् अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्यवैभवस्य सुन्दरमुदाहरणमस्ति । महाकाव्यमेतदादाय महाकविञ्च पुरस्कृत्य शोधपत्रेऽस्मिन् वैशिष्ट्यानि प्रस्तूयन्ते । तानि वैशिष्ट्यानि केवलं भाषागतवैशिष्टायानि उत छन्दोऽलङ्कारवैशिष्ट्यानि न अपितु महाकाव्यस्वरूप-इतिवृत्त-लक्षणपरम्परा इत्यादि बहुभिः नूतनैः विशेषविषयैः साकं प्रतिपादयिष्यन्ते । नूतनं किञ्चित् सारस्वतं तत्त्वं सहृदयानां पुरस्तात् स्थापयितुमयं सुकुमारप्रयासः ।

---

72. पदविचारः

जितेन्द्र कुमार द्विवेदी

संस्कृत विभागः कमला राय महाविद्यालयः-

गोपालगंज विषयेऽस्मिन् भगवता पाणिनिनापि स्वकीयायाम् अष्टाध्याय्यां व्याख्यातम्। कविराज-विश्वनाथेनापि सहित्यदर्पणे पदलक्षण-विषये प्रोक्तं वर्तते। केचन विद्वांसः पदस्य भेदद्वयं स्वीकुर्वन्ति।

1.नामरूपपदम्।-

2. आख्यातरूपपदच।

द्विधापदवादिनाम् एतदेव पदद्वयम् अभिप्रेतम् अस्ति। नामपदेनात्र सुपां प्रकृतिः प्रातिपदिक विवक्षितम् आख्यातपदेन च क्रियाप्रधानं पदम् अभिप्रेतं वर्तते। केचन विद्वांसः तात्विकदृष्ट्या-पदानां द्वविध्येऽपि आन्तरिक भेदमादाय व्यावहारिक दृष्ट्या पदचातुर्विध्यं परिकल्यन्ति । यथा ऋक्संहितायां प्राप्यते " चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्बाह्मणा ये मनीषिणः ।

गुहेय त्रीणि निहितां नेङयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्याः वदन्ति ।।। यास्कमतेऽपि सर्वाण्यपि पदानि चतुर्ष पदभेदेषु प्रविभक्तानि सन्ति । तद्यथा 1-नाम 2.आख्याताम् 3.उपसर्गः 4.निपातश्चेति। आचार्य पतञ्जलिरपि-व्याकरणाध्ययन-प्रयोजन-प्रतिपदान-प्रसंगे पदानां चातुर्विध्यं प्रतिपादयति। तद्यथा "चत्वारि पदजातानि नामाख्यातोपसर्गनिपाताश्चेति ।। अन्ये केचन् विद्वांसः 'कर्मप्रवचनीयमपि पदम्' इत्यपि स्वीकुर्वन्ति। एतच्च स्वीकृत्य पञ्चधा पदम् इति भन्यन्ते। एतेषां मते पञ्चविधानि पदानि भवन्ति। इतिदिक् ।

---

73. आधुनिक संस्कृतसाहित्य की नवीन विधा डायरी-: एक विश्लेषण

डॉअंजना शर्मा .

एसोशिएट प्रोफेसर, संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

संस्कृतसाहित्यधारा वैदिककाल से प्रवाहित होकर आधुनिक काल में भी न केवल सतत-प्रवहणशील है, अपितु युगानुरूप प्रवृत्तियों को आत्मसात करती हुई विविध व विशालतर रुप में आगे बढ़ रही है। गद्यपद्य आदि सभी रुपों में नवीन विधाओं का विकास एवं विस्तार इसको-अभूतपूर्व बना रहा है। इनमें गद्यसाहित्य की अनेक विधाएँ आधुनिक युग में प्रचलित हैं जैसे-उपन्यास, निबन्ध, कहानी, यात्रावृत्त, एकांकी आदि। इनसे पृथक् एक विधा हैडायरी। अंग्रेजी - भाषा का यह डायरी शब्द दैनन्दिता का बोधक है। हिन्दी भाषा में यह 'दैनन्दिनी' अथवा 'दैनिकी' बंगला भाषा में 'दिनपजीति', गुजराती भाषा में 'वासरी' नाम से प्रसिद्ध है। अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला आदि भाषाओं में इस विधा में विपुल लेखन कार्य हो रहा है। किन्तु संस्कृत भाषा में इस विधा में लेखन कार्य नहीं हुआ था। संस्कृत भाषा में इस विधा में सर्वप्रथम डायरी ग्रन्थ लिखने का श्रेय सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो (डॉ.) सत्यव्रत शास्त्री को है। इन्होंने "दिने दिने .याति मदीयजीवितम्डायरी ग्रन्थ के माध्यम से संस्कृत-साहित्य में डायरी लेखन का सूत्रपात किया " है। अंग्रेजी, हिन्दी, बंगाली और मराठी में अनूदित व मौलिक डायरियों का पत्रपत्रिकाओं में-धारावाहिक अथवा पुस्तक रूप में प्रकाशन हुआ है। किन्तु संस्कृत भाषा में डायरी की इस परम्परा का यह क्रम नवीन है। इस नवीन विधा के स्वरूप विश्लेषण का प्रयास प्रस्तुत पत्र में किया गया है।

---

74. Position of Third Gender People in Vedic And Modern Indian Society

Dr. Nandita N Gaikwad

Human being is not material thing rather has spiritual and ethical identity. Hinduism belives tat Soul(Atama) is pure and has no gender. In Vedic period the third gender people already occupied an important position in the society. Lord Shiva’s Ardhanarisvara is best known example of half men and half women. In Ramayan and Mahabharat epic also one can find examples of third gender people and their role in the society. But today society attributed greater importance to gender to the body (flesh) and not to the soul and as a result a very little identity is given separately to this community. It after the judgement of Supreme Court of India in Navtej Singh vs. Union of India, the third gender people has got formal recognition and protected and preserved human rights of the third gender

community in the society. That is why, in Vedic period deep concern towards human rights and fundamental freedom of all is strongly expressed. Human right core element is equality, inherent dignity of an individual, freedom, and development. The value for human dignity, equality, freedom justice is found in the Veda irrespective of sex. The Veda played a vital role in nourishing, sustaining and upholding human values and right of third gender sex. This spirit of Vedas in protecting and preserving rights of third gender people is now protected by the India Constitution. Through this article the author has analysed the position of third gender people in the Vedic period as well as in modern India.
Keywords: Hinduism, Indian Constitution, Third Gender, Vedas

Sanskrit Pedagogy

1. संस्कृत विषयाच्या परिणामकारक अध्ययन अध्यापनात संस्कृत संशोधन केंद्राची भूमिका अभ्यासणे

माधुरी अभय कुलकर्णी
संस्कृत विभाग प्रमुख, लाहोटी कन्या प्रशाला,कराड-415110 (महाराष्ट्र)

संस्कृत ही अतिप्राचीन भाषा आहे. ती गीर्वाणवाणी ज्ञानभाषा आहे. अनेक प्रकारच्या वैज्ञानिक संशोधनाची मूलतत्वे ही संस्कृत ग्रंथांमध्ये सापडतात. म्हणजेच प्राचीन भारतीय जीवन शैली ही वैज्ञानिक अधिष्ठान असणारी होती.या विषयाचे महत्व जाणून अध्यापनात नाविन्य आणण्यासाठी NCF-2005 च्या राष्ट्रीय आराखड्याने पुरस्कृत केलेल्या ज्ञानरचनावादी-कृतियुक्त अशा अध्यापन घटकांनी परिपूर्ण अशी मुलांसाठीची संस्कृत तथा संस्कृति एवं संशोधनकेंद्रम् अशी संकल्पना साकारली. साधारणपणे 1200 स्क्वे.फूटाच्या परिसरात गुरुकुल साधनाकक्ष, संगणककक्ष, खेळवर्ग, आयुर्वेद उद्यानम् ग्रन्थालय अशा विभागात ही संस्कृत भाषेवर ती शिकताना नव्याने प्रयोग करण्यासाठी प्रयोगशाळाच उभी केली आहे. NCERT, CBSE, SSC सर्व मंडळांचा अभ्याक्रम लक्षात घेवून त्याला पूरक, गाभाभूत सर्व व्याकरण, लेखन यासाठी आवश्यक घटकांची कल्पकतेने मांडणी केली आहे. do and learn हा या ठिकाणचा मूलमंत्र आहे. भारतीय संस्कृतीची वैज्ञानिकता पटवून देण्यासाठी आनन्दयात्रा आहे. मुलांच्या मनातील भोवतालच्या जगातील वाढत्या समस्यांमुळे जी नकारात्मकता, चिडचिडेपणा निर्माण होत आहे तो साधना, प्राणायाम माध्यमातून दूर होणार आहे. वरील सर्व गोष्टींचा विद्यार्थ्यांवर-शिक्षकांवर होणाऱ्या परिणामांचा अभ्यास या संशोधनात केलेला आहे.

उद्दिष्टे:

1) ज्ञानरचनावादी कृतियुक्त खेळातून संस्कृत शब्दवृद्धी व व्याकरण सराव देणे.
2) संस्कृत साहित्याबद्दल आदर निर्माण करुन, तंत्रज्ञानाचा वापर करुन वैज्ञानिकतेची जाणीव करुन देणे.
3) संस्कृत भाषण -संभाषणास प्रवृत्त करुन अध्ययन प्रक्रिया आनंददायी बनविणे.

निष्कर्ष -

अशा विविधांगी संशोधन केंद्रामुळे विद्यार्थी-शिक्षक-पालक सर्वच जण संस्कृत विषयाकडे आदराने बघू लागले. पर्यायाने संस्कृतचे भवितव्य चांगले आहे याची जाणीव अधिकारी, संस्था चालकांनाही झाली. संस्कृत विषयाचा निकाल देखील चांगला लागू लागला. समाजामध्ये संस्कृत विषयाबद्दल आता उत्सुकता निर्माण झाली आहे. अनेक शाळा या संशोधन केंद्रास भेटी देत आहेत. भविष्यात अशा प्रकारच्या प्रत्येक विषयाच्या वर्गखोल्या प्रत्येक शाळेत निर्माण झाल्या पाहिजेत यासाठी संशोधिका संशोधन करत आहे.

वरील सर्व उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी कार्यान्वित केलेल्या कृतींचा संशोधनात्मक अभ्यास या संशोधन पत्रामध्ये सादर केला आहे.

2. गोमंतकातील संस्कृत अध्ययन

गीता काळे

माजी सहसंचालक, राज्य शिक्षण संशोधन व प्रशिक्षण परिषद. गोवा.

म्हणजे गोवा या दृष्टीने गोव्याकडे पाहिले जाते.पण याच गोव्याला संस्कृत अध्ययनाची मोठी परंपरा लाभली आहे.४५०वर्षे पोर्तुगीजांच्या अधिपत्याखाली राहून ही गोमंतकीयांनी जोपासलेली धार्मिक, सांस्कृतिक आध्यात्मिक वृत्ती आणि संस्कृतचे अध्ययन टिकवून ठेवण्याची जिद्द कौतुकास्पद आहे.गौडपादाचार्य मठ,पर्तगाळ मठ , कवळे शांकरपाठशाळा या संस्था संस्कृत व वेदविद्येचे अध्ययन करण्यासाठी २०० वर्षांपासून प्रयत्नशील आहेत.कुंड ई येथील तपोभूमी वर ब्रम्हानंद संस्कृत पाठशाळा इ.स. २०००मध्ये सुरू करण्यात आली.या संस्थेतर्फे अनेक संस्कृत केंद्रांमधून विद्यार्थ्यांना संस्कृत भाषेचे अध्यापन केले जाते.२०१७ मध्ये संस्कृत महाविद्यालय ही. सुरू करण्यात आले आहे.नागपूर येथील कविकुलगुरु कालिदास विद्यापीठातर्फे येथे पदवी पर्यंतच्या शिक्षणाची व्यवस्था करण्यात आली आहे. पूर्वी विद्यार्थ्यांमध्ये संस्कृत विषयाचे औपचारिक तृतीय भाषा म्हणून अध्ययन अध्यापन अत्यल्प प्रमाणात केले जात होते. सामान्य लोकांमध्ये जागृती नव्हती. प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध नव्हते.मी,प्रा. वाळिंबे, फडके,मोडक, मेणसे,सौ.साधले इत्यादी मोजकेच शिक्षक शालेय विद्यार्थ्यांना संस्कृत विषयाचे बाहेरून अध्यापन करत होतो.हे विद्यार्थी ८वी ते१०वी ,११वी१२वी पर्यंत संस्कृत तृतीय भाषा,द्वितीय भाषा म्हणून शिकत असत.पण संख्या अत्यल्प होती. मात्र या दशकात विद्यार्थ्यांची संख्या वाढत आहे.संस्कृत भारती व एससीईआरटी संस्थांच्या प्रयत्नांनी प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध झाले आहेत. काही विद्यार्थ्यांमध्ये इ.५वी पासून संस्कृत विषय शिकवला जात आहे.राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान तर्फे २०१७ पासून अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केंद्र सुरु करण्यात आले आहे. आज गोमंतकात संस्कृत शिक्षणाचा प्रचार व प्रसार जोमाने सुरू आहे.

---

3. छात्राभिवृत्त्युपलब्ध्योः परिप्रेक्ष्ये सङ्गणकसाहाय्येन संस्कृतप्रत्ययानुदेशनम्

डॉ.मनमोहन शर्मा

संस्कृतसंवर्धनप्रतिष्ठानम्, नवदेहली

इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते ॥

स्पष्टमेव यत् भाषा एव जगति व्यवहारस्य प्रमुखं साधनम् इति। व्याकरणम् एव अस्याः प्रमुखः निकषः। अनेन व्याकरणेन एव भाषा सौष्ठत्वं प्राप्नोति इति प्रायः स्वीकृतं तथ्यम्। इदमपि स्पष्टमेव यत् भाषा नूतनातिनूतनानां शब्दानां प्रयोगेण एव प्रभावकारिणी भवति। एतेषां नूतनानां शब्दानां निर्माणक्षमता वस्तुतः प्रत्ययेषु निहिता । अतः प्रत्ययानां प्रयोगवर्धनक्षमतायाः विकासः एव एतेषां शिक्षणस्य किञ्चन प्रमुखं

प्रयोजनम् इति। अस्मिन् सन्दर्भे छात्राणां स्वीकारात्मकं चिन्तनम् अपेक्षितम्। यद्यपि इदं पारम्परिकविधिना शक्यम् तथापि आधुनिके सङ्गणके युगे सङ्गणकसहानुदेशनस्य कः प्रभावः इति सन्धानम् एव अस्य शोधपत्रस्य विशिष्टम् उद्देश्यम्।

शैक्षिकदृष्ट्या निहितार्थत्वेन वक्तुं शक्यते यत् व्याकरणशिक्षणे विशिष्य प्रत्ययाध्ययने आत्मसम्प्रत्ययस्य, प्रत्ययानाम् अभिक्षमताया: प्रत्ययानाम् उपयोगिताया: प्रत्ययानाम् अध्ययने काठिन्यम् इत्यादीनाम् आयामानां विषये छात्राणां स्वीकारात्मकं चिन्तनम् अपेक्षितं भवति। स्वीकारात्मकाभिवृत्तौ सति छात्राणां प्रत्ययसम्बद्धोपलब्धौ अपि वृद्धि: भविष्यति तत्रापि संस्कृतप्रत्ययानां सामान्यज्ञानं, प्रकृतिप्रत्ययो: ज्ञानं, प्रत्यययुक्तशब्दार्थज्ञानं, प्रत्ययै: पदनिर्माणज्ञानं, प्रत्ययानां वाक्ये प्रयोगज्ञानं तथा प्रत्ययनियमानां ज्ञानम् इति आयामेषु समुचिताभिवृद्धि: भविष्यति येन छात्राणां भाषा शुद्धा परिष्कृता प्रभावशालिनी च भविष्यति एवञ्च अध्यापकै: अभिभावकैः च सङ्गणकसहानुदेशनेन भारः अपि न्यून: भविष्यति। छात्राः स्वगत्या विषयान् पठित्वा विषयं समुचितरूपेण अधिगमिष्यन्ति। तेषां सर्वाङ्गीणविकासस्य मार्गः अपि प्रशस्त: भविष्यति इति।

---

4. वेद शिक्षणार्थ अन्तरजालीय स्रोत

जलज कुमार

वेद वैश्विक साहित्य के सर्वाधिक प्राचीनतम ग्रन्थों में से एक हैं। वेद शब्द के लिए संस्कृत व्याकरण में चार धातुओं का प्रयोग किया जाता है। जिनकें अर्थ भी भिन्न-भिन्न हैं। प्रथम धातु 'विद् सत्तायाम् ' जो कि दिवादिगण की है इसका अर्थ- 'होना' है। द्वितीय धातु 'विद् ज्ञाने ' जो अदादिगण की है जिसका अर्थ- 'जानना' है। तृतीय धातु 'विद् विचारणे ' जो रुधादिगण की है जिसका अर्थ- 'विचारना' है तथा चतुर्थ धातु 'विद्लृ लाभे ' जो तुदादिगण की है जिसका अर्थ- 'प्राप्त करना' है। वेद शब्द ज्ञानार्थक विद् धातु (विद् ज्ञाने) से तद्धित घञ् (अ) प्रत्यय के योग से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ ज्ञान से लिया जाता है। इस प्रकार वेद शब्द का आशय ज्ञानराशि अथवा ज्ञान का भण्डार से लिया जा सकता है। हमारे प्राचीन ऋषियों द्वारा आर्ष दृष्टि से प्राप्त किए गए ज्ञान को वेद कहा जा सकता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद के रूप में वेदों की सङ्ख्या चार है। इनमें से सर्वाधिक प्राचीन ऋग्वेद को माना गया है।

प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से शोधच्छात्र वेद शिक्षणार्थ अन्तरजालीय स्रोत को निम्नबिन्दुओं में प्रदर्शित करेगा-

(क) विश्वविद्यालय स्तर पर किस प्रकार अन्तरजालीय स्रोतों को प्राप्त किया जा सकता है।
(ख) वैदिक शिक्षण में किस प्रकार अन्तरजालीय स्रोतों का प्रयोग कर सकते हैं तथा कहाँ पर प्रयोग किया जा रहा है।

---

5. विद्यालय-महाविद्यालय-संस्कृतशिक्षणयोः सेतुबन्धः

डॉ. रणजित बेहेरा

एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृतविभागः, दिल्ली-विश्वविद्यालयः, दिल्ली – 110007

संस्कृतभाषाया अध्ययनमस्माकं देशे प्रायः षष्ठ-कक्षातः प्रारभ्यते। केषुचित् राज्येषु विद्यालयेषु वा प्रथमकक्षातः वैकल्पिकभाषारूपेण भाषेयं पाठ्यते। उत्तराखण्ड-हिमाचल-प्रदेश-राज्ययोः द्वितीयराजभाषारूपेण प्रसिद्धेयं दैवीवाक्। अस्याः भाषाया अध्ययनमध्यापनञ्च महाविद्यालयस्तरे विश्वविद्यालयस्तरेऽपि सम्पद्येते। सर्वैः स्वीक्रियते यत् विद्यालयस्तरे महाविद्यालयस्तरे विश्वविद्यालयस्तरे च पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रमः, पाठ्यपुस्तकं, पाट्यसामग्री, शिक्षणविधयः, अन्तर्जालीयस्रोतांसि, प्रशासनं, मूल्याङ्कनञ्चेत्यादयः भिन्नाः भिन्नाः वर्तन्ते। संस्कृतशिक्षणस्य समुन्नत्यै स्तरानुगुणं पाठ्यक्रमः पाठ्यपुस्तकञ्च भवेताम्। विद्यालयस्तरे महाविद्यालयस्तरे च छात्राणां संस्कृताध्ययने रुचिवर्धनाय प्रमुखाः भवन्ति पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तक-शिक्षणविधयश्च। एवमनुभूयते यत् उभयोः स्तरयोः पाठ्यचर्या-पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकादीनां निर्माणसमये समन्वयो नैव संदृश्यते। शोधपत्रेऽस्मिन् उभयोः स्तरयोः संस्कृतशिक्षणस्य स्थितेः समन्वयस्य च समीक्षा सविस्तरं प्रतिपादयिष्यते यस्य रूपरेखेत्थं वर्तते- (क) विद्यालयस्तरे संस्कृतशिक्षणस्य स्थितिः (ख) महाविद्यालयस्तरे संस्कृतशिक्षणस्य स्थितिः (ग) विद्यालयमहाविद्यालयस्तरयोः पाठ्यक्रमनिर्माणपद्धतिः (घ) विद्यालय-महाविद्यालयस्तरयोः पाठ्यपुस्तकनिर्माणपद्धतिः (ङ) पाठ्यपुस्तकानि सहायकसामग्र्यश्च (च) प्राशासनिकव्यवस्था (छ) संस्कृतशिक्षणे अध्यापकानां भूमिका (ज) मूल्यांकनम् । शोधपत्रेऽस्मिन् उभयोः स्तरयोः संस्कृतशिक्षणस्य सेतुबन्धमाधृत्य समुचिता समीक्षा समुपस्थापयिष्यते।

---

6. Samskrit Tutorials: A Gateway to Learn Samskritam (A Pedagogical Investigation on Samskrit Tutorials)

Preeti Shukla

Education plays a pivotal role in the overall development of an individual. Bhaarat has a mature civilization and Samskrit is the tool through which it achieved the supremacy and preserved it too for thousands of years. The role of Samskrit Promotion Foundation in promoting and popularising Samskrit language through the help of modern technology focusing especially on *'Samskrit Tutorials'* is discussed in this paper. A distinctive feature of these tutorials is that the activities are arranged systematically from Primary level to Higher Secondary level which gradually leads to deep exploration of complex topics in simplified form for self-learning. *The unique feature is that the complete mode of instruction is in simple Samskrit language.* We have discussed each level and the various

pedagogical approaches adopted to not only arouse the curiosity of the learners but also to create an awareness to utilise the language to express their everyday thoughts. How the learners are benefited by the tutorials which facilitates easy language learning process is described in the concluding part.

Keywords: Samskrit Promotion Foundation, Samskrit Tutorials, Pedagogical tools.

---

7. Distance less Distance Education
वि-दूरशिक्षणम्

Dr. Shivani V

Professor, Department of Vyakarana Karnataka Samskrita Uni., Bangalore

Education is a continuous process for life time. वि-दूरशिक्षणम् in the sense of विगतं दूरं यस्मात् । There is no distance in distance education. Due to invent of communication technology, Distance has been reduced/collapsed. Instead of holding youth in class rooms, they have to be freed to work according to their abilities and interest. Few advantages of वि-दूरशिक्षणं are -

1. Beyond walls
2. Across disciplines
3. Irrespective of age
4. skill oriented

What makes Distance Education Different?

1. A platform which have higher degree of freedom
2. It covers all the levels
3. Offline or online, student will be taught by a teacher
4. Can discuss with classmates
5. Can get direct guidance
6. Can take direct exams
7. without the constraints of the physical presence
8. Through DE one can study in higher speed from anywhere and at anytime.

In this paper, the author discusses the advantages of distance education that does not have distance at all. The effective ways of distance learning and the resources also will be discussed.

---

8. भारतीयसन्दर्भे समावेशात्मकशिक्षायाः सम्प्रत्ययः आवश्यकता च

डा. जितेन्द्रकुमाररायगुरुः

सहायकाध्यापकः, शिक्षाविभागःक.जे.सोमैयासंस्कृतविद्यापीठम् विद्याविहारः, मुम्बई.

अदः शोधपत्रं वर्तमानभारतीयसन्दर्भे समावेशात्मकशिक्षायाः आवश्यकताः उपहुतयश्च विश्लेषणं कर्तुं प्रयतते। मनोविज्ञानानुसारं यद्यपि बालकानां प्रकाराः विविधरूपेण वर्त्तन्ते, किन्तु सामान्यतया बालकाः द्विविधाः भवन्ति। सामान्यः विशिष्टश्च। येषां बालकानां शारीरिक-मानसिक-सांवेगिक-सामाजिकावश्यकताः समानाः भवन्ति ते सामान्यबालकाः भवन्ति। अर्थात् सामान्यकार्यं कर्त्तुं कस्यापि आवश्यकता न भवति, स्वावभिकतया ते समाजे विद्यालये वा स्वस्य कार्यं कर्त्तुं समर्थाः भवन्ति। किन्तु येषां बालकानां शारीरिक-मानसिक-सांवेगिक-सामाजिकावश्यकताः समानाः न भवन्ति ते विशिष्टबालकाः भवन्ति। ते कमपि कार्यं कर्त्तुं स्वयं ससर्थाः न भवन्ति। यथा मूक-दृष्टिहीन-श्रवणहीन- शारिरीकाक्षमता-मस्तिष्काक्षमता इत्याद्यः भवन्ति। यदि वयं प्राचीनकालादारभ्य भारतीयशिक्षाव्यवस्थां दिदृक्षामहे तर्हि शिक्षाव्यवस्था केवलं सामान्यबालकेभ्यः कल्पिता आसीदिति नास्ति संशयः। येन विशिष्टबालकाः शिक्षायाः सामान्यावसरः न प्राप्तवन्तः। ते शिक्षिताः भवेयुः समाजे ते स्वयं स्वस्योत्तरदायित्वं निर्वहेयुः चेति मनसि निधाय तेषां कृते विशिष्टशिक्षाव्यवस्था कल्पिता सर्वकारेण। विशिष्टशिक्षायां तेभ्यः विशिष्टोपकरणैः विशिष्टाध्यापकैश्च शिक्षाप्रदानस्य व्यवस्था कृता। यद्यपि ते शिक्षिताः अभूवन् तथापि विशिष्टबालकानां सहपाठिनः विशिष्टबालकाः भवन्ति, अतः तेषु सामाजिकभावनायाः विकासः न सञ्जातः। तदनन्तरं साकल्यशिक्षायां सामान्यबालकैः सह विशिष्टबालकानां शिक्षाव्यवस्था कृता। अस्यामपि शिक्षायां यद्यपि तेषां बालकानां सामाजिकगुणस्य विकासः सञ्जातः किन्तु सामान्यविद्यालये विशिष्टाध्यापकस्य विशिष्टोपकरणस्य चाभावात् अधिगमः न जातः। अतः तादृश्यः शिक्षायाः आवश्यकता अनुभूता यस्यां विशिष्टोपकरणैः विशिष्टाध्यापकैः विशिष्टपाठ्यक्रमैश्च सामान्यबालकैः सह विशिष्टबालकाः शिक्षाग्रहणं कर्त्तुं शक्नुयुः। साम्प्रतम् एतादृशी शिक्षा समावेशात्मकशिक्षेति उच्यते। यद्यपि स्वतन्त्रताप्राप्तेः 70 वर्षाणि जातानि, तथापि विशिष्टबालकानां विकासः समधिकः न जातः। सर्वकारस्तरेषु असर्वकारस्तरेषु च तेषां बालकानां विकासाय नैके प्रयत्नः कृते सति विशिष्टावश्यकतायुक्तबालकानां परिष्ठितौ परिवर्तनं नावलोक्यते। अद्यापि विशिष्टावश्यकतायुक्तबालकेषु बहवः बालकाः समाजस्य मुख्यधारातः वञ्चिताः भवन्ति। विकासस्य सशक्तोपकरणत्वेन शिक्षायाः महत्त्वमुररीकृत्य विशिष्टबालकानां शिक्षाव्यवस्थां प्रति विशिष्टावधानं दद्यात्। प्रस्तुते शोधपत्रे समावेशात्मकशिक्षायाः आवश्यकतायाः उपहुतीनाञ्च तथ्यात्मकं संख्यात्मकञ्च विवरणं प्रतिपादितमस्ति। अत्र अशिक्षात् समुत्पाद्यमानासमानतायाः सामाजिकविकृतेश्च निवारणोपायान् प्रतिपाद्य समावेशात्मकशिक्षायाः स्वरूपं सविस्तरं प्रतिपादितमस्ति। येन विशिष्टबालकाः स्वं समाजतः भिन्नरिति न मत्वा समाजस्याभिन्नाङ्गत्वेन सामान्य बालकवत् समाजे स्वस्योत्तरदायित्त्वं निर्वहणकर्त्तुं समर्थाः भवन्ति। किञ्च समाजः विद्यालयश्च तैः सह सामान्यः व्यवहारः समाचारेत्। विविधशोधाध्ययनेन प्रतिपादितानां योजनानां, सर्वकारीय असर्वकारीय च योजनानां समुल्लिख्य प्रस्तुतशोधपत्रेण एतत् साधयितुं प्रयत्नः विहितः यत् समाजे विशिष्टबालकनां शिक्षासम्बन्धिततथ्यानां सङ्कलनं करणीयम्, येन तेभ्यः समावेशात्मकशिक्षायां समुचितावसरं प्रकल्प्य राष्ट्रस्य विकासे स्वस्य भूमिकां निर्वोढुं ते समर्थाः भवेयुः। विषयेऽस्मिन् सविस्तरं विवरणं पत्रवाचनसमये समुपस्थाप्यते।

9. संस्कृतभाषाधिगमनाय शिक्षणशास्त्रस्य प्रभावात्मकमध्ययनम्

Effective Study of Pedagogy for Learning of Sanskrit Language.

डा .डम्बरुधरपतिः

सहायक-आचार्यःशिक्षाशास्त्रविभागः राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्मा.वि.वि भोपालपरिसरः, भोपालम्, म.प्र

अखिले ब्रह्माण्डे अद्यापि संस्कृतं पठ्यते पाठ्यते च। वैदिककालेऽपि संस्कृतस्य अध्ययनाध्यापनपरम्परे आस्ताम्। परं सम्प्रति अध्ययनाध्यापनपरम्परयोः कश्चित भेदो वर्तते। आधुनिकज्ञानविज्ञानेन छात्रकेन्द्रीतं शिक्षणमिदानीं चलति। यावदधिगमसामर्थ्यं न भवति तावच्छिक्षणं सफलं न भवतीति, धीमन्त आमनन्ति। अधिगमसामर्थ्यसम्पादनाय वर्तमानसमये शिक्षायां शिक्षणशास्त्रस्य व्यवस्था क्रियते। अत्र अधिगमसामर्थ्यं द्वयोः पक्षयोः कृते वर्तते। यत्र शिक्षकः छात्रश्च आगमिष्यतः। शिक्षणशास्त्रस्य अधिगमः प्रथमतः शिक्षकस्य भवेत्। शिक्षणशास्त्रे शिक्षणेन सह अधिगमविषयकतत्त्वं विद्यते। यावदधिगमः न भवति तावच्छिक्षणं कदापि न सम्भाव्यते। अतः शिक्षणाधिगमकौशलानां विश्लेषणं शिक्षणशास्त्रे विद्यते।

शिक्षणशास्त्रस्य अर्थः---

शिक्षणाधिगमप्रक्रियायां वैज्ञानिकविधीनां प्रयोगं कर्तुं , छात्रकेन्द्रीतबोधस्तरम् अभिवर्धयितुं स्तरानुकूलाधिगमपर्यावरणं निर्मातुं च विविधकौशलानां ज्ञानं यतः प्राप्यते तदेव शिक्षणशास्त्रमिति कथ्यते।

शिक्षणशास्त्रस्य तत्त्वानि--

शिक्षणसिद्धान्तः, शिक्षणविधयः, शिक्षणसूत्राणि, शिक्षणस्तरः, अधिगमसामग्री, शिक्षणोपकरणम्, तार्किकक्रमः, पृष्ठपोषणं, स्वस्थवातावरणं, सूक्ष्मशिक्षणं मूल्यांकनं च। शिक्षणशास्त्रस्य निर्धारितोद्देश्यानि तु सैद्धान्तिकपक्षो वर्तते। परं शोधलेखे संस्कृतभाषाधिगमने अस्य शिक्षणशास्त्रस्य प्रायोगिकपक्षः क इति विचारयामः।

संस्कृतभाषाधिगमने शिक्षणशास्त्रम्-

संस्कृतभाषा सम्प्रति प्रायशः विद्यालये , महाविद्यालये विश्वविद्यालये च पाठ्यते। परं तस्य प्रभावः यथा स्यात् तथा न भवति। यद्यपि सैद्धान्तिकरूपेण अध्ययनाध्यापनं क्रियते शिक्षकैः परं तस्य प्रायोगिकपक्षं संस्कृतानुकूलं न भवति। संस्कृतशिक्षणे स्मृतिस्तरस्य विकासो भवति। परं शिक्षणशास्त्रस्य प्रायोगिकक्षेत्रे स्मृतिस्तरेण सह बोधस्तरस्य चिन्तनस्तरस्य च विकासो भवेत्।

न तु सैद्धान्तिकरीत्या शिक्षणशास्त्रस्य प्रयोगः कक्षायां स्यात् अपितु कक्षायाः परिस्थित्यनुकूलं शिक्षणसिद्धान्त-विधि-सूत्र-सामग्रीणां प्रयोगः करणीयः। सम्प्रति संस्कृतं सर्वत्र जनभाषा, मातृभाषा, सम्पर्कभाषा, सामाजिकभाषा वा नास्ति। अतः अस्याः भाषायाः पठनपाठनपद्धत्याः रूपरेखा रुच्यनुकूला स्यात्। रुचिम् अभिवर्धयितुं शिक्षणशास्त्रस्य व्यवस्था विद्यते। रुचिः नाम सरलम्। केवलं यदि सैद्धान्तिकरूपेण एकस्य पक्षस्य प्रयोगः सदा करिष्यते तर्हि संस्कृतभाषा कठिना भविष्यति। परिस्थित्यनुकूलं सरलं कर्तुं,

कारयितुं बोधयितुं वा शिक्षणशास्त्रस्य यस्याशंस्य आवश्यकता कक्षायां भविष्यति तस्य प्रयोगः करणीयः। ततः रुचिः आगच्छति।

---

10. शब्दशास्त्रे शैक्षिकाकूतयः

ड.वेदप्रकाशमिश्रः

असि नवदेहली.-प्रोफेसर)संस्कृतम्(

दृग्गोचरीभूते निखिलेऽपि विश्वे ध्वन्यात्मक-वर्णात्मकोभय भेदेन शब्दाः प्रयुक्ताः वर्तन्ते। लोके तेषामेव मिथः भावावबोधनाय शब्दव्यवहारो दृश्यते। शब्दजव्यापारो हि महान् साधनाविषयः ,यतो हि शब्दान् अविज्ञाय तेषाम् अर्थम् अज्ञात्वा प्रयोगः क्रियते चेन्महान् हानिः सम्भाव्यते। साधुशब्दानामेव प्रयोगं कुर्मः नापशब्दानां तदर्थम् आचार्यैः विविधव्याकरणशास्त्राणां शिक्षाशास्त्राणां निरुक्त-कल्पादिशास्त्राणां प्रणयनं कृतम्। अस्माकं परम्परायां भणितिर्विद्यते **"अपदं न प्रयुञ्जीत"**। मात्रापरिमेयधारिण्यां शब्दशास्त्रीयपरम्परायां महर्षिपतञ्जलिना असकृदुक्तं यद् साध्वनुशासनं कर्तव्यं साधुशब्दानामेवान्वाख्यानं करणीयम् ,तेषामभिमतिर्वर्तते यदि एकोऽपि शब्दः सम्यग् ज्ञायते तर्हि तदेव स्वर्गार्थं लोकार्थञ्चाभ्युदयकारी भवति न तु कदाचिदेवमेव जल्पिताः म्लेचताश्च शब्दाः।शब्दव्यवहारविषये भाष्ये नैकधा आचार्याः प्रोचुः - साधुशब्देन असाधुशब्देन चोभाभ्यामप्यर्थबोधस्य समानतायां सत्यामपि साधुप्रयोग एव कर्तव्यः न त्वसाधुशब्दप्रयोगः ,एतदर्थमेव शब्दापशब्दानां परिज्ञानाय साध्वनुशासकस्य व्याकरणशास्त्रस्य महती भूमिका वरीवर्ति। व्याकरणशास्त्रस्यैवापरं नाम शब्दशास्त्रमिति। महाभाष्ये महर्षिपतञ्जलिः व्याजहार – "शब्दानुशासनमिदानीं कर्तव्यम्" "शब्दप्रमाणका वयम् "इत्यादयः। यद्यपि लोके उभयविधशब्दैः अर्थावगतिः सम्भवति तथापि व्याकरणनियमानुबोधितैः शब्दैः जायमानो व्यवहारः साधुतां भजते। यतो हि समानायामर्थावगतावपि साधुशब्दविषये शास्त्रेण धर्मनियमः क्रियते। एतदेव भर्तृहरिणा प्रतिपादितम् – **"अर्थप्रत्ययना भेदे विपरीतास्त्वसाधवः"**।

लोकव्यवहारज्ञापके साध्वनुशासके गभीरतमेऽस्मिन् महनीयशब्दशास्त्रे चतुष्टयीशब्दानां प्रवृत्तिरिति वचनपुरस्सरं सर्वविधानां शब्दानां प्रयोगो वर्तते। अत्र संकीर्तितोदाहरणैः विश्लेषितनियमैः प्रतिपादितसिद्धान्तैः प्रोक्तादर्शन्यायैः उररीकृतवचनैश्च तत्कालीनव्यवस्थानां लोकसंस्कृतीनां प्रचलितसामाजिकराद्धान्तानां ज्ञानमवाप्यते । अत्र शास्त्रे शब्दसिद्धान्तप्रतिपादनप्रसङ्गे विविधसूत्रोदाहरणादिषु शिक्षायाः दार्शनिकपक्षाणाम् ,शैक्षिकविचाराणाम् ,शैक्षिकनिहितार्थानाम् ,स्त्रीशिक्षायाः ,गुरुकुलव्यवस्थायाः , पाठ्यचर्यायाः ,गुरुपरम्परायाः ,शिक्षणविधेः ,पाठ्यविषयस्य ,विद्यामहत्त्वस्य ,उच्चारणकौशलस्य , विद्यार्थिनां परीक्षणस्य ,गुरोः कर्तव्यस्य च निरूपणं प्राप्यते । तद्यथा– शिक्षादर्शनस्य पक्षं समुद्भावयन्

काशिकायां **"सप्तम्याः पुण्यम्** 152/2/6 **"**अस्मिन् सूत्रे प्रोक्तम्" अध्ययने पुण्यम्, अध्ययनपुण्यम्। वेदे पुण्यम् वेदपुण्यम् इति।। एतच्छिक्षायाः दार्शनिकं स्वरूपं विद्यते। तत्कालीनशिक्षाव्यवस्थायाः दृष्टौ विविधेषु पुण्यदायककर्मसु अध्ययनमपि सुकृतातिधायकं कर्म आसीत्।

---

11. अध्यापन शास्त्रात विद्यार्थ्यांच्या रंगपरिक्षेचे महत्त्व

(Importance of Student's Colourtest in Pedagogy)

Dr. Bhau Dandade

रंगांना वजन आहे... रंगांना चव आहे.... रंगांना अर्थ आहे... रंगांचा मानवी मनासोबतच शरीराशीही संबंध आहे... रंग माहिती देतात... रंग संवाद साधतात. रंग चिथावणी देतात.... रंग गौरवान्वित करतात, रंग खळबळ उडवितात!

रंगांचा परिणाम विभिन्न व्यक्तिंवर वेगवेगळा होतो. त्यास वय, शिक्षण, संस्कार परिस्थिती इ. अनेक अनेक गोष्टी कारणीभूत ठरतात. त्यावरून व्यक्तिगत आवडीनिवडीनुसार प्रत्येकाचा, रंगाबाबत वेगवेगळा पसंतीक्रम ठरतो. या क्रमवार रंगपसंती वरून त्या व्यक्तिची मनःस्थिती, शारीरिक स्थिती लक्षात येऊ शकते. रंगांच्या कार्यात्मक मानसशास्त्राच्या अभ्यासाने त्याची पूर्वकल्पना आल्यास बिघडलेली स्थिती सुधारण्यासही मदत होऊ शकते. रंग प्रतिसाद हा सामाजिक, सांस्कृतिक, मानसशास्त्रीय तथ्यांवर अवलंबून असतो. बदलत्या संदर्भानुसार आधुनिक जीवनशैलीमुळे अध्यापन क्षेत्र कमालीचे आव्हानात्मक झाले आहे. विद्यार्थ्यांची विषय आवड, एकाग्रता, चिकाटी, परिश्रम इत्यादी गुणसंवर्धनाकरीता विद्यार्थ्यांच्या बदलत्या मानसिकतेचा अभ्यास करणे गरेचे झाले आहे. रंगपरिक्षेतून त्याच्या मनोव्यापाराची बरीच कल्पना येऊ शकते. प्राध्यापकांनी याचा शिकविण्याच्या पद्धतीमध्ये उपयोग करून घेतल्यास अध्यापन प्रक्रिया प्रभावी होऊ शकते.

महत्त्वपूर्ण शब्द (Keywords) - रंग (Colours), रंगपरिक्षा (Colour Test), रंगाचे कार्यात्मक मानसशास्त्र (Functional Psychologyof Clours), अध्यापनशास्त्र (Pedagogy).

---

12. नाटक -यशस्वी अध्यापनाचे माध्यम

Mrs. Leena Pande
Hislop Junior College, Nagpur

शिष्टा क्रिया कस्त्याचिदात्मसंस्था सङ्क्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता।
यस्थोभयं साधु स शिक्षकाणां धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव ।।

- मलाविक्राग्निमित्रम् -1.3

प्रस्तुत श्लोकात महाकवी कालिदासाने उत्तम शिक्षकाची व्याख्या केली आहे .अध्यापन ही प्रत्येक व्यक्तीसाठी सहज गोष्ट नाही .एखादी व्यक्ती विद्वान असेल तरीही ती उत्तम अध्यापक असेलच असे नाही . परंतु काही व्यक्तींमध्ये अध्यापनाची क्षमता अथवा कौशल्य जन्मजात असू शकते .परंतु ज्यांच्याकडे हे कौशल्य जन्मजात नाही ते प्रशिक्षणाच्या सहाय्याने प्राप्त करू शक .आणि त्याद्वारा आवश्यक ती सुधारणा करू शकता .

शिक्षाविद्वानांनी अध्यापनाचे अनेक प्रकार सांगितलेले आहेत .परंतु संगळेच प्रकार सगळयाच परिस्थितीमध्ये अनुकूल ठरत नाहीत .या दृष्टीने कालानुरूप अध्यापन पद्धतीमध्ये परिवर्तन करणे क्रमप्राप्त हे हे लक्षात घेऊन दृक्श्राव्य माध्यमातून यशस्वी अध्यापनासाठी नाटक याचा आढावा प्रस्तुत शोधपत्रात घेतला जाईल.

---

13. संस्कृत अध्यापनशास्त्र

वंदना गोजे

संस्कृतातील भाष् धातूपासून भाषा. मानवजीवनाचे अनिवार्य साधन व समाजाची ठेव असून विचार भावनांचे प्रकटीकरणाचे सोपे साधन ठरते. भाषा उत्पत्ती ईश्वरीय आहे. ईश्वराने वेदांमधून ज्ञानाचे प्रकटीकरण करण्यासाठी संस्कृत भाषेची ही उत्पत्ती केली म्हणून ही ईश्वरीय व सर्व भाषाची जननी आहे. भाषा व्यक्तायां वाचि भाष्यते व्यक्त वागरुपेण अभिव्यंजने इति भाषा। संस्कृत भाषा चे अध्ययन अध्यापन विश्वातील विभिन्न देशांमध्ये केले जात आहे संस्कृत वैज्ञानिकते मुळे यांचा प्रयोग अधिकाधिक वाढला आहेत. प्राचीन काळात शिक्षण प्रक्रिया पूर्णतः गुरूकेंन्द्री होती. संस्कृतच्या शिक्षकाला प्राचीन विद्वान आणि श्रेष्ठ ऋषीकुलाची गौरवशाली परंपरा आहेत. पूर्वीच्या ऋषीकडून वैदिक ऋचांचे स्फूरण झाले आणि तेथूनच त्यांच्या अनुयायांनी ज्ञान संपादन केले.

संस्कृतं संस्कृतेमुलं ज्ञानविज्ञानवारिधिः ।
वेदतत्वार्थ संजुष्टं लोकाऽऽलोककरं शिवम्।।

आधूनिक अध्ययन अध्यापनात आज अधिक परिवर्तन दिसून येत आहेत. शिक्षण म्हणजे – अध्यापक –विद्यार्थी – सामाजिक वातावरण (अभ्यासक्रम) ही तीन धृव शिक्षणप्रकियेत सक्रिय असतात आणि हयांच्यात परस्पर आंतरक्रिया होत असते. अध्यापन प्रभावी करण्यासाठी कमबद्ध मांडणी तसेच अध्यापनाचा विविध पद्धतीचा वापर करुन अध्यापन यशस्वी करता येईल.

उद्गामी पद्धती- अवगामी-कथन/व्याख्यान –परिसंवाद- प्रकल्प- संभाषण- सर्वसमावेशक (नाट्यीकरण, भूमिकाभिनय, कथाकथन, मूल्यमापन, कष्ठस्थीकरण).... यांचा वापर करतांना कृत्रिमता अध्यापनात येऊ न देता सहजतेने करण्याचा प्रयत्न करावा सहजस्फूर्ती, नैसर्गिक वातावरण, अभिरूची, संस्कृत सरल भाषा, विषयाची रंजकता, उत्सूकता निर्माण करण्याची गरज आहे. अध्यापन शास्त्र आणि कला यांचा संगम साधता आला आणि आधुनिक पद्धतिचा वापर करता आला तर शिक्षक अधिक प्रभावी अध्यापन करू शकतो.

अध्यापनशास्त्रात शिक्षकाचा हा मोठा वाटा असतो. भाषेवर प्रभुत्व असणारा, विदयार्थीच्या संस्कृत पाठात सहभाग आणणारा, विविध क्लृप्त्या वापरून अवधान टिकवणारा, भावनिकता साधणारा शिक्षक चा सर्वांचे एक उत्तम रसायन तयार करेल आणि अध्यापन सर्वात्कृष्ट करण्यात येईल. सृजनात्मक पद्धतीचा वापर अध्यनात अधिक महत्वपूर्ण ठरते.

---

14. "आह्लाद:~ एकादशी कक्षा या पाठ्यपुस्तकाचे शिक्षणशास्त्रीय दृष्ट्या समालोचन "

डॉ. प्रज्ञा शरद देशपांडे

महाराष्ट्र हे अनेक कारणांमुळे भारतदेशातील महत्त्वाचे राज्य आहे. शिक्षणक्षेत्रातही महाराष्ट्र हे राज्य विविधता ,युगानुकूलता व सर्जकता जपणारे ठरते. अशा या पुरोगामी महाराष्ट्रात २०१६ पासून वर्ग आठ ते बारा यांची संस्कृत विषयाची क्रमिक पुस्तके बदलण्यास सुरुवात झाली. २०१९ मध्ये म्हणजे यंदा इयत्ता अकरावीचे क्रमिक पुस्तक महाराष्ट्र राज्याच्या शिक्षण विभागातर्फे प्रकाशित होऊन सर्वत्र लागू झाला. आनंद-आमोद-आह्लाद अशा नावांची ही मालिका महाराष्ट्रातील संस्कृतपाठ्यपुस्तकांच्या इतिहासातील महत्त्वपूर्ण व नवतासूचक ठरलेली आहेत . या मालिकेतील आह्लाद हे अकरावीचे पाठ्यपुस्तक असून त्याचे शिक्षणशात्रीय समालोचन करणे , हाच या शोधपत्राचा मुख्य विषय आहे. या शोधपत्रात मुख्यत्वे खालील मुद्द्यांवर विचार मांडण्यात येतील.

- पाठ्यपुस्तक निर्मितीस आवश्यक काही महत्त्वाचे तत्त्वे.
- इयत्ता अकरावीचे पाठ्यपुस्तक.
- शिक्षणशास्त्रीय दृष्ट्या पुस्तकाचे समीक्षण.
- पाठ्यांश शिकविताना केलेला प्रयोग, व त्याचे मूल्यमापन.

कोणतेही पाठ्यपुस्तक हे ज्ञानप्राप्तीचे साधन असते, साध्य नाही.

क्रमिक पुस्तक , औपचारिक शिक्षणपद्धतीतील महत्त्वाचे साधन आहे. कोणतेही पाठ्यपुस्तक हे शिक्षणशात्रीय दृष्ट्या परिपूर्ण असण्या सह विद्यार्थ्यांच्या मनात , कां ? कसे ? कशाला ? पुढे काय ? , आदी

प्रश्न निर्माण करण्यास सक्षम असले पाहिजे. अकरावीचे आह्लाद पुस्तक , हे या निकषावर खरे उतरले, याचा पुस्तक-निर्मितीत सहभागी व सक्रिय सदस्य म्हणून मला खचितच आनंद वाटतो.

---

15. Spiritual Intelligence and self-esteem among higher secondary school students

Mrs. Kavita Amol Bhople (Gomashe)
Research Scholar, KaviKulguru Kalidas Sanskrit University, Ramtek.

In this study, the researcher found that spiritual insight is obtained by accessing our inner knowing through intuition and meditation. Also, the higher our spiritual quotient the more we are truly ourselves, mindful of our being and not hiding behind reactive emotions or conditioned belief system. The study was to find out spiritual intelligence among higher secondary school student, also to find out self-esteem among them and the relation between spiritual intelligence and self-esteem.

Research were carried out over 200 students i.e. 100 girls and 100 boys of higher secondary school at Nagpur, Maharashtra. Test of significance of difference in spiritual intelligence based on gender shows that calculated t value 1.79 is less than the table value 1.96 at 0.05 level of significance. It means there is no significant difference in spiritual intelligence of boys and girls. Test of significance of difference in self-esteem among higher secondary school students with respect to gender shows that there exists significant difference in self-esteem among boys and girls. The calculated t value 4.35 is greater than the table value at 0.01 level of significance. Mean scores of girls are greater than that of boys. It means that girls exhibit more self-esteem in their life than boys.

The study found that spiritual intelligence and self-esteem are correlated. The correlation value is 0.05, it indicates a high correlation between spiritual intelligence and self-esteem.

The present era is high competent and full of progressive positive and negative competitions. So many reasons are therefore such type of botheration in our society. To tolerate all these annoyances and to lives a better life every person of the society needs spiritual intelligence and self-esteem.

---

16. Teaching-Learning of Sanskrit and Emerging Trends in Language Pedagogy

Jatindra Mohan Mishra
Prof. of Sanskrit Department of Education in Languages NCERT, NewDelhi

Sanskrit learning graced the centre-stage of Indian education since time immemorial until the emergence of new independent India. During the British rule there was a systemic change in the culture of education in the country when English became the new language of academic and intellectual discourse replacing the language of millennia. But still Sanskrit ruled the roost in the academia of India. That was the time when the Sanskrit study witnessed a pedagogic shift.

Grammar and translation method was devised in order to help the foreign learners know about the language. The method then continued for over a hundred years till now and helped spreading the knowledge system of India across the world. But there is a gradual decline in the growth of this language. Where, there is a growth in the number of learners of the language there certainly is a massive fall in the quality of Sanskrit education, and in the number of users of the language in India. Needless to mention that current situation of Sanskrit education, particularly at the school level needs a focused attention particularly of the teachers in order to keep Sanskrit learning relevant and vibrant.

The present paper aims at discussing some emerging trends is the area of language pedagogy that may serve achieving a better quality in Sanskrit learning of our young generation. The following aspects of language pedagogy will be unfolded here.

1. Language in learning and language acquisition
2. Language skills
3. Learning the grammar and vocabulary
4. Learning the pronunciation
5. Textbook for language teaching and learning
6. Language across curriculum
7. Sanskrit through Sanskrit or other languages.

17. शिक्षण पध्दतीची सद्यस्थिती व कालानुरूप त्यात बदल ही आवश्यक ।।

अनिल यशवंत सावंत

फार प्राचीन परंपरा म्हणजे गुरूकुल पध्दत ही संपूर्ण भारत वर्षात फार पूर्वीपासून रूजली होती. पण नंतरच्या काळात परकीय आक्रमणाने आस्थिर स्थिती झाली. संस्कृतीचा -हास होऊ लागला. मुगल, पोर्तुगिज, इंग्रज तसेच यवनांचा अतिरेक झाला व ही पध्दती संपुष्टात येऊ लागली. या काळात चातुरवर्ण्य पध्दत होती व त्यामुळे शिक्षण ही जबाबदारी ब्राम्हण समाजाकडे होती. वेद शिकण्याचा अधिकार हा फक्त एका वर्णाचा होता व बाकी वर्ण हे वैश्य, क्षत्रिय व शुद्र असे होते.

मुख्य शिक्षण पध्दत ही पाठांतर (पठन) या वर भर होता संथा देत असत. पण पुढे त्यातील ऋषीतुल्य व्यक्ती कमी झाल्या व काही कालांतराने चार वेदांच्या वेगवेगळ्या शाखा व त्यांचे संरक्षण करणे एवढ्या पुरतेच शिक्षण स्थिर राहीले व त्यासाठी एखाद दुसरी पाठशाला चाले. पण जसे इंग्रज आले त्यांनी आमच्या संस्कृती व शिक्षण पध्दतीचा सखोल अभ्यास केला व जॉन मेकॉले यानी संपूर्ण शिक्षण पध्दती बदलण्याचा चंग बांधला व सरकार ही त्यांचे असल्यामुळे त्यांनी फार प्रभावीपणे याची अंमलबजावणी केली व संस्कृत भाषा ही संपूर्णपणे नष्ट करण्याचा त्यांनी चंग बांधला होता. तरीही काही पंडीतांनी व पाठशालांनी संस्कृत भाषा ही जगवली व त्यामुळे आज आपल्याला तिचा स्वाद घेता येत आहे.

इंग्रजांनी प्रथम आपला संस्कृतीचा अभ्यास केला व चातुवर्ण्य पध्दत यावर त्यांनी घाला घातला व समाज विभाजन (तोडा व फोडा) या नीतीने त्यांनी आपले शासन बळकट केले व त्यांना अनुकूल अशी शिक्षण पध्दती त्यांनी निर्माण केली व त्यांना लागणारे कारकून एक सुशिक्षित कामगार तयार केला व त्यांच्या राज्यकारभारासाठी सुशिक्षित गुलाम त्यांनी तयार केले.

त्या काळात ही काही विद्वानांनी शिक्षणाचा खुप विचार करून त्याकाळी डेक्कन कॉलेज तसेच काही शिक्षण संस्था काढल्या व नवीन शिक्षणाची नव्या जोमाने मुहूर्तमेढ रोवली. भारत स्वतंत्र झाल्यानंतर शिक्षणाविषयी विशेष धोरण राबवल गेल. सर्व भाषातील शाळा सुरू झाल्या व नंतर त्यात हळूहळू काळानुरूप परिवर्तन आले. औद्योगिककरण हा भाग व जुन्या परंपरा या नुसार शिक्षणात बदल करणे आवश्यक आहे. स्वातंत्र्यनंतरच्या काळात याची खुप मोठी गरज भासली त्याप्रमाणे हळूहळू परिवर्तन करू लागले. पण लोकसंख्या व शिक्षण हा रेशो अजन म्हणावा तसा समाधानकारक नाही. तंत्रज्ञान जसजस प्रगत होत आहे. तशी शिक्षणात (क्षेत्रात) खुप मोठा बदल करावा लागत आहे.

18. Aspects of Educational Values

Dr. Swati Deshpande

The malady that was plaguing Arjun which may call “Arjun Syndrome” is a common universal disease among all human kind particularly in the students. Arjun was confused, overpowered, abandoning dharma and adopting perdharma i.e. the feeling of union and separations. This is the same ignorance and confusion that students today. Most of the students' academic problems can be traced in the imbalances in their personal lifestyle. Many parents and teachers fail to male this simple connection and wake up students the need for a balanced lifestyle. Indian society and education system must be veered away from the obsessive focus on marks and rank. In the 21st century, skills are most widely term used in the world of education today. Our students have to develop these skills to survive in an increasingly competitive global environment and at the same time, students must acquire some values for total personality development. Some values are physical value, family values, musical value, interpersonal value, values in scriptures, and values in nature conservation, values in Indian economy, critical thinking, and values in game. These are some values which must be cultivated in our students with parallel to scientific development.